सतभैंया पोखैर

सतभैंया पोखैर

जगदीश प्रसाद मण्डल



पल्लवी प्रकाशन
बेरमा/निर्मली

SATBHIANYA POKHAIR (सतभैंया पोखैर)
Collection of Maithili Stories by Shri Jagdish Prasad Mandal

ISBN: 978-93-87675-23-0
दाम: 251/- (भा.रु.)

पाँचिम संस्करण: 2023 (पहिल संस्करण: 2013, श्रुति प्रकाशन, दिल्ली)

प्रकाशक: पल्लवी प्रकाशन
तुलसी भवन, जे.एल.नेहरू मार्ग, वार्ड नं.: 06, निर्मली
जिला- सुपौल, बिहार: 847452
मुद्रक: पल्लवी प्रकाशन (मानव आर्ट)

वेबसाइट: http://pallavipublication.blogspot.com
ई-मेल: pallavi.publication.nirmali@gmail.com
मोबाइल: 6200635563; 9931654742

फोण्ट सोर्स: https://fonts.google.com/,
https://github.com/virtualvinodh/aksharamukha-fonts
आवरण: श्रीमती पुनम मण्डल, निर्मली (सुपौल), बिहार: 847452
अक्षर संयोजन: डॉ. उमेश मण्डल

अनुक्रमः

बिहरन

जहिना बैशाख-जेठक लहकैत धरतीपर, अगियाएल वायु-मण्डलक बीच हवाकेँ खसने अनासुरती मेघक छोट-छोट चद्दैर सुरूज ओढ़ए लगैत, रेलगाड़ीक हूमड़ैत आवाज दौड़ए लगैत, रहि-रहि कऽ गुलाबी इजोत छिटकए लगैत जइसँ अनुमानित मन मानैले बेबस भऽ जाइत जे पानि-पाथर आ ठनकाक संग बिहाड़ि आबि रहल अछि तहिना रघुनन्दन-सुलक्षणीक परिवारमे ज्योति कुमारीक जन्मसँ भेलैन।

भलेँ आइ-काल्हि बेटी जनमने माए-बाप अपन सुभाग्यकेँ दुर्भाग्य मानि मनकेँ केतबो किए ने कोसैत रहै छैथ जे परिवारमे बेटीक आगमन, हिमालयसँ समुद्र दिस निच्चाँ मुहेँ ससरब छी। मुदा से दुनू बेकती सुलक्षणी आ रघुनन्दनकेँ नै भेलैन। जहिना गद्दा पाबि कुरसी गदगर होइत तहिना खुशीसँ दुनू परानीक मन गदगद रहैन। से खाली परिवारे धरि नहि, सर-समाजसँ लऽ कऽ कुटुम-परिवार धरि सेहो छेलैन। ओना, आन संगी जकाँ रघुनन्दन नै छला जे तीनियेँ मासक पेटक बच्चाक दुश्मन बनि पुरुषार्थक मोँछ पिजैबतैथ, आ ने अपन रसगर जुआनी छोलनी धीपा-धीपा दगितैथ। दुनू परानी बेहद खुशी छला! किए नै खुशी रहितैथ? मन जे मधुमाछी सदृश मधुक संग मधुर मुस्कान दइ छेलैन। पुरुष अपन वंश बढ़बै पाछू बेहाल आ नारीकेँ हाथ-पएर बान्हि बौगली भरि रौदमे ओंघरा देब ई केते उचित छी? मुदा से नहि, दुनू परानीक वंश बढ़ैत देखि दुनू बेहाल। मन तिरपित भऽ तरैप-तरैप नचैत रहैन।

ओना, तीन भाँइक पछाइत ज्योतिक जन्म भेल, मुदा तइसँ पहिने बेटीक आगमनो नै भेल छेलैन जे सुलक्षणी दोखियो बनितैथ। भगवानोक किरदानी की नीक छैन? नीको केना रहतैन, काजक तेते भार कपारपर रखने छैथ जे जखन टनकी धड़ै छैन तखन खिसिया कऽ किछु-सँ-किछु कऽ दइ छथिन। मुदा से कियो मानतैन थोड़े? जखन लोक अपने-अपने हाथ-पएर लाड़ि-चाड़ि जीबैए तखन अनेरे अनका दिस मुँहतक्कीक कोन

जरूरत? किए ने कहतैन जे जखन अहाँ निर्माता छी तँ तराजूक पलरा एक रंग राखू, किए केकरो जेरक-जेर बेटा दइ छिऐ आ केकरो जेरक-जेर बेटी! आ जँ देबे करै छिऐ तँ बुधि किए भंगठा दइ छिऐ जे बेटासँ धन अबै छै आ बेटीसँ जाइ छइ। जइसँ नीको घरमे चोंगराक खगता पड़ि जाइ छइ।

उच्च अफसरक परिवार तँए पारिवारिक स्तर सेहो उच्च। भलेँ माए-बापकेँ छाँटियेँ कऽ किए ने परिवार होइन। खगल परिवार जकाँ सदैत गरजू नहि। परिवारक खर्च समटल, तइसँ खुलल बाजारक कोनो असर नहि। सरकारी दरपर सभ सुविधा उपलब्ध, जइसँ खाइ-पीबैसँ लऽ कऽ मनोरंजनक ओसार चकमकाइत। भलेँ जेकर अफसर तेकर बात बुझैमे फेड़ होनि, जइसँ महगी-सस्ती बुझैमे सेहो फेड़ भऽ जाइत होइन। मुदा परोछक बात छी चारू बच्चाक प्रति रघुनन्दनक सिनेह समान रहलैन।

परिवारमे सभसँ छोट बच्चा रहने ज्योति सबहक मनोरंजनक वस्तु। मुदा गुरुआइ तँ ओहिना नै होइ छै, तँए सभ अपन-अपन महिक्का मनक टेमीसँ सदैत देखैथ, जप करैथ। आखिर के एहेन छैथ जे ऐ धरतीपर ज्ञानदानी नै छैथ। भलेँ ओ अधखिजुए वा अधपकुए किए ने होथि। जहिना कोनो माइलिक बच्चा पिताक संग जामन्तो रंगक फूलक फुलवारीमे जिनगीक अनेको अवस्था देखि चमकैत तहिना भरल-पूरल परिवारमे ज्योतियोकेँ भेल। देखलैन कलीमे जहिना अबैत-अबैत रंगो, सौन्दर्यो आ महको अबैए तहिना ने जिनगी छी। जँ मनुक्खकेँ डोरीसँ बान्हल जाए तँ डोरी तोड़ैक उपाइयो तँ हुनके करए पड़तैन।

समुचित वातावरण रहने ज्योति कुमारी अपन संगी-साथीक बीच नीक श्रेणीमे आबि गेली। जहिना संगीक सिनेह तहिना शिक्षकोक सिनेह भेटए लगलैन। टिकट कटौल यात्री जहिना निश्चिन्तसँ गाड़ीमे सफर करैत तहिना समतल जिनगी पाबि ज्योति सेहो आगू बढ़ए लगली। जिनगीमे बाधा सेहो अबै छै मुदा तइसँ पूर्ण अनभिज्ञ ज्योति। जेना कर्मकेँ धर्म बना जिनगीक बाट बनौने हुअए तहिना...।

थम्हसँ निकलैत केराक कोसा जहिना अपन घौरक संग हत्थो आ छीमियोँक अनुमानित परिचए दैत, फूलक कोढ़ी फूलक दैत तहिना बच्चेसँ कुमारि ज्योति सुफल जिनगीक अनुमानित परिचए दिअ लगल।

जेना-जेना वौद्धिक विकास होइत गेलैन तेना-तेना तीनू भाँइयो बुझए लगला जे ज्योति तेहेन चन्सगर अछि जे आगू किछु जरूर करत। जइसँ भैयारीए जकाँ ज्योतिक संग बेवहार करए लगला। ओना, लैंगिक प्रभाव ओतए ओतेक अधिक देखि पड़ैत जेतए भाए-बहिनक बीच जेतेक बेसी दूरी रहल।

मुदा से रघुनन्दनक परिवारमे नै छेलैन। दोसर कारण ईहो छल जे वैचारिक दूरी जेना आन-आन परिवारमे रहैत तेना सेहो नहियेँ जकाँ छेलैन। परिवारक सभ अपन-अपन दायित्व बुझि अपन-अपन काजमे दिन-राति लागल रहै छला। ज्योतिकेँ सभ अपना-अपना नजरिये देखबो करैथ।

गुरुक रूप रघुनन्दन देखैथ तँ जगत-जननी जानकीक सुनैनापुर रूप सुलक्षणी देखैत रहथिन। जइसँ रघुनन्दन दुनू परानी एक-एक लूरि-बुधिकेँ धरोहर जकाँ ज्योति बेटीक बेवहारमे सजबैत रहलैथ। तहिना भाइक मन सामा-चकेबाक सम्बन्धमे ओझराएल रहैन। केना नइ ओझरैतैन? आइ धरिक इतिहासक दूरी जे मेटाइत देखैथ। केतेक प्रतिशत परिवार अखन धरि इतिहासक पन्नामे लिखाएल अछि जइमे भाए-बहिनक शिक्षाक दूरी समतल हुअए? तँए सबहक सिनेहक अपन-अपन कारण छल...।

जनकपुरमे जहिना रामकेँ आ मथुरामे कृष्णकेँ देखि देखनिहारकेँ भेलैन तहिना रघुनन्दनोक परिवारमे ज्योतिकेँ देखिते भेल।

बाल-बोध जहिना अपन मनोनुकूल वस्तु पाबि छाती लगबैत, हृदयसँ खुशी होइत तहिना विज्ञान विषयसँ ज्योति सटि गेली। विज्ञान विषयमे नीक नम्बर आनि बिजलोका जकाँ ज्योति संगियो-साथी, शिक्षको आ मातो-पिताक नजैरमे चमकए लगली।

हाइ स्कूलमे पएर दैते जेना अपन आँट-पेट बुझि कोनो विद्यार्थी साइंस तँ कोनो कामर्स तँ कोनो आर्ट विषय चुनि आगू बढ़ैत तहिना ज्योतियो साइंस चुनि नेने छेली। घरसँ बाहर धरि सर्वत्र बहारे-बहार बुझि पड़ैन। ऋृषि-मुनिकेँ जहिना दुनियाँ समतल बुझि पड़ैत तहिना स्कूलक शिक्षकक संग दू-दूटा भाए पाबि ज्योतियोकेँ दुनियाँ समतल बुझि पड़ैत।

जइसँ कोनो तरहक असोकर्ज घर-सँ-बाहर धरि कखनो नहि बुझि पड़ैन।

असोकर्ज तँ ओइठाम होइत जेतए एकपेरिया-चरिपेरियाक मिलन-भौक रहैए। आ भौक निर्भर करैए चलनिहारपर, जेतए जेहेन चलनिहार तेतए तेहेन भौक।

ओना, जैठाम बेसी चलनिहार रहैत ओतए कच्चियो सड़क पकीए जकाँ सक्कत आ पकियो कच्चीए जकाँ बनि जाइत अछि।

साइंस कौलेजमे सभसँ नीक नम्बरक संग ज्योति फिजिक्स विषयसँ नीक नम्वर पाबि एम.एस-सी. केली। जहिना अखराहापर लपटैत-लपटैत पहलवानक कश बनि जाइत तहिना ज्योतियोकेँ भेल।

'नारी मुक्ति संघ'क स्थापित अध्यक्ष होइक नाते पिताक–रघुनन्दनक–सिनेह ज्योतिपर आरो बेसी रहैन। ज्योतिकेँ कौलेज पहुँचैत-पहुँचैत तेसरो भाए नोकरी पकैड़ लेलैन, जइसँ आरो बेसी सुविधा ज्योतिकेँ प्राप्त हुअ लगल। ओना, काजकेँ कर्म बना करैक अभ्यास सुलक्षणी बच्चेसँ लगबैत आएल रहैन। जइसँ घरक काजक जहैन ज्योतिक जेहन तक पकैड़ नेने तँए जहिनगर। सदैत कर्मकेँ सहयोगी-प्रेमी जकाँ दुलरबैत, प्रेम करैत। तँए की ज्योति सुलक्षणीक बेटी नहि?, परिवारक सभसँ बेसी सिनेही बेटी छिऐन।

मुदा सुलक्षनीक मनमे सदैत एकटा कचोट कचोटिते रहैन जे कुल कन्याँ की? कुल तँ अनेको अछि जेना- गुरुकुल, पितृकुल, मातृकुल इत्यादि, जे प्रश्न अखनो धरि नै सोझरेलैन।

एम.एस-सी. करिते दुनू बेकती–रघुनन्दन–केँ जहिना बिनु हवोक पीपरक पात डोलए लगैत तहिना ज्योतिक प्रति सिनेह डोलए लगलैन। अनासुरती दुनू परानीक मनमे प्रश्न-पर-प्रश्न उठए लगलैन। बीस-बाइस बर्खक बेटी भऽ गेल, बिआह करब माए-बापक कर्तव्य कर्म छी। कौलेजक अन्तिम सीढ़ीक आगू टपि चुकल अछि इत्यादि। तैसंग ईहो जे पारदर्शी सीसा जकाँ ज्योतिक शरीर सेहो देखैथ जे जुआनीक रंग सगतैर चमैक रहल छइ...।

ओना, कौलेजक आन छात्रा जकाँ नहि, मिथिलाक धरोहैर कुल-

कन्याँ जकाँ। जे गुरुकुलमे विद्याध्ययन करैत। दुनू परानीक दायित्व बुझि रघुनन्दन पत्नीकेँ पुछलखिन- "ज्योति बिआहै-जोकर भेल जाइए से की विचार?"

संयासिनी जकाँ सुलक्षणी उत्तर देलकैन-

"अपन कोनो काज पछुआ कऽ नै रखने छी, जे बाँकी अछि ओ अहाँक छी। तैबीच हम की विचार देब?"

पत्नीक उत्तर सुनि रघुनन्दन तिलमिला लगला। मनमे उठलैन- एहेन उटपटांग उत्तर किए देलैन? मुदा सोल्होअना अनुमानोसँ कोनो बात नै बुझल जा सकैए। नीक हएत जे पुन: प्रश्न उठा आगू बजबाबी। ई बात निसचित जे एको परिवारमे काजक हिसाबे सबहक सोचै-विचारै आ बुझैक ढंग फुट-फुट भऽ जाइ छइ। भलेँ सासुसँ ऊपर किए ने जेठ-सासु मानल जाए, मुदा सासु तँ सासु होइत।

जहिना देवालयक कपाट लग ठाढ़ भक्त हाथ जोड़ि अपन दुखरा भगवानकेँ सुनबैत तहिना तरपैत रघुनन्दन पत्नीकेँ पुछलखिन-

"संयासिनी जकाँ किए घरसँ पड़ाए चाहै छी! बिसैर रहल छी जे घरनी सेहो छी?"

पतिक गंभीर विचारकेँ अँकिते सुलक्षणीक करेज कलैप उठलैन। मुदा पानिक बहैत बेगमे जहिना गोरसँ गोरिया-गोरिया गोर उठौल जाइत तहिना सुलक्षणी ज्योतिक जिनगीक धारामे ठाढ़ होइत बजली-

"अहूँ कोनो हूसल नै छी, सभ माए-बाप बेटा-बेटीकेँ बच्चे बुझैए। मुदा एतए से बात नहि अछि। अहाँ लिए भलेँ ज्योति बच्चा हुअए मुदा ओ ओइ सीढ़ीपर पहुँच गेल अछि, जेतए मनुक्ख अपन जिनगीक बाट चुनैक गुण प्राप्त कऽ लइए। तँए दुइए परानी नहि, बेटो-पुतोहुसँ विचारि लिअ।"

सेन्ट्रल बैंकक ब्रांच मनेजर–भोगेश्वर–क संग ज्योतिक बिआहक बात पक्का भऽ गेल। जहिना ज्योति तहिना भोगेश्वर। दुनूक अद्भुत मिलानी। विषुवत रेखाक समान दूरीपर जहिना उत्तरो आ दच्छिनो समान मौसम, समान उपजा-बाड़ी होइत अछि तहिना।

अलेल कमाइ तँए छिड़ियाएल जिनगी भोगेश्वरक। हजारो कोस हटि

भोगेश्वर अपन परिवारसँ रहैत। नव-नव वस्तुसँ भरल बाजार, जे दुनियाँक एक कोणसँ दोसर कोण पहुँचैत, भोगेश्वर चकाचौंधमे हेरा अपन माइयो-बाप आ भाइयो-भौजाइसँ दूर भऽ गेल। किए ने हएत? जखन सभकेँ अपन कर्मक फल भोगैक अधिकार छै तँ भोगेश्वरो किए ने भोगत। एक तँ दिन राति रुपैआक पेँच-पाँचक गुत्थी खोलैक क्षमता तैपर जेकरे माए मरै तेकरे पात भात नहि?'

नीक बर पाबि रघुनन्दन चन्दाक तिजोरी माने नारी मुक्ति संघक कोष खोलि देलैन। कोनो अनचितो तँ नहियेँ केलैन। चन्दो तँ मुक्तीए लेल अछि।

एक तँ मनी-ग्रुप अर्थशास्त्रसँ पी.एच-डी. तैपर सँ सेन्ट्रल बैकक शाखा-प्रबन्धक, किए नै भोगेश्वर अपन अधिकारक उपयोग करत। बिआहक दिन तँइ भऽ गेल। तैबीच ज्योतिकेँ, मास दिन पूर्व देल आवेदनक इन्टरभ्यूक चिट्ठी भेटलैन। तहूमे बिआहक दिनसँ तीन दिन पूर्वक दोहरी काज परिवारमे बजैर गेलैन। छोड़ैबला कोनो नहि। तैपर ज्योति सेहो बिआहकेँ माइनस आ इन्टरभ्यूकेँ पलसमे हिसाब लगबैत।

एमहर बिआहक ओरियानक धुमसाही परिवारमे। मुदा ज्योति विपरीत दिशामे मुड़ि इन्टरभ्यू दइले अड़ि गेली। इन्टरभ्यू सेहो तँ लगमे नहियेँ जे दू-चारि घन्टा समय लगा पुरौल जा सकैए। दच्छिन भारत, जे लगमे नहि अछि। केतबो तेज दौड़ैबला गाड़ी भेल तैयो चौबीस घन्टासँ पहिने नै पहुँच सकैए। तहूमे बिआह सन शुभ काजमे बर-कन्याँकेँ सुरक्षित रहब जरूरी अछि। तँए सीमा केना पार कएल जाएत। गाड़ी-सवारीक कोन ठेकान...।

ज्योतिक प्रश्न परिवारकेँ स्तब्ध केने। जेठ भाय–प्रेम कुमार–क सिनेह ज्योतिपर उमैड़ पड़लैन। हिसाब लगबैत पिताकेँ कहलखिन-

"बिआहक दिनसँ चौबीस घन्टा पहिने अबस्स पहुँच जाएब। अहाँ सभ बिआहक ओरियान करू ज्योतिक संग अपने जाइ छी।"

प्रेम कुमारक विचारसँ रघुनन्दन दुनू काज होइत देखि खुशी भेला। मुदा सुलक्षणीक मन आरो बेसी करुआए लगलैन। मुदा खोलि कऽ बजती

केना? एक तँ पुरुष-प्रधान परिवार तैपर सभ बापूतक एक विचार। स्त्रीगणक कोनो ठेकाने नहि। कहैले ने चारि गोरे परिवारमे छी मुदा ननैद-भौजाइक सम्बन्ध केहेन होइ छै से की केकरोसँ छिपल अछि। नीक हएत जे पोल्हा कऽ बेटीए-सँ पुछि ली। मुदा विध-बेवहारपर नजैर पड़िते सबहक मन भँगैठ गेलैन। बिनु विधि-बेवहारक बिआह केहेन हएत। रस्ते-पेरे तँ सेहो लोक बिआह कऽ लइए मुदा परिवार केहेन बनै छइ। आठो दिन तँ कम-सँ-कम विध-बेवहारमे लगबे करत। खाएर जे से...।

ज्योतिक इन्टरभ्यूओ आ बिआहो भऽ गेलैन। अद्भुत बिआह तँए समाजमे चर्चाक विषय बनल। चर्चो मुँह देखि मुंगबा परसैबला। जेहेन मुँह तेहेन मुंगबा। कियो बर-कन्याँक शिक्षाक चर्च करैत, तँ कियो युगक अनुकूल बर-कन्याँक जोड़ाक। कियो विध-बेवहारक लहासक चर्च करैत तँ कियो समाजक अगुआएल नारी जातिक चर्च करैत। तहिना केतौ भोज-भातक चर्च चलए लगल, तँ केतौ गमैया बरियातीक संग बजरूआ बरियातीक चर्च चलए लगल। मेल-पाँच बरियाती तँए सबहक बात दमगर। इनार पोखरिक घाटसँ लऽ कऽ दुआर-दरबज्जा धरि सौंसे गाममे जेना संसद चलए लगल। मुदा सबहक मन भोगेश्वर आ ज्योतिक वैवाहिक बन्धनपर जा कऽ अँटैक जाइन।

बिआहक तीन दिन पछाइत भोगेश्वर दुरागमनक प्रस्ताव रखलैन। प्रस्ताव सुनि परिवारक सबहक मनमे सभ रंगक विचारक संग उत्तरो उठलैन। मुदा आगू बढ़ि कियो बजैले तैयार नहि। मने-मन सुलक्षणी सोचैथ जे बिआहक साल तँ बर-कनियाँक विध-बेवहार होइ छइ। जँ विधि-बेवहारक कारण नै होइ छै तँ किए सौन-भादो आ पूस-माघ बेटीक विदागरी नै होइए। बिनु विधि-बेवहारक बिआह तँ ओहने हएत जेहेन बिनु मसल्लाक तरकारी। कहैले ने लोक बजैए जे फल्लाँ चीजक तरकारी खेलौं मुदा की बिनु मसल्लेक बनल छेलइ? जँ मसल्लोक सागिरदीसँ तरकारी बनल तँ ओकर चर्च किए ने होइ छइ? तर-ऊपर मनकेँ होइतो कण्ठसँ निच्चे सुलक्षणी अपन विचारकेँ अँटका रखली।

रघुनन्दनक मनमे भिन्ने विचार औंढ़ मारैत रहैन। मुदा गारजनक हैसियतसँ औगता कऽ बाजब उचित नै बुझि, सुरखुराइत मनकेँ रोकने

रहला। मुदा तैयो होनि जे बिनु कहने बुझता केना? भितरे-भीतर मन बजैत रहैन जे जहिना बीजू गाछ कलमी डारिमे छीलि कऽ डोरीसँ बान्हि किछु मास जुटैले छोड़ि देल जाइत तहिना ने बिआहो छी। फागुनक कनियाँ जँ फागुनेमे सासुर चलि जाथि तँ समन जरैत देखब सासुरमे नीक हेतैन? चैताबरक टाँहि सासुरमे नव-कनियाँकेँ देब उचित हएत?

तेतबे नहि, जँ से हएत तखन आमक गाछीक मचकीक बरहमासा आ सौनक राधा-कृष्णाक कदमक गाछक झूलाक अर्थे की रहत? तहीले ने बिआह-दुरागमनक बीच समयक फाँक रहैए। भलेँ नै बनैबला रहत तँ पान साल आकि तीन साल नै निमहौ, मुदा सालो तँ टपबए पड़त। जँ से नै टपत तँ केना सासु-ससुर, सारि-सरहोजि, सार-बहनोइ आकि सर-समाजक बीच सम्बन्ध बनत? परिवारक बीच कम्मो दिनमे सम्बन्ध स्थापित भऽ सकैए, मुदा समाज तँ नम्हरो आ गहींरगरो होइ छइ। कोनो धारक पानिक पैमाना तँ तखन ने नीकसँ नपाएत जखन भादोक बढ़ल आ जेठक सटकल पेटक पानि नापल जाएत। तहिना ने समाजो छी। अपना गरजे लोक थोड़े जुड़शीतल आ फगुआ आन मासमे कऽ लेत। जँ से करत तँ चरि-टँगा आ दू-टँगामे अन्तरे कथी भेलइ? एतबे ने, जे बिनु सिंह-नाँगैरक रहत..? रघुनन्दन मन ममोड़ि कऽ चुप छला। अनेको कारण अनेको समस्या मनकेँ घेर लेलकैन।

ज्योतिक भाए-भौजाइ अखन धरि धर्मसूत्र आ गृहसूत्र पढ़नहि ने छैथ, तँए हुनका सभकेँ कोनो चिन्ता मनमे रहबे ने करैन। नोकरिया रहने मनमे उठैत रहैन जे जेते जल्दी काज फरिया जाएत ओते जल्दी जान हल्लुक हएत। अनेरे सी.एल. दुइर भऽ रहल अछि।

मुदा से सारे-सरहोजिक मनमे नै रहैन, भोगेश्वरक मनमे सेहो सएह रहैन। बैंकमे घन्टाक कोन बात जे मिनटोक महत अछि। हरिदम पाइयेक बरखा, पाइयेक हिसाब-वारी। अनेरे पाभैर खाइले दिन-राति सासुर ओगरब, कोन कबिल्ती हएत। स्त्रीए लऽ कऽ ने सासुर, आ जे संगे रहत तँ सभदिना सासुर नै भेल? जरूर भेल। अपना परिवारकेँ जँ सासुर बना सौंसे गाम जे ओझहे बनि जाएत तँ केकरा सोझहा जाइक आँखि-मुँह रहत?

मुदा तीनू भाँइ प्रेम कुमार चुप्पी लादि लेलैन जे अखन घरक गारजन माए-बाबू छैथ, तँए किछु बाजब उचित नहि। मुदा तीनू भाँइक मनमे ई शंका जरूर होनि जे स्त्रीगणक सोभाव होइत अछि जे पुरुखक टीकपर चढ़ि कऽ मुरगीक बाँग देब। तैसंग समाजोक डर। समाज तँ ओहन शक्ति छी जे बिनु डोरी-पगहाक रहनौं, चपरासीसँ लाट साहैब धरि सजौने अछि। हाकिम-हुकुम आ रिनियाँ-महाजन रहै वा नहि। भर्लें बिलाइ बाझकेँ खाए वा बिलाइकेँ बाझ...।

जखनसँ जमाइबाबूक दुरागमनक प्रस्ताव परिवारमे आएल तखनसँ सभ सकदम! चुप्पा-चुप, धुप्पा-धुप परिवारमे पसैर गेल। जइसँ धारक पानि जकाँ बहैत बोल ठमैक कऽ भौर लिअ लगल। ओना, सबहक मुँह बन्न रहितो आँखिक नाच जोर पकड़नहि छेलैन, मुदा सिरिफ मूक नाच। जेठुआ गरेक सूर-सार देखिते जहिना सचेत लोक पहिने बाल-बच्चा आ माल-जालक उपाय सोचि आगू डेग उठबैए तहिना रघुनन्दनकेँ अपन भार परिवारक बीच उठबैक विचार भेलैन। फुरलैन, 'संग मिल करी काज हारने-जीतने कोनो ने लाज।' जाधैर नीक-अधलाक बीचक सीमा-सरहद नै बुझल जाएत ताधैर हारि-जीतक चर्चे बचकानी। मुदा समाजो आ परिवारोक तँ चलैक रस्ता अछिए...।

रघुनन्दनक मनमे खुशी उपकलैन, खुशी उपैकते मुँह कलशलैन। मुदा सुलक्षणीक मन महुराएले रहैन! किए ने महुराएल रहतैन? जेकरा मुँहमे ने थाल-कादो लगल अछि आ ने पसेनाक सुखाएल टघार अछि, ओ किए ने रूमालेसँ काज-चला लेत। मुदा जेकरा मुँहमे थालो आ तह-दर-तह सुखल पसेनोक टघार छै, ओ केना बिनु पानियेँ धोनौं चिक्कन हएत! की अपनो मन मानत?

सहमत भऽ परिवारक सभ सदस्य सुलक्षणीकेँ बजैक भार देलकैन। सुलक्षणी बजली- "ओना, तँ साल भरि, नइ तँ छह मास, जँ सेहो नहि, तँ तीनियोँ मास आ जँ सेहो नै तँ एको पनरहिया नै रूकता तँ केना हेतैन। जँ से नै मानता तँ हमहूँ नै मानबैन।"

सासुक निर्णय सुनि अपन शक्तिक प्रयोग करैत भोगेश्वर बजला- "अपन अधिकार क्षेत्रसँ अनचिन्ह भऽ बाजि रहल छैथ। तँए..?"

भोगेश्वरक बात सुनि ज्योतिक हृदयमे तरंग उठलैन। तरंगित होइते मुँह तोड़ि उत्तर दिअ चाहली। मुदा इन्टरभ्यू मोन पड़िते ठमैक गेली। मुँह तँ बन्न रहलैन मुदा मनमे तीन परिवारक टक्कर उठलैन- रूइया सदृश वादलक टक्करसँ जखन ठनका बनि सकैए, तँ तीन परिवारक तीन जिनगीक रग्गर केते शक्तिशाली भऽ सकैए! दिन-रातिक सीमा-सरहद तोड़ि ज्योति पतिकेँ कहलैन- "अधिकार आ कर्तव्य हर मनुक्खक धरोहर सम्पैत छिऐ, नै कि खास बेकतीक खास।"

ज्योतिक विचार सुनि भोगेश्वरक देह सिहैर उठलैन। मुदा तैयो मनकेँ थीर करैत बजला- "साते दिनक छुट्टी अछि। एक तँ अहुना आन-आन विभागसँ कम छुट्टी बैंकमे होइ छै, तहूमे एते सुविधा भेटै छै जे काज केनिहार ओहो छुट्टी काजेमे लगबए चाहैए।"

तैबीच ज्योतिक मोबाइलिक घन्टी टुनटुनाएल। अनभुआर नम्बर देखि सावधानीसँ ज्योति रिसीभ करैत बजली- "हेलो।"

"हेलो।"

"अपने केतए-सँ बजै छी?"

"विज्ञान शोध संस्थानसँ। सात दिनक भीतर आबि ज्वाइन कऽ लिअ। ओना, चिट्ठियो पठा देने छी।"

ज्वाइनिंग-दे सुनि ज्योतिक मन ओहिना खिल उठलैन जहिना कोनो कली कोनो वस्तुक तर दबाएल रहैए आ समय पाबि एकाएक फुरफुरा कऽ खिलैत फूलक रूपमे आबि जाइए...।

अखन धरिक विचार ज्योतिक तर पड़ि गेलैन आ नव दुनियाँक नव विचार मनक ऊपर चढ़ि एलैन। सभसँ पहिने पिता दिस तकैत बजली-

"बाबूजी, अपन कर्तव्य जइ रूपेँ अहाँ निमाहलौं तेना बहुत कम लोक निमाहि पबैए। अपने महान छी। आग्रह करब जे केकरो जिनगीक रस्ताक बाधक नै बनिऐ।"

ज्योतिक बात नै बुझि जिज्ञासा करैत प्रेम कुमार प्रश्न उठौलैन- "की रस्ताक बाधा?"

"भाय साहैब, अखन जवाबक उचित समय नै अछि। अखन एतबे

कहब जे काल्हि चलि कऽ हमरा शोध संस्थान धरि पहुँचा दिअ।"

बेटीक बात सुनि सुलक्षणी बजली-

"आइ तीनियेँ दिन बिआहक भेलह हेन, बहुत विध-बेवहार पछुआएल छह।"

"जे पछुआएल अछि ओ पाछू हएत। मुदा कोनो हालतमे काल्हि जेबे करब, चाहे..!"

ज्योतिक संकल्पित विचार सुनि भोगेश्वर बजला-

"भाय-साहैब, काल्हिये हमहूँ चलि जाएब। सभ संगे चलब, हम हाबड़ामे उतैर जाएब आ अपने सभ आगू बढ़ि जाएब।"

सएह भेल। ज्योतिकेँ शोध संस्थान पहुँचा तीनू भाँइ घुमि कऽ घर आबि गेला।

उर्वर भूमिक बनल परतीमे जहिना जोत-कोर आ नमीक संग बीआ पड़िते, किछुए दिन पछाइत हरिया उठैत तहिना ज्योतिक उर्वर शक्तिमे अनुसन्धानक नव-नव अँकुर पानिक हिलकोर जकाँ उठए लगल। तहूमे एक नहि, अनेक अँकुर। जहिना पोखैरमे झिझरी जकाँ पानिक हिलकोर चलैत तहिना ज्योतिक मनमे चलए लगलैन। जहिना भूखल बेकतीकेँ अपन अन्नक भण्डार भेने, वस्त्रहीनकेँ वस्त्र भेने, गृह विहीनकेँ गृह भेने विशाल जल-राशिक नदी सदृश मन उफैन जाइत तहिना ज्योतिक मन उफनए लगल। आइ धरिक दुनियाँ। नव दुनियाँ, नव-नव सुरूज-चान, ग्रह-नक्षत्र, नव-नव वस्तुसँ सजल दुनियाँ ज्योतिक आँखिक आगू नाचए लगल। ओ दुनियाँ जैठाम पहुँच मनुक्ख सृजन शक्ति प्राप्त कऽ सृजक बनि सृजन करए लगैत...।

ज्योति ज्योति नै सृजक बनि गेली। नन्दन बोनक माली जहिना अपन जिनगी ओइ बोनकेँ उत्सर्ग कऽ नव-नव फूल-फलक गाछ आन-आन जगहसँ जोहि आनि फुलवारी सृजैत, जेकरा देखि माली पुत्र अपन भविस बुझि एक संग छिड़ियाएल जामन्तो जिनगी लोढ़ि, फुलडाली सजा, देव मन्दिर लेल रखए चाहैत तहिना ज्योतियोकेँ श्रृंगी ऋृषिक विशाल उपवन भेट गेलैन। भेटिते ओइ माली पुत्र जकाँ अपन भविस देखए

लगली। दू धारक बीच महारपर ठाढ़ भऽ, एक दिस तरा-ऊपरी गिरल मनुक्ख तँ दोसर दिस जिनगीक खेलौना हाथमे नेने समुद्र दिस पीह-पाह करैत धारमे उधियाएल जाइत। उगैत-डुमैत ज्योति देखली जे कियो मात्र पति-पत्नीक जीवन लीलाकेँ जिनगी बुझि, तँ कियो अमरलत्ती सदृश वंश-वृक्षपर लतरबकेँ, कियो धार-समुद्रक बीच धरतीकेँ, तँ कियो अकास-पतालक बीचक विशाल वसुदेवकेँ...।

देखैत-देखैत ज्योतिक मन बेसम्हार भऽ गेलैन। अपन जुआनीक खिलैत कलीक संग चढ़ैत तन, उफनैत मनकेँ सम्हारि धारमे कुदए चाहली। मुदा मनमे नचलैन माए-बाप, धरतीक प्रथम गुरु। जहिना शिक्षक सिलेटपर खाँत लिखि शिष्यकेँ सिखबैत तहिना शिष्य सेहो ने लिखि-लिखि शिक्षकसँ शुद्ध करबैत। शुद्ध होइते ओहो खाँत ने खाँत बनि जाइत...।

सिनेमाक रील जकाँ ज्योति कुमारीक नजैर माता-पिताक सटले पतिपर पड़लैन। मुदा ओ किछुए क्षण धरि मनमे अँटकलैन। मनमे उठि गेलैन- बिआहक विधो तँ पछुआएले अछि..! लगले फेर माता-पिता आबि आगूमे ठाढ़ भऽ गेलैन। राति-दिन ज्योतिक मन सौनक मेघ जकाँ उमड़ए-घुमड़ए लगल। धारमे चलैत नाह जकाँ डोलि-पत्ता हुअ लगल। आँखि उठा तकली तँ देखलैन जे माता-पिता छोड़ि कहाँ कियो छैथ। फेर लगले मन घुमलैन तँ सभ किछु देखली। की नै अछि? मातृभूमिक संग पितृभूमि सेहो अछि। मनमे खुशी एलैन। होइत भोर कागत-कलम निकालि ज्योति पिताकेँ पत्र लिखए लगली-

"माता-पिता, सहस्त्र कोटि प्रणाम!

एक जिनगीक आखरी आ दोसरक पहिल पत्र लिखैत मन उमैक रहल अछि। तँए केतौ शुद्ध-अशुद्ध लिखा जाए, से माफ करैत सुधारि कऽ पढ़ि लेब। अपने लोकनिक सेवा, शिखर सदृश शिष्य जकाँ शिरोधार्य केने रहब। जहिना वादलक बून धरतीपर अबिते धरिया धार होइत समुद्र दिस बढ़ैत तहिना अपने लोकनि धरिया देलौं। कुल-कन्याँ वा कुल-कलंकिनी बनब हमर कर्म छी। मुदा बेटी तँ अहींक छी। हमहूँ तँ एतै बसब। तँए ताधरिक छुट्टी असीरवादक संग दिअ जे बास बना बसए लगी।

अहींक ज्योति”

पत्र पहुँचते अह्लादसँ दुनू बेकती रघुनन्दन-सुलक्षणी अपन ज्योति बेटीक पत्र पढ़ैक सुर-सार केलैन। पत्रपर नजैर दौड़ैबते दुनू बेकती अलिसा गेला। आगूमे अन्हार पसैर गेलैन। मुदा लगले मनक भक्क् खोलि रघुनन्दन पत्नीकेँ कहलखिन- “पत्रक उत्तर देब जरूरी अछि, मुदा की लिखब से फुरबे ने करैए।”

गर्म-ठंढक बीच जेहने सीमा असथिर रहैत तेहने चित्ते सुलक्षणी पतिकेँ विचार देलखिन-

“कोन लपौड़ीमे पड़ल छी। माए-बाप केकरो जन्म दइ छइ। जीबैले अपने ने रौद-वसात सहए पड़तै। आब अहीं कहू जे एहनो बात पत्रमे लिखि वेचारीकेँ पढ़ैक समय बरदेबै? रहल असीरवादक तँ एतैसँ दुनू परानी मिल दऽ दियौ।”



शब्द संख्या: 3300

मायराम

अमावस्याक राति, बारहसँ ऊपर भऽ गेल छल मुदा एक नै बाजल रहइ। डन्डी-तराजू माथसँ निच्चाँ उतैर गेल छल। सन-सन करैत अन्हार...।

नित्य नअ बजेमे निन्न पड़ैवाली मायरामकेँ आइ आँखिक नीन निपत्ता छैन, रातिक एक बजैबला अछि।

कछमछ करैत मायराम ओछाइनपर एक करसँ दोसर कर उनटैत-पुनटैत समय बीता रहल छैथ, अकैछ कऽ केबाड़ खोलि बाहर निकलली तँ काजर घोराएल रातिमे अपनो हाथ-पएर नै सुझि रहल छैन। जहिना करिछौंह दुनियाँकेँ आँखिसँ देखब कठिन होइत तहिना दसो दुआरि बन्न, मन खलियाएल बुझि पड़लैन। पुन: घुमि कऽ ओछाइनपर आबि ओंघरा गेली! दिन-रातिक बोध-विहीन मायरामक मन तड़ैप उठलैन-

"नैहर!"

पहिल सन्तान होइते सुदामा (मायराम) बाइसे बर्खमे विधवा भऽ गेली। गत्र-गत्रसँ जुआनी, फुलझड़ीक लुत्ती जकाँ छिटकैत रहैन। ओना, सरकारी रजिष्टरमे जुआन भऽ गेल छेली मुदा बत्तीसीक अन्तिम दाना नै उगल रहैन।

साँपक बीखसँ पतिक करियाएल देह देखि अपनो मरनासन भऽ गेली। पथराएल आँखि टक-टक तकैत मुदा अन्हारसँ अन्हराएल। बगलमे डेढ़ बर्खक बेटा उठैत-खसैत अँगना-घर घुमैत-फिरैत। तैबीच हहाएल-फुहाएल शंकरदेव आँखिमे यमुनाक धार नेने पहुँचला। बहिन-बहनोइक रूप देखि शंकरदेव अपन आँखिक नोर पोछि भागिनकेँ उठा छाती सटा सुदामाकेँ कहलखिन-

"बुच्ची, होश करू। दुनियाँक यएह खेल छिऐ। अहीं जकाँ नानियोँकेँ भेल रहैन। मुदा आइ केहेन भरल-पूरल परिवार छैन। एक-ने-

एक दिन, ओहिना अहूँक परिवार दुनियाँक फुलवारीमे फुलाएत।”

शंकरदेवक बात सुनि सुदामाक आँखि तँ खुजलैन मुदा बकार नइ फुटलैन। नर-नारीक करेजो तँ दू धारक दू माटि सदृश होइत अछि। बहनोइक पार्थिव शरीरकेँ जरबैक ओरियानमे आँगनसँ निकैल शंकरदेव समाज दिस बढ़ला।

पनरहम दिन बहिनकेँ संग नेने अपना गाम विदा भेला। गामक सीमानपर अबिते कन्नारोहट शुरू भेल। बच्चासँ बुढ़ धरि सुदामाकेँ छाती लगबए आगू बढ़ल।

वेचारी निसहाय भेल ओहिना पड़ल छेली जहिना चोंगरा परहक घर खसल-पड़ल रहैए। मुदा ताधैर गामक धरोहिक ऐगला अंक पहुँच गेल। एक्के-दुइए ढेरो छाती सुदामाक छातीमे सटि, चारू दिससँ पकैड़ टोल दिस बढ़ल। सुदामाक मनमे उठलैन जँ अपने कानब तँ समाजक कानब केना सुनबै? से नइ तँ समाजेक कानब सुनी जे आगूक जिनगी केना जीब...।

जहिना बीच आँगनमे माए ओंघरनियाँ दैत तहिना दरबज्जापर पिता भुइयेँमे पेटकान देने! अपन-अपन अथाह समुद्रमे सभ डुमल। के केकर नोर पोछत। दुनू पएर धोइ भतीजी गाराजोरी केने आँगन बढ़ली। दुरुखापर पएर दैतै सुदामाक रूदनसँ बहराएल-

“हे मइया..!”

जहिना धड़सँ कटल अंग छटपटाइत तहिना माइक मन छटपटाइत रहैन। छटपटाइत कामिनीक मनमे प्रश्न-पर-प्रश्न उठए लगलैन। मुदा कोनो प्रश्नक सोझ रस्ता नै देखि काँटक ओझरी जकाँ मन ओझराए लगलैन। एक ओझरी छोड़बैथ आकि बिच्चेमे दोसर लगि जाइन। की आगूक जिनगी लेल बेटीकेँ दोसर बिआह कऽ देब? मुदा फेर मन उनैट जानि जे जिनगी लेल सहचर तँ आवश्यक अछि!

की सहचर लेल पति आवश्यक अछि? मुदा जेते असानीसँ गुंथी खोलए चाहैथ ओते असानीसँ खुजबे ने करैन। तैबीच दोसर प्रश्न अकुँरि गेलैन- बेटीक संग नातियो अछि। जँ बेटी दोसर घरकेँ अपन घर बनौत तँ

नातिक..? पुत्र हत्याक पाप केकर कपार चढ़त? की कुत्ता जकाँ पछिलग्गू एहेन सुकुमार फूलकेँ बना देब? अखन ओ दूधमुँह अछि, की बुझत? की अपन भूमि आ आनक भूमिक मर्जादा एक्के रंग होइत? की दोसरो घरमे ओहने ममता माइक भेटतै? मनुक्खेक क्रिया-कलाप ने कुल-खनदानक जड़िमे पानि ढारैए।

कामिनीक घुरियाएल मनकेँ राह भेटलैन। सुफल नारी जिनगी तँ वएह ने छी जेकरा आँचरक लाल मातृत्व प्रदान करैए। जइसँ वीणाक झंकृत मधुर स्वर हृदयकेँ कम्पित करैत रहै छइ। से तँ भेटिये गेल छइ। मुदा जहिना ठनकैत अकाससँ ठनका खसैत तहिना मनमे खसलैन- “मुदा समाज?”

की मनुक्ख-पोनगैक स्थिति समाजमे जीवित अछि?

सुदामाक सम्पन्न पितृ परिवार। अदौसँ श्रम-संस्कृतिक बीच पुष्पित-पल्लवित परिवार। जइसँ रग-रगमे समाएल अपन संस्कृति। ओना, सम्पन्नताक सीमा असीमित अछि, मुदा परिवारक आँट-पेट देखि अपन जिनगीक स्तर बना चलब सम्पन्नताक अनेको कारणमे एक प्रमुख छी। तँए सम्पन्न परिवार। ओना, आर्थिक दृष्टिए सुदामाक बिआह दब परिवारमे भेल छेलैन मुदा बेवहारिक दृष्टिए बरबैरमे छेलैन। कम रहितो गोरहा खेत छेलैन जइसँ खाइ-पीबैक कोताही नहि। किछु आगूओ बढ़ि ससरैत। सालक तेरहम मासमे घरक कोठी-भरली झाड़ि इजोरिया दुतियासँ भागवत कथाक संग हरिवंश कथा सुनि, भोज-भनडारा कऽ सामा-चकेबा जकाँ आगू दिस बढ़ैत।

बेटाक पालन आ धर्मक काज देखि अपनो गाम आ चौबगलियो गामक लोक सुदामक नाओं ‘मायराम’ रखि देलकैन। बच्चासँ बुढ़ धरि ‘मायराम’ कहए लगलैन।

रविशंकरक परिवारमे चूल्हि नै पजरल। जखन सुदामा आएल तखन जे कन्नारोहट शुरू भेल, से भरि दिन होइते रहि गेल। कखनो बेसी तँ कखनो कम। चूल्हि नै पजरने टोल-पड़ोसक परिवारसँ थारी-थारी भात, दालि एतेक आएल जे राति धरि चलैत रहल।

सायंकाल रविशंकर आँगनक ओसरपर बैस, सुदामाक भावी

जिनगी लेल पत्नियोँ आ बेटो-पुतोहुकेँ बैसा विचार करए लगला।

विचारोत्तर निर्णय भेल जे काल्हिए शंकरदेव सुदामाक सासुर जा खेती गिरहस्ती ताधैर सम्हारैथ जाधैर सुदामाक बेटा जुआन नै भऽ जाएत। तैसंग ईहो विचार भेल जे छह मास सासुर आ छह मास नैहरमे सुदामा रहत।

अठारह बर्ख पुरिते राहुलक बिआह भऽ गेल। नव परिवार बनि ठाढ़ भेल। शंकरदेव अपना ऐठाम चलि एला।

तीन सालक पछाइत रविशंकर आ पाँच सालक पछाइत कामिनी मरि गेली। मुदा दुनू ठामक परिवारमे कोनो कमी नै रहल। हवाइ-जहाज जकाँ तेज गतिए तँ नहि, मुदा टायरगाड़ी सदृश असथिर सवारी जकाँ परिवार आगू मुहेँ ससरए लगल।

मायरामक प्रति समाजक नजरिया सेहो बदलल। समाजक आन विधवा जकाँ नहि, जे कियो अशुभ बुझि कनछी कटैत तँ कियो पशुवत बेवहार लेल मरड़ाइत रहैत। बल्कि तीर्थस्थान जकाँ मायरामक परिवार बनि गेलैन। 'भागवत कथा'क संग 'हरिवंश कथा' आ भोज-भनडारा कऽ समाजकेँ खुआ सालक विसर्जन साले-साल मायराम करए लगली।

पाँच बर्खक पछाइत मायरामक भरल-पुरल नैहर कोसीक कटनियासँ धार बनि गेल। गामक बीचो-बीच सनमुख धार बहए लगल।

घटनो अजीब घटल। चारि बजे करीब बाढ़िक हल्ला गाममे भेल। किरिण डुमैत-डुमैत धारक कटनिया शुरू भेल। गामक सभ बाध नदिया गेल। उत्तर-सँ-दच्छिन मुहेँ बहए लगल। बाढ़िक बिकराल रूप देखि गामक लोक माल-जाल, बक्सा-पेटीक संग ऊँचगर-ऊँचगर जमीनपर पहुँचल। नट-बक्खो जकाँ नव बास बनि गेल।

बाढ़िक गुंगुआहैट सुनि-सुनि लोक सभ किछु बिसैर अपन-अपन परान बँचबैक गड़ लगबए लगल। चारू कात बाढ़ि पसरल। जइसँ ईहो डर होइत जे जँ कहीं अहूपर पानि चढ़त तखन की हएत? अन्हरिया राति, हाथो-हाथ नै सुझैत। जीवन-मरनक मचकीपर सभ झूलए लगल। सबहक भूख-पियास मेटा गेल। जहिना दुखित नव बिआएल गाए-महींस बेथित

आँखिए बच्चाकेँ देखैत तहिना सभ माए-बापक आँखि बाल-बच्चापर। मुदा मनुक्ख तँ मनुक्ख छी, जानवर तँ छी नहि जे हरियर घास देखि बच्चो आगूक लूझि कऽ खा लइए। एना मनुक्ख थोड़े करत। बाल-बच्चा लेल तँ मनुक्ख अपन खूनकेँ पानि बनबैत, अपन सुआदकेँ छोलनी धिपा दगैत, अपन मनोरथ बच्चामे देखैए। अपन जिनगीकेँ बलिवेदीमे आहूत दइए।

भोरहरबामे हल्ला भेल जे बीस नमरी पुल कटि कऽ दहा गेल! पुलक समाचार सुनि सबहक छाती डोलए लगल। पूव दिसक रस्ता बन्न भऽ गेल।

किछुए कालक पछाइत फेर हल्ला भेल जे बेटा संग रोगही पानिमे डुमि गेल। किछु काल धरि तँ हल्लामे बाते नै फुटैत मुदा तोड़ मारि हल्लामे विहियाति-विहियाति समाचार विहिया गेल। भाँसि कऽ केते दूर गेल हएत तेकर ठेकान नहि, तँए कियो आगू बढ़ैक हूबे ने केलक। जहिना एक टाँग टुटने गनगुआरि नै नेंगराइत तहिना एक गोरेकेँ मुइने समाज थोड़े नेंगराएत। एना सभ दिन होइत एलै आ आगूओ होइत रहतै...। हल्ला शान्त होइते शंकरदेव पत्नीकेँ कहलखिन- “आब जान नै बँचत!”

“एते अन्हारमे केतए जाएब। भने ऐठाम छी।”

पत्नीक बात सुनि डेराइत शंकरदेवक मुहसँ निकलल-

“जँ अहूपर बाढ़ि चढ़ि जाएत?”

“सभ तूर संगे कोसीमे डुमि जाएब। कियो बँचब तखन ने दुख हएत। जँ दुख केनिहारे नै रहब तँ दुख केकरा हएत।”

पौरुकी घुटकल। आन-आन चिड़ै सुतले रहए। पौरुकीक आवाज सुनि शंकरदेवक मनमे दुभिक नव मुड़ी जकाँ, नव चेतना जगलैन। बजला-

“भिनसर होइमे देरी नै अछि। जँए एतेकाल तँए कनीकाल आरो। दिन-देखार तँ असगरो लोक अमेरिका चलि जाइए। अपना सभ तँ बाधक थोड़े रस्ता काटब।”

किरिण उगैसँ पहिने ऊँचकापर पानि चढ़ए लगल। चढ़ैत पानि देखि हरविर्रो भेल। गाए-महींस, बक्सा-पेटी छोड़ि सभ अपन जान बँचबैक गड़ लगबए लगल। जहिना वैरागी दुनियाँकेँ मायाजाल मानि, छोड़ि, आत्म

चिन्तनमे लगि जाइत तहिना माल-असबाव छोड़ि अपन-अपन जान बँचाएब सोचए लगल। तही बीच बाँसक झोंझमे मैना सभमे तेना झौहैर उठल जेना केकरो वोनबिलाड़ि पकैड़ नेने होइ।

पूब दिस फीक्का गुलावी जकाँ अकासमे पसरए लगल। मुदा बिलटैत जिनगी आ डुमैत सम्पैतक सोग एक-एक बेकतीक मनक अन्हारकेँ आरो बढ़बैत रहइ। सुखल जमीनपर पहुँचते छोट-छीन आशा शंकरदेवक मनमे जगलैन। मुदा चारू बच्चो आ पत्नियोंक मनमे दुधाएल चाटल दानाक खखरी जकाँ बेर-बेर शंका खिहारैत जे हो-न-हो, फेर ने कहीं आगूए-सँ बाढ़ि चलि आबए...। तैबीच मिरमिराइत पत्नी शंकरदेवक मुँह दिस तकैत बजली-

“एते लोकक गाममे एक्कोटा संगी नै देखि रहल छी!”

“सभ अपने जान बँचबै पाछू अछि तखन के केकरा देखत।”

“जाबे लोक, भरल-पूरल रहैए ताबे दुनियाँ हरियर बुझि पड़ै छइ। मुदा...।”

“हँ, से तँ होइते छइ। मुदा...।”

“हँ, ईहो होइ छइ। अखन माए जीबैए, केतए वौआएब। बच्चो सबहक मात्रिके भेल, अपनो नैहरे भेल आ अहूँक सासुरे।”

पत्नीक बात सुनि शंकरदेव गुम भऽ गेला। मनमे चूल्हिपर खौलैत पानि जकाँ विचार तर-ऊपर हुअ लगलैन। बजला-

“कहलौं तँ बड़बढ़ियाँ। मुदा सासुरसँ नीक बहिन ऐठाम हएत।”

“केना?”

“जइ दिन वेचारीक ऊपर विपैत आएल छेलै तइ दिन यएह देह अपन घर-परिवार छोड़ि ठाढ़ भेल छेलइ। आइ की हमरे गाम-घर मेटा रहल अछि आकि ओकरो नैहर।”

“अहाँकेँ जे विचार हुअए।”

“विचारे नहि, विपैतमे लोकक बुधि हेरा जाइ छइ। जइसँ नीक-अधलाक विचार नै कऽ पबैए। मुदा अहीं कहूँ जे सासुरमे कान्हपर कोदारि

लऽ कऽ खेत-पथार जाएब, से केहेन हएत? अपन जे दुरगैत हएत से तँ हेबे करत, मुदा दुनू परिवारक की गति हएत?”

बाढ़िक समाचार इलाकामे पसैर गेल। मायरामक कानमे सेहो पड़लैन। भाय-भौजाइक आशा-बाट तकैत मायराम बेटाकेँ संग केने आगू बढ़ली। मुदा किछु दूर बढ़लापर सोगसँ पथराएल पएर उठबे ने करैन। बाटक बगलक गाछक निच्चाँमे बैस बेटाकेँ कहलखिन-

“राहुल, पएर तँ उठबे ने करैए। केना आगू जाएब? ता तूँ आगू बढ़ि कऽ देखहक।”

छबो तूर शंकरदेव ऐ आशासँ झटकल अबैत जे जेते जल्दी पहुँचब ओते जल्दी बच्चा सभकेँ अन्न-पानिसँ भेँट हेतइ। रतुको सभ भुखाएले अछि। तैबीच राहुलक नजैर मामपर आ मामक नजैर भागिनपर पड़ल। नजैर पड़िते राहुल दौड़ कऽ ठाढ़े मामाकेँ गोड़ लागि मामीक कोराक बच्चाकेँ अपना कोरामे लैत बाजल-

“माइयो अबैए, मुदा डेगे ने उठै छेलइ। आगूमे बैसल अछि।”

राहुलक बात सुनि मामी बच्चा सभकेँ कहलखिन-

“भैयाकेँ गोड़ लगहुन।”

बच्चाकेँ कोरामे नेने आगू-आगू राहुल आ पाछू-पाछू सभ कियो विदा भेला। सभसँ पाछू शंकरदेव अपने। मोन पड़लैन रौतुका दृश्य। केना छनेमे छनाक् भऽ गेल! जिनगी भरिक जोड़ियाएल घरक वस्तु-जात आगि लगने आकि बाढ़ि एने केना लगले नास भऽ जाइ छइ! मान-प्रतिष्ठा, गुण-अवगुण, केना छनेमे केतए-सँ-केतए चलि जाइ छइ! ठीके लोक बजैए जे दिन धराबे तीन नाम। अपने छी जे एक दिन बहिनक रक्षक बनि ऐ गाममे छेलौं आ आइ..! एक दिन गाड़ीपर नाह आ एक दिन नाहपर गाड़ी! माटि-पानिक खेल छी। गंगा-यमुनाक बीच केतौ माटियो छै आकि खाली पानियेँ-पानि..!

किछु फरिक्केसँ भाय-भौजाइकेँ अबैत देखि मायरामक मन ओइ धरतीपर पहुँच गेलैन जे सात समुद्रक बीच अछि। एक ओद्रक रहितो एक भिखारी दोसर राजा! मनमे उठलैन- परोपट्टाक लोक सिनेहसँ ‘मायराम’

कहै छैथ मुदा भैयाकेँ की कहतैन? की भैयाक कर्म बिगड़ल छैन? एक परिवारक बँचौल कर्म छैन। चान, सुरूज, धरती, ग्रह-नक्षत्र इत्यादि तँ अपना गतिए करोड़ो बर्खसँ नियमित चलि रहल अछि आ चलैत रहत, की मनुक्खोक गति ओहन भऽ सकैए, आकि चाने-सुरूज जकाँ मनुक्खोक चलैक एकबटीए अछि? ब्रह्मक अंश जीव रहितो की फुलझड़ीक लुत्ती जकाँ नै अछि? जेतए जेहेन जलवायु तेतए तेहेन उपजा-वारी! जँ केतौ वायु परानक रूपमे घट-घटकेँ आगू बढ़ैक प्रेरणा दैतो अछि, तँ वएह विषाक्त बनि परान नै लैत अछि?

गोलाक चोटसँ जहिना पोखरिक पानिमे हिलकोर उठैत आ आस्ते-आस्ते असथिर होइत चिक्कन आँगन जकाँ सहीट बनि जाइत तहिना मायरामक मन सहीट हुअ लगलैन। मुदा लगले नजैर उड़ि भतीजीपर गेलैन। भतीजीपर पहुँचते मन तरपए लगलैन। बाप रे बाप! एहेन दुरकालमे भैया केना इज्जत बँचौता? अपनो लग जमा किछु तँ नहियेँ अछि। साले-साल हिसाब फरिया लइ छी। हे भगवान! जँ केकरो दुखे दइ छिऐ आकि सुखे दइ छिऐ तँ तुलसी पात आकि दुभिक मुड़ी जकाँ खोंटि-खोंटि किए ने दइ छिऐ जे गुलाब-गेन्दा तोड़िए कऽ दऽ दइ छिऐ? लगले नजैर मायराम छिप्पा जकाँ छिहैल अपन मातृत्वपर पहुँच गेलैन। केना बेटाकेँ पोसि-पालि ठाढ़ केलौं आ ई सभ...। लुधकी लागल एकटा गाछ फड़बे करत तइसँ गामक सबहक मुँहमे थोड़े जाएत। जेते मनुक्ख अछि ओकरा तँ धरतीसँ अकास धरि चाहिए, तखन ने जीबैक आजादी भेटतै..? मुदा लगले जहिना पानि ठंढेने बर्फक रूप लिअ लगैत तहिना दूधसँ उपजैत दही जकाँ मायरामक मन सकताए लगलैन। साँस सुषुमा गेलैन। मनमे खौललैन- नैहर मेटा गेल तँए कि सासुरो मेटा गेल? जहिना भैया नैहरमे भैया छला तहिना अहूठाम भैया रहता। भगवान अपन कोखि अगते लऽ लेलैन तँए की भतीजीकेँ अपन कोखिक नै बुझब? ऐठाम जे अछि ओ की भैयाक नइ छिऐन? खेत-पथार, घर-दुआरि चलि गेलैन आकि हाथो-पएर चलि गेलैन? गुमे-गुम, जहिना मृत्युक अवसरपर गुम भऽ स्मरण कऽ निराकरणक बाट जोहल जाइत तहिना सभ कियो घरपर पहुँचला। ताधैर पुतोहु माने रोहितक पत्नी हाँइ-हाँइ कऽ खिच्चैड़ आ अल्लूक सन्ना बना,

बाट तकैत रहथिन।

सबहक आँखि सभ दिस हुलैक-हुलैक वौआइत रहैन। तैबीच राहुलक कोरक छोटका बच्चा, घर देखिते, बाजल-

“दीदी, बड़ भूख लगल अछि?”

बच्चाक बात सुनि मायरामक भक् टुटलैन। अनासुरती मोन पड़लैन बटोहीकेँ जहिना इनारपर ठाढ़े-ठाढ़ पानि पिऔल जाइत तहिना ने अखन ईहो सभ छैथ। नहाय-धोइमे अनेरे देरी किए लगाएब। बजली-

“कनियाँ, भरि रातिक थाकल-ठेहियाएल सभ छैथ, तँए पहिने किछु खुआ कऽ अराम करए दियौन। गप-सप्प पछाइतो हेतइ। भोजन बादेक अराम तँ सोग कम करैक उपाय छी।”



शब्द संख्या: 2095

गोहिक शिकार

बच्चासँ सियान धरि जाबे तीनू धाम–सिंहेश्वर, कुशेश्वर आ जनकपुर–नइ देखने छेलौं ताबे अपनो बाबा आ सामाजिको काका, बाबासँ सुनैत रहलौं जे तीनू धाम एक्के रंगक दूरीपर अपना सभकेँ अछि। ई भिन्न बात जे जैठाम पृथ्वीपुत्री सीता छैथ तैठाम सिंह सदृश सिंहेश्वर बाबा सेहो छैथ। मुदा आब जखन तीनू धाम देखलौं तखन जँ विचारै छी तँ स्पष्ट दूरी बुझि पड़ैए।

बान्ह-सड़कक अभावमे गामसँ गाड़ी-सवारी नहि, तँए नाहसँ कुशेश्वर, सिंहेश्वर आ जनकपुर पएरे गेलौं। भलेँ अकास मार्गसँ एक-रँगाह होइ मुदा जमीनी रस्तामे अन्तर अछि। कहैले तँ कोसियो धार टपै पड़ैए मुदा सप्तकोसियोसँ बिकट रस्ता अछि। ओना, जखन जाए लगलौं तखन सात दिनक बटखरचाक संग धानक जुट्टी–चढ़बैले–लऽ नेने रही तँए चिन्ता नहियेँ जकाँ रहए। मुदा कोसीक लहैर देखि मन डेराएल जरूर।

जनकपुरक ठेही बाट, तँए कच्चियो रहने पएरे चलैमे सुगम अछि। जहिना छोट-छीन शब्द संगीक संग संयुक्त भऽ नमहर बनि ओझरी लगबैत जाइत तहिना कुशेश्वरक रस्ताक धार सभ केने अछि। कोन धार केतए मिलि अपनो बदैल गेल आ दोसरोकेँ बदैल गंगो-ब्रह्मपुत्रसँ विकराल रूप बना नेने अछि। जइसँ टपब समुद्र जकाँ भऽ गेल अछि। मुदा बिना टपने कुशेश्वर पहुँचब केना? संयोग नीक जे धार सबहक बीच मातृक अछि। कातिक बीतैत ममियौत भाय नाह बनबए गाम पहुँचला। किएक तँ पहिलुका नाह भँसियाएल अबैत एकटा ढेंगमे लगि फुटि गेलैन।

हुनका सबहक ने गाछी-बिरछी बाढ़िक पानि एने सुखि गेलैन मुदा अपना सबहक तँ बँचल अछि। अपने जामुन गाछ देखा देलिऐन।

सुरेब गाछ देखि भाइक मन मुस्किया गेलैन। हलैस कऽ कहलैन-

“बौआ, नाहो भऽ जाएत आ हरिस, पालो आ चौकीक संग साल

भरिक जारैन सेहो भऽ जेतह।"

'जारैन' सुनि कहलयैन- "भैया, माले-जाल तेते अछि जे ने जारैनक दुख होइए आ ने खेत सभमे बजरूआ खादक।"

भाय चुप भऽ गेला, पछाइत जलखै करैकाल बजला-

"जखन लकड़ीक गड़ लगिए गेल तखन चलह बनौनिहारोकेँ कहि हाथ लगाइए देब।"

कहलयैन- "हँ तँ बेजाइए कोन।"

पान-सुपारी मुँहमे दैते डेग बढ़ौलैन। पाछू-पाछू विदा भेलौं। बरहीक घर लगेमे तँए पहुँचैयोमे देरी नहियेँ लागल। पहुँचते राजिन्दर पुछि देलक-

"पाहुन कहाँ रहै छैथ।"

कहि चौकीपर ओछाएल ओछानिकेँ हाथेसँ झाड़ए लगल। दुनू भाँइ बैसलौं। बैसते भाय पुछलखिन- "मिस्त्री, एकटा नाह बनाएब।"

भैयाक मुँह दिस राजिन्दर ठकुआएल टकर-टकर देखए लगल। किछु फुरबे ने करै जे बाजत। ठेही परहक बरही, तँए हर-पालोक संग हँसुए-खुरपीटा बनौनाइ आ फाड़े पिटनाइ खाली बुझैत।

राजिन्दरकेँ ठकुआएल देखि राजिन्दरक पीसा जे दू दिन पहिने आएल छेलखिन, बजला- "केतेटा नाह बनाएब?"

भाय कहलकैन- "तेरह हाथक।"

"घरैया आकि घटवारिबला?"

"घरैये।"

मने-मन नाहक पेटक हिसाब जोड़ि पीसा कहलकैन-

"पनरहिया लगि जाएत। दू दिन एनो भऽ गेल।"

पीसाक बात सुनि राजिन्दक मन हलैस गेल। जहिना हँसैत फूलक सुगन्धमे भाय वायुक संग वायुमण्डलमे विचरण करैथ तहिना हलसल मन राजिन्दरक बाजि उठल- "पीसा, एक पंथ दू काज। अहाँक पहुनाइयो सुतैर जाएत आ हमरो एकटा लूरि बढ़ि जाएत, उपकार तँ नफ्फामे हएत।"

दुनूक बात सुनि अपनो मन कलैश गेल जे भरि आँखि बनैबतो देखब आ जाबे नाह रहत ताबे भैयौ गुण गबैत रहता, तँए स्टेशनक कुल्ली जकाँ, जे 'हैयौ-हैयौ' करैत सिमटीक बनल पुलक पायाकेँ ठेलैत तहिना ठेलैत बजलौं-

"भैया, अखन ठरपर छी, ऐठीन जे काज हएत से नीक हएत। अनभुआर जगहमे पच्चीसटा बिहंगरा होइ छइ?"

तैबीच सह पाबि राजिन्दर फुदैक उठल-

"पीसा, कमाइ अपन अपने राखब। खेनाइक चिन्ता नै करू।"

कमाइ देखि पीसा बजला-

"भाय, जहिना अहाँ धारऽ कातक छी, तहिना हमहूँ छी। हम पूवारि पार रहै छी।"

बनाइक गप-सप्प भेल। मुदा खेनाइक गप-सप्प भेबे ने कएल। किएक तँ हुनका दुनू गोरेकेँ बुझल। दोसर दिन जखन काज शुरू भेल तखन बुझलौं।

दोसर दिन जामुनक गाछ खसा, पाँगि-पुँगि कऽ तेसर दिन चिराइमे हाथ लगि गेल। भरि दिन भैया गमछाक अराम कुरसी बना मिस्त्रीए लग बैस अपन देश-कोसक महाभारत सुनबए लगलखिन। आ अपने खन अँगना, खन खेत, खन भैया लग आबि-आबि हाजिरी पुरबए लगलौं।

बारहम दिन नाहक सकल ठाढ़ होइते भैयाक मन जेठुआ बाढ़ि जकाँ फुलाए लगलैन। जहिना धार फुलेने चरो-चाँचरमे फूल पकैड़ लइ छै तहिना अपनो मन फुला गेल। पथिया नेने माए तख्ताक छोलैन अनैले पहुँचले छेली, कि पछबारि बाधसँ घुमि पहुँचलौं। मुस्की दैत भैया कहलैन-

"बौआ, कुशेसर चलह।"

भैयाक बात सुनि माए बजली-

"बहू दिन गेना भऽ गेल।"

भैयाक मनमे कि रहैन से तँ नीक नहाँति नै बुझलौं। मुदा अपना भेल जे भरिसक रस्तामे छीना-छीनी दुआरे बजला, संगीक जरूरत छैन।

ओना, मनमे ईहो भेल जे जहिना नाहक सभ काज भेलैन तहिना सुहरदेसँ, गामो पहुँचाएब जरूरी अछि। के कहलक रस्ता पेरामे नाहक संग जानो चलि जाइन। कहलयैन-

"कए गोरेकेँ लऽ जेबैन?"

"सभ तूर चलह।"

'सभ तूर' सुनि माए बजली-

"बौआ, सभ तूर जे जाएब से बनत। कोनो कि नोकरिया-चकरियाक घर छिऐ जे ताला लगा दियौ आ विदा भऽ जाउ। चारिटा माल अछि, धानक लड़ती-चड़ती अछि, तखन?"

बिच्चेमे भैया कहलखिन-

"एको गोरे जँ पीठपोहू रहत तैयौ चलि जाएब।"

कुशेश्वरेक रस्तामे मातृक अछि। माने मामाक घरसँ चारिए कोस दच्छिन- कुशेश्वर अछि। कहलयैन-

"भने कुसेसरो बाबाक दर्शन भऽ जाएत आ दू दिन मात्रिकोमे रहि जाएब।"

नाह बनि गेल। जेते छाँट-छूँट, तख्ता उगरल, सभ सेरिया कऽ रखि लेलौं। काल्हि भोरमे जाएब। पुछलयैन-

"भैया, रस्ता भँजियाएल अछि किने?"

भाय हँसैत बजला-

"तूँ सभ ठेही परहक छह तँए रस्ता तकै छहक। हमरा सभ लिए जेहने धार, तेहने डुमल खेत। पहिने सुपेन धार होइत गहुमा पहुँचब। गहुमासँ भुतही कमलामे चलि जाएब! जखने कमला पहुँचलौं तखने बुझह जे धाम पहुँच गेलौं। घुमती काल सिरा रहत तँ एक गोरे गुन खिंचब दोसर गोरे नाहपर रहब।"

माएकेँ कहलिऐ-

"बटखर्चा ओरिया मोटरी बान्हि दिहैन। जाइ बेरक आशा नै रखिहेँ, हड़बड़मे कोनो चीज छुटि ने जाए।"

माए कहलक- “तीन सालसँ घीओ रखल अछि, ऊहो नेने जैहह।”

“बड़ बढ़ियाँ। मोटरीए-मे बान्हि दिहैन।”

“हरा-तरा जेतह?”

“से की अखन गरमी मास छी। ओ तँ अपने तेहेन जमल हएत जे बिना मुन्नोक काज चलि जाएत।”

तैयो माए बजली- “मकैक नेरहाबला मुन्ना अछि। ओ छिछलाह होइए। कहीं नाहक झमारमे छिछैल कऽ खुजि जेतह तखन तँ हेराइए जेतह।”

मन खुशी रहबे करए, कहलिऐ-

“अच्छा, दोसरे मुन्ना लगा दिहैन?”

“बड़बढ़ियाँ। नेरहाबला बदैल कटकटा कऽ कोढ़िला लगा देब। ओ थोड़े छिछलाह होइए।”

जाड़क मास रहने भदबारि जकाँ ने धारे नचैत आ ने चरे-चाँचरक ओ रूतबा। भट्ठा दिस जाएब छल तँए मिसियो भरि भैयाकेँ थकान नै बुझि पड़ैन। जहिना ढलानपर गाड़ी तहिना सिरासँ भट्ठाक नाह। माथपर गोसाँइ देखि कहलयैन-

“भैया, पानि तँ ऐछे, केतौ खा लिअ।”

कहलैन-

“गड़ लगा कऽ ने नाह लगाएब।”

किछु दूर आगू बढ़लापर धारेकातमे एकटा पीपरक गाछ रहइ। खूब झमटगर। एक भाग, धार दिसक अदहासँ बेसी सिर अलगल रहइ। नाह बन्हैक सुविधा आ छाहैरो तहिना, धारक पेटेमे चहटी जकाँ, जैपर घास जनैम गेल छेलइ।

पवित्र जगह देखि भैया चपचपाइत बजला- “बौआ, नीक जगह अछि। थोड़ेकाल अरामो कऽ लेब।”

गाछ लग पहुँच भैया कहलैन- “बौआ, तूँ नाहेपर रहअ, हम बन्है छी।”

कहि धाँइ-दे मांगिसँ कुदि रस्सी पकड़ने हाँइ-हाँइ कऽ गाछक सिरमे नाहक रस्सी लटपटौलैन। नाह ठाढ़ भेल। उतरलौं। ओइठाम धार भकमोड़ नेने। एतेकाल दच्छिन-मुहेँ छल, आब पच्छिम-मुहेँ भऽ गेल। उतैर कऽ आगू तकलौं तँ बुझि पड़ल जे मरकाठीक डेंगरी सभ छिड़ियाएल अछि। रहि-रहि कऽ गन्ह सेहो अबइ। कहलयैन-

"भैया, ई तँ मुर्दघट्टीमे चलि एलौं! ऐठाम कन्ना रहब आ खाएब?"

मुस्कियाइत भैया कहलैन- "ई सभ अधजरू डेंगरी नहि, गोहि सभ छी। रौद तापैले ऊपर आएल अछि।"

भैयाक बात सुनि डरे मन डोलि गेल। आँखि उठा-उठा निहारि-निहारि देखए लगलौं। मोन पड़ल कलकत्ताक चिड़िया खानाक गोहि। बाप रे! ई तँ जीविते लोककेँ गीर जाइए! माघक जड़ाएल बच्चा जकाँ देह डोलए लगल। मुदा भाय लेल धैनसन।

ओइ भकमोड़पर खूब नमहर मोइन। जेहने नमहर तेहने गहींर। जेठोमे अगम पानि रहैत। तैबीच भुक-दे पारा जकाँ एकटा शोंश उगल आ लगले डुमि गेल। आरो डर बढ़ि गेल। कहलयैन- "भैया, नाह पार केना करब। ई तँ तेहेन-तेहेन पनियाँ जानवर सभकेँ देखै छी जे एक्के हुड़कान मारत तँ नाहे उनटा देत।"

मुदा ओ मुस्किया कऽ रहि गेला। जेना-जेना डर बढ़ैत जाए तेना-तेना आँखि निड़ारि-निड़ारि देखए लगलौं। करीब पनरह कट्ठासँ बेसीए-रकबामे मोइन, जइमे धारक पानि चकभौर लइत! कखनो-कखनो बुल-बुला सेहो निकलै। तैबीच एकाएक पछिया हवाक संग दुरगन्ध पसैर गेल। कहलयैन-

"भैया, कोनो जरैत मुरदाक गन्ध छी?"

भैया कहलैन- "ऊँहू, भरिसक मलेछ छी।"

अपन विचारकेँ मजगूत करैत पुछलयैन- "जँ मरचर नै छी, तँ मलेछ केतए-सँ आएल?"

आब, जेना हुनको मनमे डर पैसलैन। बजला- "एक बेर सुहतरिया घाटमे मलेछ नाहे उनटा देलकै।"

बजैकाल तँ बाजि गेला मुदा लगले बात बदैल बजला- “बौआ, कोसिकन्हाक मलेछ की लोककेँ किछु कहै छइ। देखबहक जे अपियारी सभमे एक दिस लोक माछ बिछैत रहतह आ दोसर दिस मलेछ सभ। तोरा इलाकामे परसौती स्त्रीगणकेँ मलेछ बेसी हरान करैए।”

अपनो मन मानि गेल, किएक तँ एक खुट्टापर गाए-बरद पटका-पटकी करैए, मुदा दोसर खुट्टापर संगी बनि दूधक धार बहबैए।

तैबीच लोकक सुन-गुन पाबि गोहि सभ धाँइ-धाँइ पानिमे कूदल। मोइनसँ कनियेँ हटि एकटा पीरारक गाछ भीतापर रहइ। ओना, ओ गाछ बड़ नमहर तँ नहि, मुदा साहोरे जकाँ पकठाएल रहइ। ओही गाछक निच्चाँमे एक गोरे ठाढ़ रहइ। भैया कहलैन- “हैवएह मलेछ छी। ओकरे महक अबैए! अखने पीड़ारक गाछपर सँ उतरल।”

डरो हुअए मुदा देखैयोक मन हुअए। लोके एतेटा। कहाँ दन लंकाक राक्षस जकाँ मलेछ बड़ी-बड़ी होइए। से कहाँ छइ? ओना, भूत-परेतकेँ नै मानै छी। किएक तँ मनुक्खक आत्मा पंचतत्त्वमे विलीन भऽ जाइ छै आ शरीरकेँ या तँ जरा देल जाइ छै वा माटिक भीतर आकि बाहर किड़ी-मकौड़ी, चिड़ै-चुनमुनी खा लइए। तखन भूत जन्मत कथीक। दुनू भाँइ हिआसि-हिआसि ओकरा देखए लगलौं। मनमे उठल- लोक रहैत तँ दोसरो संगी रहितै। से कहाँ छइ? भूत-परेत तँ असगरो रहैए। ओकरा कि कोनो चीजक डर होइ छइ। मुदा ओ मोइन दिस बगुला जकाँ धियान लगौने। सहसा ओ मोइनकेँ गोड़ लागि पानिमे पैस गेल। रस्सीक एकटा भीड़ी डाँड़मे बन्हने आ हाथमे मोटका तारक काँकोर रहइ। रस्सीक एकओर गाछमे बान्हल छेलइ। मोइनमे डुमल। अनासुरती मनमे उठल जे भरिसक अहिना लंकाक मोती बाहर करैबला पनिडुब्बा, उत्तर सागरक सील ह्वेल आ बालरसक शिकारी जकाँ ईहो पानिक शिकारी छी।

किछु क्षणमे ‘उक्-उक्’क आवाज उठलै आ ओ लपैक कऽ डारि पकैड़ ऊपर आबि गेल। ऊपर आबि दोहरा कऽ गोड़ लगलक। ताबे बिसवास भऽ गेल जे ओ आदमीए छी मलेछ नहि। मुदा एतेक गन्हकै कथी छइ! पातर साँस बना लगमे गेलौं तँ देखलिऐ जे ओ आदमी दुनू बाँहिमे गोहियेक खलड़ीक खोल बना पहिरने अछि। जाड़े थरथराइए! बेर-बेर

हाँफी होइ छइ। जेना थाकल हुअए।

"ओइ ओ! ओइ ओ"क आवाज तीन-चारि बेर लगौलक। आवाज सुनि लगले बीस-पच्चीस गोरे जमा भऽ गेल। जेना लगेक बोन-झाड़मे सभ नुकाएल रहल रहइ। जमा होइते सभ रस्सा पकैड़ खिंचए लगल आ बाजए लगल-

"ले जवान!"

"हइसा।"

"आगू बढ़ैत!"

"हइसा।"

रस्सा-कस्सी शुरू भेल। मोइनमे जेना बिहाड़ि आबि गेल तहिना महजाल लगैबते माछ जकाँ सभटा तरपए लगल।

करीब डेढ़-दू घन्टा रस्सा-कस्सी चलल। कखनो ऊपर दिस खिंचाइ तँ कखनो मोइन दिस। मोइन दिस खिंचाइते भड़भड़ा कऽ सभ खसि पड़इ।

करीब दस-एगारह हाथक गोहि ऊपर भेल। ऊपर होइत तीन-चारिठाम बाँसक टोन दऽ चरि-चरि-पँच-पँच आदमी बैस गेल। गोहिक ठोंठमे रस्सा कसाएल रहइ! तरूआरि जकाँ एकटा तेजगर हथियारसँ एक गोरे हाँइ-हाँइ कऽ चीर देलक। मुदा अखनो धरि सभ दबनहि रहल। किछु कालक पछाइत परान छुटि गेलइ। परान छुटिते बाँसक टोन हटा गोहिकेँ काटए लगल। काज अगुआएल देखि लग जा पुछलिऐ-

"केना-केना गोहि पकड़ै छहक?"

अनभुआर बुझि ओ आदमी हाथक इशारासँ गाछक छाहैरमे चलैक इशारा केलक। गाछक छाहैरमे बैसते हमर नाओं पुछलक कहलिऐ, हमहूँ पुछलिऐ तँ बाजल-

"भोला तीयर।"

'भोला तीयर' कहि गोहि केना पकड़ै छै से कहए लागल-

"पानिमे पैस गोहि लग जाइ छिऐ। नमती अन्दाजि कऽ ओकर

नाँगैरसँ बँचैत अपन केहुनी आगू केने रहलौं। आँखि ने तँ मुँह बौने रहल। जँ मुँह बौने रहल तँ हाँइ-हाँइ कऽ लोहाक काँकोर मुँहमे दऽ दइ छिऐ। लोकक देहक गन्ह गोहिकेँ मतिसून बना दइ छइ। खाली नाँगैरसँ अपन बँचाउ केने रहै छी। ओना, सभ कमला माइक परतापसँ होइए, लोक बुत्ते थोड़े हएत।"

हम पुछलिऐ- "एकरा की करबै?"

भोला तीयर बाजल-

"मौसु खेबै आ खलड़ी बेचबै।"

सुनि गुम्म भऽ गेलौं। देशक दृश्य आँखिपर लटैक गेल। देशमे कियो भरि दिन भोग करै पाछू बेहाल अछि, तँ कियो जानक कीमतपर दुरगन्ध मौसुक पाछू बेहाल अछि। हाय रे हाय..!

हमरा गुम्म देखि ओ बाजल- "कोन गाँ रहै छी?"

कहलिऐ- "बेला रहै छी।"

कनी मोन पाड़ि पुन: पुछलक-

"रौदी तीयरकेँ चिन्है छिऐ?"

कहलिऐ-

"ममियौत भाइक गामक लोककेँ किए ने चिन्हबै। गाम की कोनो शहर-बजार छी जे अपनो समांग देखि कऽ मुँह घुमा लेत।"

"ओ साढ़ू छिआ।"

"भैयारीए जकाँ अछि।"

भैयारी नाओं सुनि बाजल- "तब केना जाए देब। गरीब छी तँए इज्जत नै अछि। एहेन शिकार केलौं आ अहाँ चलि जाएब। साढ़ू की कहता। हुनका पता लगतैन तँ नै कहता जे खाइ डरे समाजसँ मुँह चोरबै छी। एकर मौसु बड़ सुअदगर होइए, जहिना अण्डाएल रोहू, तेलाएल खस्सी होइए तहिना।"

"मन तँ होइए, मुदा कुसेसरक घी संगेमे अछि। ओत्तै जाइ छी।"

"तँ की हेतै काल्हि चलि जाएब।"

मने-मन डरो हुअए। तेतबेमे एक गोरे आबि कहलकै-

“भोला कक्का, पेटसँ चानीक हँसुली आ पइत निकलल।”

मुदा भोला लेल धैनसन। जेना कोनो नव बात नहि। मुदा मन मानलक जे भरिसक लोककेँ गिरने अछि। हमरा मुहसँ अनासुरती निकलल- “आब की करबै, एकरा?”

“मौसु बना, सोना कमला माइक पवित्र पानिमे धोइ लऽ जाएब। अमैनियासँ साँझू पहर रान्हब। झालि-मिरदंग बजा कमला माइकेँ मौसु-भात-परसादी चढ़ाएब। सौंसे टोलक बाले-बच्चे मिलि-जुलि कऽ खाएब।”

हम पुछलिऐ-

“आ चमड़ाकेँ?”

कहलक- “सुखा कऽ रखि लेब। जखन बेसी भऽ जाएत तखन वेपारीकेँ खबैर देबइ। गाड़ी नेने औत, गिनती कऽ कऽ सभटा कीनि लेत।”

ओहो चलि गेल आ हमहूँ दुनू भाँइ नाहपर चढ़ि विदा भेलौं।



शब्द संख्या: 2152

मातृभूमि

जिनगीक अन्तिम चरणमे आइ अपन मातृभूमिक दर्शन भेल। ओ भूमि जैठामसँ माए सदिछन नजैर उठा-उठा देखैत रहैत, ओ प्यारी, सिनेही, प्रेमी, जीवन दायिनी, जीवन रक्छिनी भूमि, मातृभूमि। दर्शन पबिते कमल मन कलैप उठल मुदा असीम उत्साहक संग उमंग संचारित भेल। काल्हि धरिक जिनगी आँखिसँ छिपए लगल, ओझल हुअ लगल, मुँह नुकबए लगल। जइ दिन अपन जीवन दायिनी भूमिसँ विदा हुअ लगल रही, पूर्ण जुबा रही। नस-नसमे नव खूनक संचार होइत रहए। समुद्री जुआर जकाँ जुआनी उठैत रहए। आशा-अभिलाषाक संग पकड़ैले उत्साहित रहए। बाट नै भेटने मातृभूमिक दर्शन लाखो कोस दूर दुर्गमे छिपल रहए। मुदा दर्शन पबिते सत्-चित्त-आनन्दसँ खेलैत देख, नमन केलिऐन।

डॉक्टरीक डिग्री प्राप्त करिते बिआह भेल। नीक गाम, नीक कन्याँ, नीक कुल-मूलक संग नीक दहेजो भेटल। केना नै भेटैत, जइ डिग्रीक मांग देश-विदेशमे अछि ओइमे बेकारी केतए-सँ औत। मुदा इंजीनियर जकाँ तँ नहि, जे डिग्री पेलोपर काज नहि! तइले तँ साधनक जरूरत अछि से अछि केतए?

जुआनीक उमंग उठिते गेल। संयोगो नीक रहल जे बाइस बर्खक अवस्थामे ओइ फ्रान्समे जइमे महान्-महान् दार्शनिक, तत्त्व-चिन्तक वैज्ञानिक, कलाकार, साहित्यकार, देशभक्त जन्म नेने छैथ, काज करैक अवसर भेटल। रंगीनी दुनियाँक स्वर्ग, जेहेन ओतए सड़क तेहेन एतए घर नहि। बिसैर गेलौं अपन भूमि, अपन मातृभूमि। ओना, सोलहन्नी बिसैर नै गेल रही, मुदा विचारक आलमारीक पोथीक जाकमे, तर जरूर पड़ि गेलैं। अखनो मोन अछि, गामक विद्यालयक देश वन्दना। हृदयमे नइ पहुँचल छल गंगा सन पवित्र जलधाराक सरिता, नै जनै छेलौं माटिक सुगन्ध आ गाछी-बिरछीक फल-फूलक महमही...। अनुकूल हवा पाबि मन मोहित

भऽ गेल। जी तोड़ि जिनगीक पाछू पड़ि गेलौं। कर्मेसँ जिनगी तँ हमरा किए नहि। नीक स्तरक परिवार बनेलौं, नीक बैंक बैलेन्स अछि। अपनोसँ बेसी खुशी परिवारक सभ रहै छैथ। कारणो स्पष्ट अछि, बाल-बच्चाक जन्मे भेल, पत्नी अनके घरमे रहैवाली। मुदा आइ मन बेकल किए लगैए। वौराइ किए अछि? एकाग्रचित्त सभ दिन रहलौं तखन बान्हल मोन पड़ाए केतए चाहैए? की 'आएल पानि गेल पानि बाटे-बिलाएल पानि!' जइ मातृभूमिक गुणगान बच्चा, वृद्ध सभ करै छैथ, तैठाम केतए छी? बढ़ैत-बढ़ैत जहिना धन बढ़ैए, गाछ-बिरीछ बढ़ैए तहिना ने विचारो बढ़ैए। मुदा एना किए भऽ रहल अछि जे आब ऐठाम, माने पेरिसमे नै रहि अपन मातृभूमिक रजकण बनब?

जहिना बाइस बर्खक वयसमे अपन गाम, समाज, भूमि-मातृभूमि छोड़ि पेरिस आएल रही, तहिना आब सभ किछु छोड़ि अपन प्रेमी मातृभूमि, सिनेही मातृभूमिक कोरामे विश्राम करब।

मुदा नहियोँ बुझैत रही तैयौ अबैकाल जहिना सभसँ असीरवाद लऽ नेने रही तहिना तँ एतौसँ असीरवाद लाइए लिअ पड़त। जरूर लिअ पड़त मुदा केकरासँ? केकरोसँ नहि! एतए ने अपन गंगा-यमुनाक जलधारा, ने हिमालय-कैलाश सन पहाड़, ने गंगा-ब्रह्मपुत्र सन धरती आ ने समुद्र सदृश हृदय अछि। जहिना पत्नीक संग आएल रही तहिना जाएब। जँ ओ नै जाथि तखन? ओ नै जाए चाहती तेकर कारणो तँ कहती? कहलयैन- "आब ऐठाम नै रहब।"

पत्नी बजली- "तखन?"

कहलयैन- "अपन मातृभूमिक दर्शन भऽ गेल, ओतए जाएब।"

पत्नी उत्तर देलैन-

"सभ अपन-अपन मालिक होइए। जँ अहाँ जाएब तँ जाउ।"

पुछलयैन- "अहाँ?"

बजली- "अपन कारोबार अछि। बेटा-पुतोहु दुनू फ्रान्सक भऽ गेल। दुनियाँक स्वर्गमे रहि रहल छी। तखन की?"

मोन पड़ल ओ दिन जइ दिन जिनगीक हिसाब जोड़ि आएल रही।

पत्नी संगे छेली। मुदा आइ? जुग बीति गेल। जिनका सभसँ असीरवाद लऽ आएल रही भरिसक मरि-हरि गेल हेता, गेलापर के हृदय लगौता! तखन? तखन की? किछु ने! मुदा जाधैर पहुँचब ताधैरक तँ उपाय चाही। विदा भऽ गेलौं।

एक समुद्रसँ मिलैत दोसर समुद्रक विशाल जलराशिक बीच जहाजसँ मद्रास पहुँचलौं। मद्रासक बन्दरगाहमे उतैर अपन धरती, अपन देश, अपन मातृभूमिकेँ हृदयसँ नमन केलिऐन। मोन पड़ल रामेश्वरम्। जखन मद्रास आबि गेल छी तखन बिनु दर्शने जाएब बचपना...। विदा भेलौं।

धरती-समुद्रक बीच बनल रामेश्वरमक मन्दिर। एक दिस विशाल जल-राशिक समुद्र तँ दोसर दिस खिलैत-इठलाइत मातृभूमि आ ऊपर शून्य अकास। समुद्रेक लहैरमे स्नान कऽ दर्शन केलौं। मन्दिरसँ निकैलते खौजरीपर गबैत एकटा साधुक मुहेँ सुनलौं, "अवगुण चित्त न धरो।" जेना भूखकेँ अन्न, पियासकेँ पानि खिहारि दैत, तहिना मनमे भेल। जलखै कऽ गाम लेल गाड़ी पकड़लौं।

जंगल, पहाड़, नदी, मैदानकेँ चिरैत गाड़ी गाम लग पहुँचल। जे गाम कहियो नन्दन वन सदृश सजल छल- लहलहाइत खेत, रस्ता-पेरा विद्यालयसँ सजल छल, धारक कटावसँ बीरान बनि गेल अछि। ने एकोटा सतघरिया पोखैर बँचल अछि आ ने पीपरक गाछक निच्चाँ विद्यालय। घराड़ी, खेत बनि गेल अछि आ पोखैर-झाँखैर घराड़ी। मुदा तँए की, ने गामक परिवार कमल, ने लोक आ ने गामक नाओं। गामक दछिनवरिया सीमापर पहुँचते एकटा नवयुवककेँ पुछलयैन-

"बाउ, की नाओं छी, अही गाम रहै छी?"

नवयुवक बाजल- "हँ। रमेश नाम छी।"

पुछलयैन-

"गामक की हाल-चाल अछि?"

प्रश्न सुनि रमेश ठमैक गेल। किए नै ठमकैत। नमती भलेँ नै बढ़ल हुअए मुदा रंग आ चौराइ तँ जरूर चतरिये गेल अछि। भरिसक चेहरा देखि

डरा गेल अछि। मुदा डर तँ ओतए बढ़ैए जेतए डरनिहारकेँ आरो डेराएल जाइत। से तँ नइ अछि। मधुआएल मन मुस्कियाइत मुँह खोलि निकलल-

"बौआ, चालीस बर्ख पूर्व अही माटि-पानिक बीच डॉक्टर बनि विदेश गेलौं...।"

मधुर बोली सुनि रमेश बाजल- "गाममे के सभ छैथ?"

कहलिऐ- "कियो नहि। जेहो हेता, हुनको छोड़ि देलिऐन। जखन छोड़ि देलिऐन तँ वएह किए पकड़ता।"

रमेश पुछलक- "रहबै केतए..?"

बजलौं-

"सएह गुनधुनमे छी।"

रमेश कहलक- "हम तँ महींसवारि करै छी, आन किछु जनै नै छी। चलु वस्तीपर पहुँचा दइ छी।"

वस्तीपर पहुँचा रमेश घुमि गेल। हम ठमैक गेलौं। तैबीच नजैर पड़िते पूबारि भागक घरवारी ओत्तैसँ पुछलैन-

"केतए जाएब?"

कहलयैन- "ब्रह्मपुर।"

घरवारी कहलैन- "ब्रह्मपुर तँ यएह छी। एमहर आउ।"

मनमे सबुर भेल। हूबा बढ़ल। अपन गामक चालि बढ़ल। लफैर कऽ दरबज्जापर पहुँचलौं। घरवारी कहलैन-

"थाकल-ठेहियाएल आएल छी, पहिने पएर धोउ। चाह बनौने अबै छी, ताबत कपड़ा बदैल अराम करू। आइ भरिक तँ अभ्यागत भेलौं, काल्हिक विचार काल्हि करब।"

कहि आँगन जा चाह अनलकैन। दुनू गोरे चाह पीबैत रही, कहलयैन- "हमहूँ अही गामक वासी छी। नोकरी करए बाहर गेल रही। अपन घराड़ियो अछि आ दस बीघा चासो।"

ओ बजला- "हमहूँ आने गामक वासी छी। नानाक दोखतरीपर छी। तँए, ने गामक आँट-पेट जनै छी आ ने पुरना लोक सभकेँ जनै छिऐन।"

कहलयैन- “हम डॉक्टर छी।”

ओ बजला-

“तखन तँ गामक देवते भेलौं। जाबे अपन ठौर नै बनि जाइए ताबे एतै रहू। अतिथि-अभ्यागतकेँ खुऔने आरो बढ़ै छइ।”

ठौर पाबि मन खुशी भेल। जीबैक आशा देखि पत्नीकेँ फोन लगेलौं-

“हेलो..”

पत्नी उत्तर देलैन-

“हँ, हँ, हेलो।”

कहलयैन-

“गामसँ बजै छी। पुन: घुमि कऽ पेरिस नै आएब। अहूँ जँ आबए चाही, तँ चलि आउ।”

पत्नी कहलैन- “चूक भेल जे संगे नै गेलौं। जाधैर अहाँ छेलौं ताधरिक आ अखनमे जीवन-मृत्युक अन्तर आबि गेल अछि।”

कहलयैन- “जखने मन हुअए तखने चलि आएब।”

ओ बजली-

“फोन रखै छी..?”



शब्द संख्या: 1048

भबडाह

चहकैत चिड़ै सबहक चलमली कानमे पड़िते नित्यानन्द कक्काक नीन छिटैक गेलैन। कोनो काज करैसँ पहिने तर्क-वितर्क ओहने महत रखैत जेहेन निरजन आँखिए दिनमे चलब होइत। ओछाइनेपर पड़ल-पड़ल नजैर आजुक समैपर गेलैन। काल्हि शनि, राखी पाबैन छी। परसू रबि, विदेश्वर स्थानमे ठसम-ठस मेला हएत। हएबो उचित, एक तँ बैद्यनाथ बाबा सौनक पूर्णिमा विदेश्वरमे बितबै छैथ, दोसर कमलो उमड़ल अछि, एक संग दुनू काज...।

भैयारी रहितो जहिना भविसद्रष्टा युगद्रष्टासँ ऊपरक सीढ़ी होइत, तहिना ने औझुकेपर काल्हि ठाढ़ होएत। काल्हुक सुरूज केहेन उगत ई तँ प्रश्न अछिए। चारिम दिन पनरह अगस्त छी, भारतक स्वतंत्रताक चौसैठम वर्षगाँठ। साठि बर्खक उपरान्त अनाड़ियो-धुनाड़ी लोक वरिष्ठ नागरिकक उपहार पबैत तेहेन ठाम स्वतंत्रता की आ देश केतए! मुदा लगले मन घुमि गाम दिस बढ़लैन। हिन्दु-मुसलमानक गाम। एक पनरहियासँ जहिना हिन्दु राधा-कृष्णक झूलासँ लऽ कऽ भोला बाबाक जलढरीमे व्यस्त तहिना मुसलमानो दस दिन ऊपरेसँ रोजा-नवाजमे व्यस्त...। एको पाइ लोक नै बँचल जे धर्मक काजमे नै लागल हुअए। सभ धर्मक काजमे हृदयसँ जुटल...। जखन सोलहन्नी लोक पवित्र मने धर्मक काजमे जुटले छैथ तखन निसचित गामक कल्याण हेबे करत..!

प्रेमिकाक आगू जहिना प्रेमी दुनियाँकेँ निच्चाँ देखि ऊपर भ्रमण करैत तहिना नित्यानन्द कक्काक मन कल्याणक संग टहलए लगलैन। उत्साह जगलैन! फुरफुरा कऽ ओछाइनसँ उठि कलपर जा माटिये-सँ चारि घूसा दाँतमे लगा, आँगुरेक जीभिया कऽ हाँइ-हाँइ चारि कुर्ड़ा मारि, चारि घोंट पानियोँ पीब लेलैन। आ आँखि उठा बाड़ी दिस तकला तँ पत्नीकेँ मचानपर चठैल तोड़ैत देखलैन। आँखि उतारि गाम दिस विदा भेला।

दरबज्जापर सँ आगू बढ़िते हियौलैन तँ बुझि पड़लैन जे घर-दुआर

छोड़ि लोक चौके दिस आबि गेल हेता, तँए नीक हएत जे चौके दिस जाइ। यएह सोचि नित्यानन्द काका आगू बढ़ैक विचार केलैन। डेग उठिते मन सिहरलैन। भाए-बहिनक ओहन पर्व काल्हि छी जइमे दुनूक प्रगाढ़ प्रेमक सिनेह-सिक्त जलक उदय हएत। आशाक संग जिनगीक बिसवासो जगलैन। डेग बढ़ौलैन।

पनरह-बीसटा डम्हाएल चठैल खोंइछामे नेने सुचिता काकी मुस्की दैत, गदगद होइत जे महिना दिन तँ चलबे करत, तेकर पछाइत ने दौंजी हएत। सालमे जँ एक्को पनरहिया चठैलक तरकारी खा लेब तँ की चीनियाँ बिमारी हएत। लफड़ल आबि पछबरिया ओसारपर सूपमे चठैल उझैल पुतोहुकेँ पुछलखिन-

"कनियाँ, दोकानोक काज अछि?"

डिब्बा-डुब्बी हड़बड़बैत पुतोहु कहलकैन-

"हँ।"

"की सभ लेब?"

"नोन, हरदी।"

पुतोहुक साँस सुचिता काकीकेँ किछु गर्म बुझि पड़लैन। मुदा तेकरा अनठा देलखिन। मनमे उठि गेलैन- नोनक पौकेट दस रुपैआमे देत, हरदियो की कोनो सस्ता अछि। ओकरो पौकेट दस रुपैआसँ कममे कहाँ दइ छइ। हाथमे तँ पनरहेटा रुपैआ अछि। केना दुनू चीज लेब? मन फुनफुनेलैन। बड़बड़ाए लगली- "केहेन बढ़ियाँ खुदरा-खुदरी नून बिकाइ छेलै, जेतबे जेकरा सकरता रहै छेलै से तेतबे लइ छेलए। आब तँ तेहेन पोलिथिनक पौकेटमे रहैए जे कमो रहत तँ बनियाँ कहत जे घमि गेल हएत। खाएर एक चुटकी नूने ने कम देत। एक-ने-एक दिन सैरियत दिअ पड़तै।"

जहिना बच्चा लगले कनैए, लगले हँसैए तहिना सुचिता काकीकेँ मन लहरए लगलैन। लहरैत मन कहलकैन- जे नून हाथीकेँ गला दइए ओ प्लास्टिककेँ की नै गलबैत हएत। आब की कोनो नून खाइ छी आकि प्लास्टिकक रस पीबै छी। हे भगवान! तोरे हाथ-बाठ छह। जेते दिन जीबए

दैक हुअ से जीबह दिहह, नै जे लऽ जाइक हुअ तँ लऽ जहिहह। कहू जे प्लास्टिकेक कलमे पानि पीबै छी, दोकानक चीज-बौस अनै छी, खाइ-पीबैक समान रखै छी। जूत्ता-चप्पल, कपड़ा-लत्ता पहिरै छी...।

मुदा लगले मन पुतोहु दिस घुमलैन। कहू जे चारिटा गाछ घरोक दावापर हरदी रोपि लेब तँ साल भरि कीनए पड़त। जाबे माल-जाल नै छेलए ताबे बाड़ी-झाड़ी करै छेलौं। आब तँ मालोक नेकरमसँ नहाइयो-खाइयोक पलखति नै होइत रहैए। कनियाँ सहजे कनियेँ छैथ। कोनो लूरि-ढंग बाप-माए सिखा कऽ पठौलखिन आकि सोल्होअना सासुरे भरोसे छोड़ि देलखिन। मुदा गलती बुड़होक छैन। कोन दुर्मतिया चढ़ि गेलैन जे चरिकोसी पारक पुतोहु उठा अनलैन! एकेटा वस्तुक चरि-चरि, पँच-पँच तरहक विन्यास बनैए, जरूरतक हिसाबसँ रूप बदैल उपयोग होइत। तैकालमे कहती जे खाली अल्लूक, तरुआ, भुजुआ, भुजिया टा बनबैक लूरि अछि..!

अपसोच करैत सुचिता काकी बजली- "जा हे भगवान! जे पुत हरवाहि गेल देव-पितर सभसँ गेल! कोनो मनोरथ रहए देलह! जखन मनोरथे नै तखन सतयुग, त्रेता, द्वापरे की!"

तैबीच मोख लागल ठाढ़ पुतोहु बजली- "आइ शुकरवारी छिऐ। जखन चौक दिस जाइते छैथ तँ अंगुरो आ केरो फलहार-ले नेने अबिहैथ।"

पुतोहुक बात सुनि सुचिता काकी छगुन्तामे पड़ि गेली। मनमे हुअ लगलैन जे एक हजार बात एक्केबेर कहि दिऐन मुदा केतौ-केतौ नहियोँ टोक देब नीक होइत अछि। तँए, किछु बजैसँ काकी परहेज केली। मुदा, जहिना आगिपर चढ़ल पानिक बरतनमे ताउ लगिते तरसँ बुलकारा उठए लगैत तहिना मनमे उठए लगलैन। कहू जे अखन पनपिआइक बेर छै, पहिने तेकर ओरियान कऽ पुरुख-पात्रकेँ खुआएब, अपनो खाएब आकि सौंझुका फलहारक ओरियान करब। बीचमे कलौ सेहो अछिए। भगवानो टेबिये कऽ पुतोहु देलैन। एहेन-एहेन गिरथानि बुते केते दिन घर-परिवार चलत..?

काकीकेँ चुप देखि पुतोहु दोहरबैत बजली- "नइ सुनलखिन। जखन

चौक दिस जेबे करती तँ अंगुरो आ केरो नेनहि अबिहैथ।”

पुतोहुक बात सुनिते काकीक मनमे जेना तरंग उठलैन, तहिना तरैंग कऽ बजली- “अहाँ सभ कोन उपास करै छी जे सहैसँ पहिने फलहारेक ओरियान करए लगै छी। कहुना-कहुना तँ सातटा हरिबासय केने छी। कहाँ कहियो पहिने फलहारेक ओरियान करै छेलौं।”

शब्द-वाण जकाँ सासुक बात पुतोहुक हृदयमे लगलैन। तीर बेधल चिड़ै जकाँ छटपटाइत पुतोहु बजली-

“अपना जे मन फुरै छैन सएह करै छैथ से बड़बढ़ियाँ मुदा हमरा बेरमे भबडाह हुअ लगै छैन!”

‘भबडाह’ सुनि काकियोक मन बेसम्हार भऽ गेलैन। कहलखिन-

“कनियाँ, हम भबडाहि नै छी जे केकरोसँ भबडाह करब। आँखि तकै छी तँए चिन्ता अछि। अखने आँखि मूनि देब, घर सम्हारए पड़त तखन अहूँ यएह बात बुझबै।”

भण्डार कोणक जेठुआ गड़े जकाँ दुनूक बीच रसे-रसे अन्हर-विहाड़ि उठए लगल। कियो पाछू हटैले तैयार नहि। दुनूक सीमा-सरहद टुटि-एकबट्ट भऽ गेल। एक्के-दुइए धियो-पुतो आ जनीजातियो सभ आबए लगली। आँगन भरि गेल।

चौकसँ किछु पाछूए नित्यानन्द काका रहैथ कि मनमे उठलैन, चौरंगी हवा बहैक समय अछि। कखन कोन हवा केमहरसँ उठत आ घर-दुआर खसबैत केमहर मुहेँ चलि जाएत तेकर ठेकान नहि। ठोर बिदैक गेलैन। हुलकी दैत मुस्की बहरेलैन- “एह, अजीब-अजीब करामाती मनुक्खो सभ भऽ गेल। कनियेँ गलती विधातोक भेलैन जे सींग-नाँगैर काटि लेलखिन।”

तहीकाल लॉडस्पीकरक आवाज नित्यानन्द कक्काक कानमे पड़लैन। राधा-कृष्ण मन्दिरपर झूला चलि रहल अछि। आवाज सुनि मोन पसीज गेलैन।

सौन मास। सुहावन। मन भावन। विशाल वसुन्धरा, रंग-रंगक वस्त्र पहिर मधुमय वातावरणक बीच, बिहुँसि रहल अछि। कृष्णक कदम-सँ-

कदम मिलबैत राधा बिहुँसैत झूला झूलए कदमक गाछ दिस जा रहल छैथ। असीम उल्लास। अदम्य साहस दुनूक बीच। कातेसँ गाछमे गोल-गोल, लाल-पीअर झुमका लगल फल-फूलसँ लदल देखि राधा कृष्णकेँ पुछलखिन-

“डोरी लगा डारिमे झूला लगाएब आकि डारियेपर बैस झूलब?”

राधाक प्रश्न सुनि कृष्ण आँखियेक इशारासँ उत्तर देलखिन-

“जेहेन समय तेहेन काज।”

चौकक गनगनाइत आवाज, नित्यानन्द कक्काक धियान अपना दिस खिंचलकैन। तखने एकटा नवयुवककेँ स्कूलमे भेटल बहिनक साइकिलपर जाइत मुहसँ- ‘रेशम की डोर’ गुनगुनाइत सुनलैन।

चिप्पी सजल विदेशी वस्त्रमे डुमल युवक। जहिना दिन-रातिक मध्य जाड़-गरमीक मध्यक संग जिनगियोक मध्य मधुआएल होइत तहिना कक्काक मनमे भेलैन। युवककेँ पुछि देलखिन-

“बाउ, परिवारमे के सभ छैथ?”

युवक कहलकैन-

“बाबा, हिनका सबहक चरणक दयासँ सभ छैथ। माइयो-बाबू आ दूटा बहिनो अछि। एक बहिन सासुर बसैए, जेतए जा रहल छी आ दोसर पढ़ैए। सोलहम बर्ख छिऐ। दू-तीन साल बाद बिआहो करब।”

काका पुछलखिन-

“अपने?”

युवक कहलकैन-

“बाबा, ई देवतुल्य छैथ, झूठ नै बाजब। अपना खेत-पथार नहियेँ जकाँ अछि मुदा खेतबला सभकेँ बाहर गेने बँटाइ खेत पर्याप्त अछि। एक जोड़ा बरद रखने छी। बाबू-माए खेते-पथारमे खटै छैथ, अपने बम्बइमे रहै छी।”

काका पुछलखिन-

“राखी पाबैन तँ काल्हि छिऐ, आइए किए जाइ छी?”

युवक कहलकैन-

“साल भरिपर बम्बइसँ एलौं हेन। एको दिन पहिने जँ बहिनक ऐठाम नै जाएब, से केहेन हएत? भगिनो-भगिनी-ले आ बहिनो-बहनोइ-ले सालो भरिक कपड़ा नेने जाइ छिऐन। काल्हि बेरमे घूमब तखन छोटकी बहिनक हाथे राखी पहिरब। अच्छा अखन जाइ छी बाबा। काल्हि फेर घुमती बेर भेँट करब।”

काका कहलखिन- “काजे जाइ छी। जाउ?”

जेना-जेना ओ युवक साइकिलसँ आगू बढ़ल जाइत तेना-तेना नित्यानन्दो कक्काक मन दौड़ए लगलैन। मनमे एलैन पैछला सालक मोबाइलिक घटना। कनी मन खुशी भेलैन। बुदबुदेलैथ-

“अजीब-अजीब मदारी सभ अछि। गड़ लगा-लगा नचबैए।”

मन रूकलैन। पहिनेसँ ने लोक किए बुझैए जइसँ एहेन-एहेन घटनाकेँ बढ़ैये ने देत। मुदा मन ठमकलैन। घटना भेल। राखी पाबैन दिन, दस बजे रातिमे बम्बैसँ एक गोरेकेँ मोबाइलसँ समाचार आएल जे बौआ सबहक हाथक राखी जल्दी खोलि दियौ नै तँ अनहोनी घटना हएत! एमहर मुहेँ-मुँह समाचार पसरब शुरू भेल, ओमहरसँ मोबाइलिक समाचार दिल्ली, कलकत्ता, बंगलोर इत्यादिसँ अकासमे गनगनाए लगल। हाँइ-हाँइ राखी हाथसँ उतरए लगल। भरि रातिक हलचल दिनक दस बजे धरि चलिते रहल। राति भरिक नीनो दिनेमे वौआ गेल। मुदा दस बजेक पछातिक तीखर रौद पाबि वातावरण शान्त भेल।

नित्यानन्द काकाकेँ मनमे उठलैन बाल-बच्चाक संग माए-बापक सम्बन्ध? ओतए केना मनुक्खक वंश आगू मुहेँ ससरत जेतए माइए-बाप दुश्मन बनि ठाढ़ भऽ रहल अछि? तहूमे जिनगीक अन्तिम बेलामे नहि, उदयक तीनियेँ मासमे हथियार लऽ आगूमे ठाढ़ भऽ जाइत अछि..!

मन तुरछए लगलैन। थूक फेक मन हल्लुक केलैन। मोन पड़लैन भाए-बहिनक ओ पुरान बात। भाए बहिन ऐठाम पहुँचल तँ बहिन भायकेँ कहलकैन- भैया जखन अकासक डगर उत्तरे दछिने हएत तखन आएब। मोन पड़िते उठलैन सालो भरि तँ प्राकृतिक संग खेल होइते रहैए, जिनगीसँ

केतेक लग धरि सम्बन्ध बनि सकैए, तेतबे ने?

जेना मेघौनमे हवाक सिहकी लगने घुसकैत-फुसकैत तहिना नित्यानन्द कक्काक मन घुसकलैन। देखलैन जे चकेबा कोन तरहेँ बहिन समार्कें जरैत वृन्दावनमे संग दऽ रहल छैथ। जे मनुक्ख चित्ती-कौड़ी फेक नागसँ दोस्ती करैत बाघ, सिंह आ भाउल सहित गाए, महींस तथा बकरीक संग मुनियासँ हंस धरि प्रेमसँ एकठाम रहैत ओकरा मनुक्खसँ एते घृणा किएक छइ। जहिना धी-जमाए-भगिना लेल कहल जाइत, ओइमे कियो अपन नहि। तहिना भाए-बहिनकेँ महींसक सींग सदृश कहल जाइत। एक जातिक संहार कऽ बगीचाक काँट हटाएब कहल जाइत अछि। मन तरैंग गेलैन।

तखने एकटा बेदरा आबि कहलकैन- “बाबा, अँगनामे बिर्ड़ो उठल अछि।”

बेदरासँ किछु पुछब नित्यानन्द काका उचित नै बुझलैन। उड़ैत अकासमे कौआ अपन टाँहि थोड़े दोहरबैए। ओ तँ समैयक घड़ी छी।..मन आँगन पहुँचलैन। पत्नीपर नजैर पड़िते विचार उठलैन। झगड़ी आकि रगड़ी ओहो छैथ। बुढ़ भेलौं, एतबो होश नै रहै छैन। होशो केना रहतैन जइ परिवारकेँ फुलवारी सदृश जिनगीक कमाइसँ बनौने छैथ तेकरा जँ कियो उजाड़ए चाहत से केना उजाड़ए देथिन। मुदा रगड़ी रहितो एकटा गुण तँ छैन्हे जे ने रग्गड़ ठाढ़ करैमे देरी लगै छैन आ ने सीढ़ीक भीतर फरियबैमे।

..नजैर पुतोहु दिस बढ़लैन अजीब-अजीब लोको सभ फड़ि गेल। कहत जुगे बदैल गेल। मुदा की जुग बदलल से कहबे ने करत आ कहत जे जुगे बदैल गेल! तहमे तेहेनठाम देखाएत जे अनेरे देहमे झड़क उठत। सासुकेँ उनटा-पुनटा पुतोहु कहथिन तैकाल जुग बदैल गेल। मुदा सासुक लगौल फुलवारीकेँ केते समृद्ध बनेलौं तइ काल..? जहिना अपन बाप-माए लगसँ कानि कऽ एलौं तहिना अहू परिवारकेँ कनाएब! अनठा कऽ नित्यानन्द काका चौकपर पहुँचला।

चौकपर पहुँचते चाहक दोकानमे गदमिशान होइत देखलैन। चाह पीबनिहार अपना धुनिमे आ दोकानदार अपन धुनिमे। चाहबला आगि-

अगोंरा होइत जे सभटा फोकटिया आबि बैस पूजी बुड़बै पाछू अछि। गिलासपर गिलास चाह ढारने जाइए आ पाइक कोनो पते नहि!

मुदा खुलि कऽ ऐ दुआरे नै बजैत जे अखन दोकानपर सँ थोड़े चलि गेल जे बुझबै पाइ बुड़ि गेल। तँए दम कसि लिअए। ओना, भीतर शंका पुन: उठि जाइ। चेहरा मिलानी करै तँ वएह चेहरा बुझि पड़ै जे अदहासँ बेसी ओहन अछि जे सौ-पचास पीब-पीब कऽ दोसर दोकान पकैड़ नेने अछि। किछु जे अछि ओकरासँ कोनो नै कोनो काज हेबे करत। तँए पहिलुके उपकार ने पछाइत जुआ कऽ नमहर भऽ जाइए। तँए मुस्की दऽ दोकानदार मन माड़ि लिअए।

मुदा चाह पीबनिहारक उत्साह भिन्ने रहए तँए चाहबला दिस कियो तकबे ने करैत। खाली एतबे कहैत जे दूध जरा कऽ स्पेशल बनाएब। गप्पोक धारा एहेन रहै जे जहिना जुलुशमे लोक पैरमे लगैत गन्दगीकेँ रस्तापर आरो चारि बेर रगैड़ आगू बढ़ैए तहिना। एक संग अनेको पर्व। लोक भलेँ लोकसँ जेते हटि जाए, मुदा पाबैन थोड़े हटत। कम-बेसी भलेँ भऽ जाए। अजीब-सिनेहक संग राधा-कृष्ण बाँहि-मे-बाँहि जोड़ि झूला झूलै छैथ। भाए-बहिनक बीच एहेन पर्व दोसर कहाँ अछि। भरदुतिया तँ भरदुतिये छी। कमलाक जल सेहो बैद्यनाथ बाबाकेँ विदेश्वरमे भेटबे करतैन। अजीब उमंग-उत्साहसँ हँसिते-हँसिते महिना दिनक संकल्प निमाहि लइ छैथ।

नित्यानन्द काकापर नजैर पड़िते प्रेम कुमार चाहेक दोकानपर सँ कहलकैन- "काका, एतै आउ। सभकेँ-सभ छैथ।"

मुस्की दैत नित्यानन्द काका कहलखिन- "खाली लोकेटा नइ ने, फगुआक रमझौआ होइए। अइमे की सुनब आ की बाजब। तइसँ नीक बाहरेमे आबह। चौसैठम स्वतंत्रता दिवसक बरखी छी, नइ पान तँ पानक डण्टियो लऽ कऽ सुआगत करबे करबैन।"

तहीकाल अँगनाक समाचार नेने बेटा पहुँचलैन। हाथसँ आँखि मलि-मलि बल्लौसँ ललिया-करिया नोर बहबए चाहैत देखि नित्यानन्द काका बेटाकेँ बजैसँ पहिनहि पुछि देलखिन- "किए मन मन्हुआएल

छह?”

“दुनू गोरे अँगनामे झगड़ा करै छैथ।”

“झगड़ा शान्त करितह आकि कहए एलह?”

“हमर बात के सुनत?”

मुस्की दैत नित्यानन्द काका घर दिस विदा भेला। जेते घर लग आएल जानि तेते झगड़ो नरमाएल जाइत रहइ। सुनै दुआरे कक्को छोटकी डेग बनबैत रहैथ। मुदा जहिना-जहिना डेग छोट होइत जानि तहिना-तहिना अछियाक मुरदा जकाँ झगड़ा शान्त भऽ गेल। दुआरपर पहुँचते नित्यानन्द काका देखलैन जे जहिना भारी काज केलापर वा रौदाएल एलापर छाहैरमे ठाढ़ भऽ नमहर-नमहर साँस लैत तहिना अँगना-दलानक कोनचर लग ठाढ़ भऽ पत्नी साँस छोड़ि रहल छैथ।

आगू आँखि उठा देखलैन तँ पुतोहु थारी-लोटा मँजैबला ओचोना लग ठंठाइते साँस छोड़ि रहल छैथ। बजैत कियो नहि।

जहिना मुकदमाक खलीफा मुद्दालह बनि लड़ैमे प्रतिष्ठा बुझैत, तहिना दुनू गोरेकेँ देखि नित्यानन्द कक्काक मनमे उठलैन केकरो प्रतिष्ठाक सीमामे नइ जेबाक चाहिऐ।



शब्द संख्या: 2105

परिवारक प्रतिष्ठा

समाजमे सभकेँ छगुन्ता लगैत जे होइत भिनसर सौंसे गाम हड़-हड़-खट-खट शुरू भऽ जाइए मुदा कमला कक्काक परिवारमे एको दिन नै सुनै छी, तेकर की कारण? जहिना रंग-बिरंगक लोक समाजमे रहैए तहिना ने रंग-बिरंगक रोगो-बियाधि आ क्रियो-कलाप रहैए। मुदा लंकाक विभीषण जकाँ यमुना काकी-कमला कक्काक परिवार केहेन हलसैत-फुलसैत कलशै छैन..!

बहुत आँट-पेटक परिवार कमला कक्काक नहि। आने परिवार जकाँ अपन दसे कट्ठा जमीन। मुदा पनरह कट्ठा बँटाइयो करै छैथ। जइसँ सहि-मरि कहुना साल लगि जाइ छैन। ओना, आन परिवार जकाँ धिया-पुता झमटगर नहि, सिरिफ चारिए गोरेक परिवार छैन। दू परानी अपने आ बेटा-पुतोहु। हँ! मुदा डोरामे गाँथि जहिना फूलक माला बनैत तहिना परिवारोक डोरा सक्कत छैन। अपन-अपन सीमाक बीच चारू गोरे कोल्हुक बरद जकाँ चौबीसो घन्टा चलैत रहै छैथ। ओना, गामक अदहासँ बेसी परिवारक समांग गाम-सँ-बाहर धरि रहि परिवार चलबैत, मुदा कमला काक्काक परिवारमे के बाहर जाएत तेकर अँटाबेशे ने होइत। कमला कक्काक मनमे रहैन जे एक्केटा समांग अछि जँ ओहो बाहरे चलि जाएत तँ बेर-कुबेरमे एक लोटा पानियोँ के देत? मौका-कुमौकामे कोटो-कचहरी के करत? तेतबे नहि, जँ कहीं किष्कारक समय बेमारे पड़ि जाएब तँ खेती-पथारी के सम्हारत? जनीजाति तँ जनीजातिये होइत, खेत केना जोताएत? आ जँ खेते नै जोताएत तँ खेती केना हएत? जँ खेतीए नै हएत तँ परिवार केना चलत? अपन की आब ओ समरथाइ रहल जे बलधकेलो किछु कऽ लेब...।

जहिना कमला कक्काक मनमे अपन काजक ओझरी लगैत रहैन तहिना यमुनो काकीक मन ओझराएले रहैन। मनमे होनि जे मुँह झाड़ि पतिकेँ किछु तँ नहियेँ कहि सकै छिऐन मुदा पुतोहु लगा बेटाकेँ तँ कहि

सकै छी। जखने बेटाकेँ कहबै तखने ओहो ने सुनता। कोनो की कानमे ठेकी थोड़े रहतैन।

रधवाक मनमे तेसरे बात उठइ जे गिरहस्तीक काज बेसी वरसातमे होइए। मिरगिसरा-अद्राक पानि तेहेन होइए जे हाथ-पएर सड़ा दइए। एक तँ हाथ-पएर घबाह भऽ जाइए तैपर सँ काजो बढ़ि जाइए। तइसँ नीक जे परदेशे खटब। मुदा विचार लगले रधवाक मनकेँ बदैल दइ। बरहम स्थानक भागवत कथाक एकटा बात मोन पड़ि जाइ।

ओना, सुनने रहए पनरहो दिन मुदा एक्केटा बात मन रहलै। ओ ई जे 'माए-बापक सेवा करब बेटाक सभसँ पैघ धर्म छी।'

पुतोहु लेल धैनसन। 'कोउ नृप हौउ हमे का हानी।' एकटा गारजनकेँ के कहए जे तीन-तीनटा गारजनक तरमे छी। जेहने दिन तेहने राति..!

पिताक पीठपोहू बनि रधवा कमला कक्काक संग खेती-बाड़ीमे पूरैत। एते बात रधवा बुझि गेल रहए जे खेतीक भरिगर काजमे हरवाहि, कोदरवाहि आ करीनवाहि अछि। ओना, धनरोपनीमे सेहो डाँड़ दुखाइ छै तँए पिताकेँ ऐ सभ काजसँ फारकती दऽ देने रहैन। गिरहस्तियो तँ अमरलत्ती जकाँ सघन होइए। काजक इत्ता नहि। कलमसँ कोदारि धरिक काज। जेते समय तेते काज पसारि लिअ। तेतबे नहि, किछु काज एहनो होइत जइमे कम तरद्दुत होइत आ किछु एहनो होइत जे तीन-तीन बेर केलोपर गड़बड़ाएले रहैत। तैपर सँ मेठनियोँ बेसी।

भरिगर काज रधवा सम्हारियो लैत रहैन तैयो कमला काकाकेँ सोहरी लागल काज रहबे करैन। जेते हाथ-पैरसँ करैथ तइसँ कम बुधियोक नहि। महिना, ग्रह, नक्षत्रक काज सेहो रहबे करैन। कोन नक्षत्रक धानक बीआ निरोग होइए आ कोनमे पाड़ने कललग्गू भऽ जाएत, कोन नक्षत्रमे कोन चीजक बीआ पाड़ल जाएत आ कोन चीज रोपल जाएत इत्यादि, बारहो मासक हिसाब कण्ठस्थ रखने छैथ। जेकर खगता अखन धरि रधवाकेँ भेबे ने कएल। जेतेकाल काजमे लगल रहैत तेतबे बुझैत। बाँकी समय ने मारी माछ ने उपछी खत्ता। बिना धैन-फिकिरक वैरागी जकाँ चैनसँ रहैत। कमेनाइ-खेनाइ आ सुतनाइक जिनगी। तीनूक गतियो

एकरंगाहे...।

आँगनसँ बाहरक काज जहिना दुनू बापूत कमला कक्काक बीच अड़ियाएल चलैत रहैन तहिना अँगनाक भीतरक काज दुनू सासु-पुतोहुक बीच चलैत रहैन। चूल्हि-चीनमार बहारब-नीपब, घर-अँगना बहारबसँ लऽ कऽ थारी-लोटा धूअब, भनसा-भात करब धरिक भार पुतोहुक ऊपर। जे पुतोहुओ आ साउसो बुझैत, तँए ने केकरो चड़ियबैक जरूरत आ ने कियो अढ़बैक आशा करैत। तहिना यमुनो काकीक काज रहैन। कोठीक अन्न केना सुरक्षित रहत, तैठामसँ लऽ कऽ माल-जालक थैर-गोबर केनाइ, घास लौनाइ धरिक।

ओना, किष्कारोक समयमे आ कटनियोँ-दौनीक समयमे गिरहस्ती काजमे सेहो काकी हाथ बँटबैत रहथिन।

चीनी मिलमे जहिना एकठाम कुशियार बोझिते, रेलबे टिकट लेनिहारक धाड़ी जकाँ रसे-रसे आगू बढ़ैत तहिना कमला कक्काक परिवार छैन। परिवारमे ने मुहाँ-ठुठी करैक कोनो जगह छैन आ ने कखनो से होइत।

ओना, गाम नीचरस जमीनमे बसल तँए ऊँचरस जमीनक बारहो-बिरहिणीक खेती नै होइत। माने, भीठ जमीन नै रहने भीठक उपजो नहियेँ। जइसँ गाममे बेख-बुनियादि सेहो कम आ गाछियो-खरहोरि तहिना। तीन हीसमे बास आ एक हीसमे खेत-पथारसँ लऽ कऽ वाड़ियो-झाड़ी धरि छैन।

ओना, तँ छह ऋृतु होइ छै मुदा गिरहस्ती लेल मूलत: तीन मौसम होइत। ऋृतु दुइए मासपर बदलैत, जखन कि फसिल तीन मासक उपरान्ते बदलैत। किछु-किछु तीन माससँ कम्मो समयमे होइत मुदा बेसी तीन माससँ बेसीए-मे। तँए मोटा-मोटी जाड़, गरमी आ वरसाती फसिल होइत। तहूमे डन्डी-तराजू जकाँ वरसात डन्डी पकड़ने अछि आ तराजूक पलरा जकाँ जाड़-गरमी। एक-दोसराक दुश्मनो, किएक तँ रहत कोनो एक्केटा। सन्यासी जकाँ एक-दोसरकेँ नै सोहाइत। मुदा बीचमे जँ पंच नै रहत तँ झगड़ेमे दुनू लगि जाएत, आगू की बढ़त। सालक वरसाते मौसम एहेन होइत जे सालो-भरिक भाग-तकदीर निर्धारित करैत। जहिना बेसी बरखा

भेने दहार होइए तहिना नै भेने रौदी। जे दुनू, गिरहस्तीकेँ जान मारैए। हँ! एहनो होइए जे जइ साल समगम बरखा भेल तइ साल सुभ्यस्त समय भेल। जइसँ निच्चाँ-ऊपर एक रंग फसिल उपजल। जहिना कृष्ण अर्जुनकेँ कहने रहथिन तहिना मौसमो होइए।

जइ धरतीपर गंगा, सरस्वती आ यमुना सन धार एकठाम मिलि कुम्भ सजबैए तैठाम दिन-दहार हत्या, बलात्कार अपहरण हुअए, बिनु बुधिक लोकक भरमार लगल रहए, मनुक्खकेँ मनुक्ख नै बुझल जाए, तखन तीनूक संगमक कोन उपकार? नमगर-चौड़गर आँट-पेटक तीनू धार जे हँसैत-झिलहोरि खेलैत समुद्रमे समाहित होइत, तैठाम..?

हमरा सभकेँ ईहो नै ओझल रखक चाही जे एकैसम सदीक स्वतंत्र प्रजातंत्रक बीच बास करै छी। अखन धरिक इतिहासमे एते सक्षम मनुक्ख ऐ धरतीपर नै भेल छल। तँए, दायित्व बनैए जे युगक संग पकैड़ युग-युगान्तरक धाराकेँ स्वच्छ बना चलए दिऐ। काल मनुक्खेटा केँ नहि, सभ किछुकेँ प्रभावित करै छइ। जखने सभ किछु प्रभावित हएत तखने जीवन-पद्धतिमे धक्का लगत। ओइ धक्काकेँ निष्क्रिय करैले जीवन-शैलीमे बदलाव आनए पड़त। जहिना बीतल युग तहिना बदलल। माने सत्युगमे जे क्रिया-कलाप छल ओ त्रेतामे आबि सुधरल, जइसँ बदलाव आएल, युग-परिवर्त्तन भेल। तहिना त्रेतासँ द्वापर भेल। तँए जरूरी भऽ गेल अछि जे समयांकन इमानदारीसँ हुअए।

कहैले तँ कमला काका परिवारक गारजन छैथ मुदा अँगनाक सीमासँ अपनाकेँ बाहरे रखने छैथ। खेतक उपजावारी बाधसँ आनि पत्नीकेँ सुमझा दइ छथिन। यमुनो काकी कि आब नव-नौतारि छैथ जे परिवारक धक्का-पंजा नै बुझथिन। जिनगीक धक्का-पंजा जीबैक बहुत किछु लूरि सिखा देने छैन।

सुभ्यस्त समय भेने काकीक मनमे खुशीक कोढ़ी शुरूहे आद्रा नक्षत्रमे जे पकड़लकैन से बढ़ैत-बढ़ैत अगहनमे भकरार भऽ फुला गेलैन।

धान दौन होइते, आने साल जकाँ यमुना काकी उसनियाँ करैसँ पहिने उपजाक हिसाब बेटो-पुतोहु आ पतियोक कानमे दऽ देब, आने साल जकाँ नीक बुझलैन। मने-मन बुदबुदेली- “केते धान भेल, तेकर केते चाउर

हएत आ केते दिन चलत?”

‘केते दिन चलत’मे ओझरी लगि गेलैन। लोकक पेटक कोनो हिसाब अछि, देखैमे ने बिते भरिक बुझि पड़ैए मुदा हाथियो खा-पी कऽ पचा लइए। फेर मन घुमलैन। जखन अपने परिवारक बात अछि तखन एना अग्गह-विग्गह किए सोचै छी? देखले परिवार नपले सिदहा। मुदा लगले यमुना काकीक मन आगू घुसैक गेलैन। आन-आन परिवार जकाँ तँ अपन परिवार नै अछि। आन-आन परिवारमे आनो-आनो उपाय छै मुदा अपना तँ से नइ अछि। लऽ दऽ कऽ खेतियेक आशा अछि। तहूमे एते दिन घटबी पुरबैले गाम-गाम महाजनो छेलै मुदा आब तँ ओहो नइ अछि। ‘ने ओ देवी आ ने ओ कराह।’ महाजनी मरैक कारणो भेल। राजे रोग जकाँ ने बाढ़ियो-रौदी छी। जे जेहेन अछि तेकरा तही रूपेँ पकड़ै छइ। माने जे जेते कम आँट-पेटक ओकरा ओते कम आ जे जेते नमहर ओकरा ओते बेसी नोकसान करै छइ। तैसंग ईहो भेल जे गामक लोक बाहरसँ सेहो कमा-कमा आनए लगल। जइसँ महाजनीक बीच रोड़ा अँटकल। ओना, बहरबैयो बाहरक बहुत बात तँ नहियेँ बुझैत मुदा जिनगीक किछु बात तँ जरूर बुझए लगल। नै बुझैक कारण रहै जे पढ़ल-लिखल नै रहने एको गोरेकेँ ने बैंकक नोकरी रहै आ ने करखन्नाक ऑडिटरी। जैठाम धनक कँकोड़बा बिआन होइत से कियो ने बुझैत। मुदा रिक्शा चलौनिहार, ठेला ठेलनिहार, गोदाममे बोरा उठौनिहारकेँ लगक महाजनसँ भेँट जरूर भेलइ। जहिना छोट बच्चा हाथक ओंगरी मुँहमे लैत-लैत बाँहियो पकड़ए लगैत तहिना खुदरा महाजन लग एने भेल। ओना, छोट महाजनी रहने साले भरिक लेन-देन चलैत मुदा पच्चीस हजारक सहयोगी तँ भेटल। बेटा-बेटीक बिआह, घर-घरहट आ बर-बिमारीक आशा तँ भेटल। गामक महाजनीसँ सुदियो छोट। जेतए आसिन-कातिकक कर्ज एक्के-दुइए मासमे सवैया-डेढ़िया वृद्धि करैत तैठाम दस प्रतिशत बियाजक बदला पच्चीस प्रतिशत दिअ पड़ैत, तेतबे ने। मुदा तैयो तँ असाने भेल। दोसर ईहो भेल जे आध-मन, एक-मन कर्ज लेल जे भरि-भरि दिन साबेक जौरी खड़ैए पड़ै छल सेहो बन्न भेल।

दुनू बापूत–कमलो काका, रधवो–केँ यमुना काकी बुझबैत

कहलखिन- “एते धान भेल। एकर एते चाउर हएत आ एते दिनक पछाइत फेर ऐगला अन्न हएत। एते दिनमे एते साँझ भेल, एतेटा आश्रम अछि। दिनमे एते सिदहा लगैए।”

यमुना काकीक हिसाब सुनि कमला काका विचारक दुनियाँमे वौआ गेला। जेहो सुनलैन सेहो रसे-रसे बिसरए लगला आ जे नै सुनलैन से तँ नहियेँ सुनलैन।

अपन प्रस्तावक अनुमोदन लेल यमुना काकी आँखि नचबए लगली। नचैत आँखि कखनो पतिपर तँ कखनो बेटापर दैथ। आ उनैट कऽ जखन पाछू तकैथ तँ टाटक अढ़मे बैसल पुतोहुपर नजैर पड़ि जाइन। सभ अपने-अपने दुनियाँमे वौआइत...।

अपन प्रस्तावक उत्तर नइ पाबि यमुना काकी फेर दोहरबैत बजली-

“अखन सोचै-विचारैक समय अछि, तँ कियो कान-बात नै दइ छिऐ आ जखन बेर पड़त तखन थुक्कम-थुक्का करैत घिनमा-घीन करब!”

यमुना काकीक करुआएल बात सुनि कमला कक्काक भक् खुजलैन। मनमे उठलैन जे मुहोँ चोरौनाइ नीक नहि। बजला-

“खेतसँ खरिहाँन आनि तैयार कऽ आँगन पहुँचा देलौं, आबो हमरे काज अछि। आकि ओकरा उसनब, रौद लगा कोठीमे राखब। की सेहो पुरुखे भरोसे छी।”

कक्काक उत्तरसँ यमुना काकीकेँ घरक लक्ष्मी मोन पड़लैन। खुशीसँ मन नाचि उठलैन। मुदा लगले, जेना घुरमी लगैए तहिना लगि गेलैन। बजली-

“जोड़ भरि धोती आकि जोड़ भरि साड़ी तँ कियो साले भरि ने पहिरत। साल भरिक पछाइत ओ थोड़े पहिरै-जोकर रहै छइ। एकर अर्थ ई नइ ने भेल जे वस्त्रक जरूरत मेटा गेल, साल भरि लेल मेटाएल, तोहूमे केते बिहंगरा अछि। कहीं चोरिये भऽ जाए आकि हेराइए जाए, आकि कुत्ते-बिलाइ दकैर दइ, आकि आगिए-छाइक प्रकोप भऽ जाइ।”

यमुना काकीक बात सुनियोँ कऽ कमला काका अनठा देलैन। चुप भऽ गेला। मुदा मनमे ओंढ़ मारए लगलैन जे माए-बापक अछैत बेटा-

पुतोहुकेँ परिवारक चिन्ताक उत्तरी पहिराएब उचित नहि। ओना, काजक ढंग ओहन सिखा देब नीक, जइसँ जिनगीमे कहियो चिन्ता नै सतबै।

आगूमे बैसल रधवा, जेना संस्कृत आकि अंग्रेजी सुनि कोनो बच्चाकेँ होइत, तहिना सुनबे ने केलक। मुदा तैयो रधवाक मनमे घुरिआइ जे जे-गति सबहक हेतै से हमरो हएत। तइले अनेरे माथ-कपार पीटब आकि धुनब नीक नहि। रमरटियासँ खढ़कटिये नीक..! भरमे-सरम रधवा चुपे रहल। मुदा अढ़मे बैसल पुतोहुक मन बजैले लुस-फुस करैत। लुस-फुस करैक कारण जे के नै घर आकि गामक मुख्यियारी चाहैए? मुदा वेचारीकेँ कोनो एहेन गड़े ने भेटैत जे किछु बजितैथ। एक तँ नव-नौतुक कनियाँ, दोसर नैहरोमे माए भानसे-भात करैक लूरिटा सिखौने। घरक जुति-भाँतिक कोनो लूरि सीखेबे ने केलकैन। केना सीखेबो करितैथ? सभ गाम आ सभ परिवारमे किछु-ने-किछु भिन्नता होइते छइ। जहिना कोनो नट ओहने बोल्टमे नीकसँ लगैत जे समतुल्य रहैए। परिवारो तहिना ने होइ छइ। माइए-बापक परिवार जकाँ साउसो-ससुरक परिवार हएत, से कोनो जरूरी नहि। चाहियो कऽ वेचारी किछु ने बाजि सकल...। ओना, धानक ढेरी देखि कमला कक्काक मन उमड़ैत रहैन। जहिना पानिमे भीजने किताबक पन्ना एक-दोसरमे सटि जाइए तहिना कमलो काकाकेँ, परिवारक सभ हृदयमे सटि गेलैन। मन उमैड़ आगू बढ़लैन। पतिकेँ रहैत जँ पत्नीकेँ वा बाप-माएकेँ रहैत बाल-बच्चाकेँ कोनो तरहक चिन्ता-फिकिर हुअए, तँ जरूर केतौ-ने-केतौ माए-बापक दोख छिपल अछि। मुदा दोखक कारण मनमे एबे ने करैन। ओछाइनपर जहिना नीन नै एने कछमछी लगैत तहिना कमला कक्काक मन कछमछाइत रहैन। मुदा लगले, जहिना सुतली रातिमे ओछाइनपर सुतल माएकेँ देखि जागल बच्चा सुति रहैत तहिना कमलो काका केलैन।

पतिकेँ शान्त देखि यमुनो काकी असथिर भऽ गेली। मनमे उठलैन जे चारि गोरेक आश्रममे तीन गोरे तँ एक्के परिवारक छी, खाली कनियेँटा ने अखन दस-आना छह-आनामे छैथ। ओहो दू-चारि सालमे रिताइत-रिताइत रिता जेती। मुदा अखन तँ नैहरेक चालि-ढालि छैन। अखन थोड़े ऐ घरक तीत-मीठ पचौती। नैहर गेलापर जखन सखी-बहिनपा वा माए-

पितियाइन पुछतैन जे बुच्ची अन्न-वस्त्रक ने तँ दुख-तकलीफ होइ छह, तखन ओ थोड़े आगू-पाछू ताकि बजती। ओ तँ परिवारेक बँचौने बँचत। वएह ने परिवारक प्रतिष्ठा छी। जानियेँ कऽ तँ हमरा सबहक घरक छप्पर भगवानक डेङ्गेलहा छी, तेहीमे ने बँचि-खुचि कऽ घरक मर्यादाकेँ संगे लऽ कऽ चलैक अछि। अहीमे ने अपन इमान-धर्म बँचबैत परिवार चलाएब तखन ने समाजक संग कुटुमो-परिवारक प्रतिष्ठा ठाढ़ रहत।



शब्द संख्या: 1974

फॉगु

कौआ डकैसँ पहिने केतौ-केतौ गाछपर पौरुकीक बोल फुटल कि रघुनी बाबाक नीन टुटलैन। जहिना अर्द्धचेत अवस्थामे किछु बजा जाइत तहिना मुहसँ निकललैन-

“आइ फगुआ छी। राति भरिक हँसैत चानकेँ सुरूजक लालिमा अरियाति कऽ आबि चुकल अछि। केतेक सुन्दर राति दिनक संग मिलि रहल अछि। जे जीबए से खेलए फाउग...।”

बजैत-बजैत रघुनी बाबाक चेतना चेत गेलैन। चेतते मन दोहरौलकैन-

“जे जीबए से खेलए फाउग।”

मुदा जीवित-मृत्युक बीच एहेन लट्टा-पट्टी अछि जे के मरल आ के जीबैए से बिलगाएब कठिन अछि। कियो जीवित-मृत्यु बुझबे ने करैत, तँ कियो बुझितो मानबे नै करैत। कियो जँ बुझबो करैत तँ काते हटौने रहैत। शिवजीक सीमा खिंचब कठिन अछि...।

पौह फटिते जहिना सुरूजक आगमन हुअ लगैत तहिना रघुनी बाबाक अलिसाएल मन जिनगी दिस नजैर उठौलकैन।

जहिना कोनो विद्यार्थीक पहिल कलम कोनो प्रश्नमे अँटैक जाइत तहिना रघुनी बाबाक मन अँटैक गेलैन। ओछाइनपर पड़ले-पड़ल कड़ फेरलैन। मनमे उठलैन, अनाड़ियो-धुनाड़ियो कोदारिसँ परती खेत तामि लइए। कहाँ ओकरा हर जकाँ लूरि सिखए पड़ै छइ। मुदा बिना लूरिये तँ कोदारियो नै पाड़ल जा सकैए।

अँटकल मनमे फेर उठलैन- किछु लूरि देखियो कऽ भऽ जाइत, किछु हाथ पकैड़ सिखौलो जाइत आ किछु रगैड़-रगैड़ कऽ सिखए...। रघुनी बाबा ठमकला। पुन: मनमे एलैन- जहिना पानि माटिक ऊपर छिछैल धारा बनि आगू बढ़ैत तहिना तँ सुरूजोक किरिण छिछलैत पूब-सँ-

पच्छिम चलैए। अँटकैत कहाँ अछि? हँ अँटकैए! खाधिमे पानि अँटकैए, तामल खेतक गोलामे सुरूजक किरिण अँटकैए। मनमे संचार भेलैन। दिनक सगुन उचाड़ए लगला। फगुआक दिन छी। फागुनक विदाइ सेहो छी। आइए रातिमे चैतक आगमन सेहो हएत। मन मधुएलैन। पाबैनक दिन छी। वसन्ती पाबैन। पुआ-मलपुआ खाएब, रंग-अबीर खेलब, होलीक संग विरहा वसन्त, ढोल-डम्फाक संग गेबो करब आ नचबो करब। मुदा मन पसीज गेलैन। पसीज ई गेलैन जे- 'एक दिनक भोजे की आ एक दिनक राजे की।'

रघुनी बाबाक ठमकल मन पाछू बढ़लैन। वसन्तक मध्य, होली पाबैन। माघक इजोरिया-पंचमी होलीसँ एक मास बीस दिन पूर्व वसन्तक जन्म भेल। मुदा चैत-बैशाखकेँ वसन्त मानने तँ पूर्व पक्षे हेरा जाइत अछि। जँ मध्य मानब तैयो पचास-साठिक दूरी बनि जाइत अछि...।

ओझराएल मन मुड़ैछ कऽ तुड़ैछ गेलैन। भने दस बर्खसँ होली मनाएबे छोड़ि देने छी। लऽ दऽ कऽ भोजने-टा शेष बँचैए। सेहो दिनेक फल छी। मुदा फलो तँ अनेक तरहक होइए- मिठो होइए, खट्टो होइए आ खट-मधुर सेहो होइए। तीनू संगो रहैए आ अलगो-अलगो रहैए। जामन्तो प्रकारक भोजनमे तीनूक अपन-अपन महत छइ। भोजमे जएह अचार अपन विशेष महत बनौने अछि, वएह असगरमे दाँतकेँ तेना कोतिया कात कऽ दइ छै जे काज करैसँ हनछिन करए लगैए। मनकेँ घुमिते उपकलैन- वसन्तक आगमनक दिन। आइए सरस्वती पूजा सेहो छी। आइए हरबाह गृहस्तक हर परतीपर ठाढ़ करत। ठाढ़े नै करत, अढ़ाइ मोड़ घुमबो करत। अढ़ाइए मोड़क बोइनो तहिना। सभ परानी खेबो करत आ जेते धानसँ हरक नास डुमतै तेते लैयो जाएत। पसारी भाथीक आगिमे धान-मरूआ लाबा फोड़ि सालक समय गुनत। मुदा सेहो होइ कहाँ छइ? हेबो केना करतै, गाए-महींसिक मास एक्कैस-बाइस दिनक होइ छै आ मनुक्खक भऽ जाइ छै तीस दिनक। जहन कि दुनू संगे रहैए। संगे लक्ष्मी बनैए, संगे ऐरावत।

रघुनी बाबाक मनमे उठलैन- अनेरे कोन फेड़मे पड़ै छी। पाबैनक दिन छी, हँसी-खुशीसँ उठब खाएब-पीब मौज-मस्ती करब। जे गति

सबहक से गति हमरो। तइले अनेरे एते मगज-मारी करैक कोन जरूरत?

राम-श्याम करैत रघुनी बाबा ओछाइनसँ उठैक विचार केलैन। तखने गाम दिससँ 'पीह-पाह'क आवाज कानमे पड़लैन। भोरहरबा नढ़ियाक आवाज जकाँ अकानए लगला जे की कहै छइ।

रघुनी बाबाक मनमे उठलैन, ओह! अनेरे पाबैन छोड़लौं। जाबे जीबै छी ताबैये ने। मरि जाएब तँ के देखत आ केकरा देखब। मनमे फेर उपकलैन- किए नै पाबैन छोड़ी? जइ होली पाबैनक नाओंपर इज्जत-आबरू आ धन-सम्पैतक लूट हुअए ओ पाबैन किए करब? मुदा भुताहि गाछ बुझि कियो आमक गाछतर जाएब छोड़ि देत तँ आम केना खाएत? जामुनपर सहजे जम बैसले अछि। बेल फड़ने कौआकेँ की? खाएर जानह जअ जानह जात्ता...। गामक बात गौंआँ जानह। मुदा परिवार तँ अपन छी। परिवारक नीक-अधलाक तँ जवाब दिअ पड़त। मुहोँ चोरा कऽ रहब नीक नहि। केते दिन जीबे करब। आइसँ फेर फगुआ खेलब। मुदा खेलब केतए? परिवारक संग खेलब...।

रघुनी बाबाक मन नीक जकाँ असथिरो नै भेल छेलैन कि दादी आबि टोकलकैन-

"सौंसे गामक लोक हर-बिर्ड़ो करैए आ अहाँले भोरो ने भेल! आबो उठब की सुतले रहब?"

जहिना नुनगर बिस्कुट खेलापर चाह पीबैक मन होइत तहिना रघुनी बाबाकेँ भेलैन। घोकचल भौंहुक बीचक करिया तीर तनैत बजला-

"जखन अहाँ आबिए गेलौं तखन किए ने गाछक जड़िए-मे पानि ढारी जे डारि-पात सगतैर पहुँच जाएत। अहीं संग फगुआ खेलब।"

बाबाक बात दादीक हृदयकेँ बेधि देलकैन। छटपटाइत उत्तर देलखिन-

"अखन जे तीस-पैंतीस गोरेक फुलवारी लगल अछि ओ केकर छिऐ? जहिना कृष्ण वृन्दावनमे फाउग खेलाइ छला तइसँ कि कम हमर अछि।"

मुस्की दैत रघुनी बाबा बजला- "अखनो धरि मनमे बेइमानी ऐछे जे

अपन कहलिऐ आ हमर छोड़ि देलिऐ?"

अड़हुलक कली सदृश तीर साधि दादी दगलैन-

"अहाँकेँ आन बुझै छी जे फुटा कऽ कहितौं।"

"अच्छा छोड़ू ऐ सभकेँ। परिवारमे सभकेँ कहि दियौ जे दुपहर तक सभ कियो नहा-खा तैयार भऽ जाए। बेरू पहर दुनू गोरे केना जुआनी बितेलौं से सौंसे परिवारकेँ सुना देबइ।"

बाबाक बात सुनिते दादीक आँखि मधुआ गेलैन। बजली-

"आबक लोककेँ निमहतै। मोन अछि की नहि जे दुरागमनक तेसरे दिन पटुआ काटए पू-भर गेल रही। ऐठाम रौदी भऽ गेल रहै आ डेढ़ बर्खक पछाइत आएल रही?"

दादीक बात सुनिते रघुनी बाबा उठि कऽ बैसैत बजला-

"औझुका लोकक मने बदैल गेल अछि। जेकर देखा-देखीसँ बालो-बच्चा प्रभावित भऽ रहल अछि।"

बजैत-बजैत जहिना दादी-दुनियाँ बिसैर गेली तहिना सुनैत-सुनैत कथा-वक्ता-श्रोता जकाँ रघुनी बाबा अपन जिनगीक बोनमे बोना गेला। एक मन औनाए लगलैन तँ दोसर मन गाबए लगलैन-

"सदा आनन्द रहे अही दुआरे मोहन खेले होरी हो...।"

दादी दरबज्जासँ आँगन दिस गुनगुनाइत बढ़ली-

"कियो लूटबए अपन महिमा।"

जुआनीक रंगमे रंगि रघुनी बाबा गाम दिस विदा भेला। दरबज्जाक बाट टपि गामक बाटपर पहुँचते मनमे उठलैन- देखा चाही, केते नवतुरिया सभ देहपर रंग फेकैए आ केते जुआन-जहान अकाससँ अबीर उड़बैए।

मुदा लगले मनमे उठि गेलैन लोको लाज तँ किछु छी किने। धिया-पुता केना रंग देत। हँ तखन खेलाएत अपनामे मुदा छिच्चा उड़ि जँ पड़त तँ ओकरा की कहबै..?

एका-एकी दादी परिवारक सभकेँ अपने मुहेँ कहलैन। माने बाबाक समाद दादी भरि मन बँटलैन। नीक-बेजाए दुनूक समीक्षा हुअ लगल।

अन्तो-अन्त सभ यएह बुझलक जे कहियो ने से पाबैन दिन! बुढ़-पुरानक हुकुम छिऐन, तँए यादि स्वरूप सुनि लेब नीके हएत। के कहलक ऐगला होली देखता कि नहि देखता। जँ देखबो करता तँ के कहलक जे पाँखि तोड़ि कऽ देखता आकि ओछाइन धेने देखता, तेकर कोन ठेकान।

मुदा ईहो बात मने-मन उठैत जे वएह देखता हमहीं नै देखिऐ? कम-सँ-कम तँ ई हएत किने जे सौंसे परिवार एकठाम बैस पाबैनक दिन बिताएब..। दादीकेँ पोती कहियो देलकैन जे आइ भानसो तोरे करए पड़तौं।

समयसँ किछु पहिने परिवारक सभ कियो दरबज्जापर पहुँचल। बाबा-दादीक बात तँए महादेव-पार्वतीक फॉगु सबहक मनमे घुमैत, सबहक मुँह बन्न। सभ बाबा-दादीक बात सुनैले कान पाथि नजैर अँटकौने।

रघुनी बाबाक मनमे उठलैन जे तिल-तण्डुल जँ फेंटा जाए तँ बिलगाएल जा सकैए मुदा जँ पानि-माटि फेंटा जाएत तखन केना बिलगौल जाएत? तीन खाढ़ीक बीच परिवार अछि। सबहक अपन-अपन स्तर अछि, अपन-अपन जिनगी अछि। जिनगीए-मे खुशियो अबैत-जाइत रहै छइ। मुदा जहिना लोक अपन नीक लेल सभ किछु करैए तहिना ने परिवारो लेल करैए। भलेँ परिवार पैघसँ छोटे किए ने भऽ गेल हुअए।

फगुआ दिनक उमकीमे मन उमैक गेलैन। जहिना बरखाक पानिमे धिया-पुता उमकैए तहिना बबो-दादीक मन उमकए लगलैन। दादीकेँ बाबा टीप देलखिन-

“जइ साल दुरागमन भेल रहए आ परदेश गेल रही, से मोन अछि आकि बिसैर गेलौं?”

बाबाक प्रश्नक उत्तर दादी केना नै देथिन। बाबाक रोच छैन मुदा परिवारक तँ गारजने छैथ। तेतबे नहि, निचलासँ ऊपर सेहो छथिए। सिनेमाक कलाकार जकाँ पोजमे बजली- “लोक सुख ने बिसैर जाइ छै मुदा दुख तँ मोने रहै छइ। किए ने मन रहत।”

दादीक पोज देखि छोटकी पोत-पुतोहु अपन हालक दुरागमन बुझि

बाबाक प्रश्नपर जोर देलक।

पुतोहुक टाँट बोली सुनि दादीक मनमे उठलैन जे मुँहजोर पुतोहु अछि, एकटा उत्तर देबै तँ दोसर दोहरा देत। मुँह नोचि कऽ खा जाएत। तइसँ नीक जे अपने मुहेँ कहए दिऐन।

हारि मानैत देखि रघुनी बाबा लपैक कऽ दादीक प्रश्न पकैड़ बाजए लगला-

“कनियाँ, नव-कबरिये रही। मोँछ-दाढ़ीक पम्ह अबिते रहए। तीन सालसँ परदेश खटैत रही। जेठ मास रहइ, दुरागमन भेले रहए। दुरागमनक तेसरे दिन मेड़िया सभ पू-भर जेबाक समय बनौलक। अपनो घरमे चूड़ा-भुसबा रहबे करए, बटखरचा लऽ लेलौं। भाड़ा-भुड़ी लेल गोर लगाइबला रुपैआ सेहो रहबे करए। तेसरा दिन चलि गेलौं।”

जिज्ञासा करैत पुतोहु पुछलकैन-

“पएरे गेलखिन आकि गाड़ी-सवारीसँ?”

जेना गुड़ घावसँ पीज निकलैकाल सुआस पड़ै छै तहिना बाबाक मनमे भेलैन। विह्वल होइत बजला-

“निरमली तक रेलगाड़ीसँ गेलौं। तेकर बाद पूब दिसक रस्ता धेने कोसी घाटपर पहुँचलौं।”

“धार केना टपलखिन?”

“कनियाँ, जेठुआ समय रहइ। धारक पेट खाली भऽ गेल रहै मुदा तैयो अगम पानि तँ रहबे करइ। ओना, धार फुलाइक समय भऽ गेल रहै मुदा फुलाएल नै रहए। बेसी नाव भदबरियामे डुमइ। एक बेर अहिना भेल जे अपने गौंआँक मेड़िया घुमैकाल डुमि गेलइ।”

उत्सुक होइत पुतोहु पुछलकैन-

“केते गोरे रहथिन?”

“तेरह-चौदह गोरे अपना गामक रहैथ आ आर गोरे आन-आन गामक। चालिस-पैंतालिस गोरे नाहपर चढ़ल रहैथ।”

“केते दिन पू-भर कमाइ लेल गेलखिन?”

मोन पाड़ैत रघुनी बाबा किछु कालक पछाइत बजला- “कनियाँ, तेकर ठेकान अछि। मुदा तैयो बीस-पच्चीस बर्ख तँ गेलै हएब।”

“कए दिने पहुँचै छेलखिन?”

“ओइबेर तीनियेँ दिनमे रंगैली पहुँच गेलौं। बजारसँ थोड़बे हटि कऽ काज पकड़ा गेल। चिन्हरबे गिरहत रहए।”

“जँ ओइठीम काज नै पकड़ैतैन तखन की करितथिन?”

पुतोहुक प्रश्न सुनि रघुनी बाबाक जुआनी मोन पड़लैन। जोशमे बजला-

“की करितिऐ! कोनो कि ओतबे देखल-सुनल रहए। मोरंगमे नै काज भेटैत तँ आगू बढ़ि जइतौं। सिलीगुड़ी, असाम, ढाका तक ठेका दैतिऐ। मुदा काज केने बिना नै अबितौं।”

“कोन काज करै छेलखिन?”

काजक नाओं सुनि बाबाक मन वौरा गेलैन। कहलखिन-

“कनियाँ, काजक कोनो ठेकान अछि। गिरहस्तौआ सभ काजक लूरि अछि। ओना, धन-रोपनी, धन-कटनी आ पटुआ कटैले जाइ छेलौं।”

“केते दिन रहै छेलखिन?”

“सालमे दू-बेर जाइ छेलौं। घुमा-फिरा कऽ छह मास लगि जाइ छेलए। धन-कटनीमे तँ एकलगना काज रहै छेलै, मुदा पटुआ काटैक समयमे काज छिड़िया जाइ छेलए।”

मुँहपर एकटा आँगुर लैत पुतोहु फेर पुछलकैन-

“एकलगना काज केकरा कहै छथिन?”

पुतोहुक प्रश्न सुनि रघुनी बाबाक गुरुमन जगलैन। नजैर-पर-नजैर दैत बजला-

“एकलगना काज ओ भेल जे क्रमबद्ध चलैए। एकक बाद एक काज अबैए। जेना भानस करैकाल चूल्हि पजारि बरतन चढ़बै छी। अदहन दइ छिऐ। पानि गरम होइए, तखन सिदहा लगबै छी। यएह क्रम एकगलना भेल। मुदा जखन रोटियो पकाएब रहत, तरकारियो बनाएब रहत आ भातो

रान्हब रहत तखन ओ काज छिड़िया जाएत। छिड़ियाएल काजमे अधिक भनसियो आ चुल्हियोक जरूरत पड़ि जाइ छइ। नहि जँ भनसिया असगरुआ रहल तँ छिगड़ी-तानमे पड़ि गेल।"

"एकलगना काज केना करै छेलखिन?"

"पटुएक कहै छी। पहिने ओकरा कटलौं। काटि कऽ जमा कऽ देलिऐ। तीन-चारि दिनमे पत्ता झड़ि जाइ छेलइ। तखन ओकरा अँटियाहा बोझ बनबै छेलौं। पानि ठेकना उघि कऽ लऽ जाइ छेलौं। पानिमे बाँसक खुट्टी पाटि कऽ, तीन-चारि छल्ली लगा दइ छेलिऐ जइसँ एक-दोसराकेँ दबबो केलक आ ऊपरसँ माटिक चेका चढ़ा दइ छेलिऐ। पानिक तरमे सभ डुमि जाइ छेलइ। गोरलाक बीस-पच्चीस दिनमे सीझ जाइ छेलइ। तखन ओकरा मुंगरीसँ झाड़ि-झाड़ि साफ करै छेलौं।"

"पटुआमे भरिगर काज की होइ छइ?"

प्रश्न सुनि रघुनी बाबाक आँखि ढबढबा गेलैन। आँखि ढबढबाइते पानि पड़ल खौजरी जकाँ मन मधुर भऽ गेलैन। बजला-

"कनियाँ, अखन अहाँ बाल-बोध छी। दुनियाँक तीत-मीठ नै बुझलिऐए मुदा कहै छी- काजे जिनगी छी। तँए काजसँ सटबाक कोशिश हरिदम करी। हरिदम करैक मतलब ई नइ जे भरि दिन देहे धुनी। जहिना राज मिस्त्री मकानक नक्शा बना मकान बनबैए तहिना काजोक छइ। छोटे-काज नमहर लग लऽ जाइ छै आ आगू मुहेँ टुस्कियेबो करै छइ।"

बिच्चेमे पुतोहु बजली-

"प्रश्न छुटि गेलैन बाबा?"

"कनियाँ, की कहब। तरकारी तँ ओलो छी जे गाछमे एकेटा होइए, जा कऽ खट-दे उखाड़ि लेब। ओल उखाड़ैमे जेते समय लगल ओइसँ कम समयमे सजमैन तोड़ल जा सकैए। मुदा सैकड़ो फड़ैबला सजमैन बिना देखने-सुनने टेब केना सकै छी। टेबब असान तँ नहि। दूटाक तुलना करब छी, जे असान नहि, किएक तँ किछु एहेन होइत जे कमे उमेरमे फुफुआ कऽ नमहर भऽ जाइत आ किछु लुलुआ कऽ बौना भऽ जाइत। जँ छोट जानि, छोड़ैत जाएब तँ ओ तरेतर जुआ जाएत, मेहनत डुमि जाएत। तँए

हल्लुको काज भारी होइए।”

बिच्चेमे फेर पुतोहु टोकि देलखिन- “बाबा, फेर भँसिया गेलखिन?”

“नै कनियाँ, भँसियाइ कहाँ छी। होइए जे हृदय फाड़ि अहाँ सबहक बीच छिड़िया दी आ अहाँ सभ तितिर जकाँ सभ पीब ली। मर्द बनि जखन काज करए निकललौं, तखन भरिगर की आ हल्लुक की। मुदा एकटा बात धियानमे जरूर रखक चाही जे कोन काजमे केते जोखिम उठबए पड़त। जइ काजमे जेते जोखिम होइ ओइमे ओते सतर्क रही। तर्के रस्ता बनबैए। पटुआक काजमे सभसँ भरिगर अछि पटुआ झाड़ि सोन बनौनाइ। जहिना एक-दोसर जिनगी पबैत तहिना डाँड़ भरि सड़ल पानिमे जोंक-ठेंगीक संग विषैला साँप सेहो रहैत। चानिपर टहटहौआ रौद, निच्चाँ डाँड़ भरि पानि। सर्द-गर्मक बीच शरीर रहैए। तैपर एकलगना ठाढ़ भऽ कखनो एकटँगा ठेहुन बना पटुआक जड़ि जोड़ल जाइत, तँ कखनो वामा हाथमे उठा दहिना हाथे मुंगरीसँ झाड़ल जाइत। माछी-मच्छरक तँ ठेकाने कोन।”

सिनेहासिक्त होइत पुतोहु पुछलकैन- “केते दिनक पछाइत घुमलखिन?”

“डेढ़ बर्खपर घुमलौं। ओइ साल रौदी भऽ गेल रहइ। रुपैआ पठा दिऐ आ अपने कमाय।”

“अनदिना, बिना सिजनक समयमे कोन काज करै छेलखिन?”

“कनियाँ, वएह समान सभ–पटुआ, तोरी, धान इत्यादि–जखन तैयार भऽ कऽ देहातसँ बजार अबै छेलै तँ बजारोमे काज बढ़ि जाइ छेलइ। पछाइत उट्ठा काज करै छेलौं।”



शब्द संख्या: 2134

लफ साग

गाममे खेतीक चर्च होइते लाल काकीक लफ सागक चर्च उठिए जाइत अछि। ओना, चरचोक क्रम अछि, मुदा लाल काकीक अलग पहचान रहने उपजा-बाड़ीसँ उठैत चर्चक संग बेकतीत्वक चर्च रामायण-महाभारतक प्रमुख पद्यक चर्च जकाँ हुनको होइते छैन।

चरचोक भिन्न-भिन्न क्रम, केतौ-केतौ खाली गहुमेक चर्च चलैत तँ केतौ अगबे धानक। केतौ खैहनक संग दलिहनोक चर्च चलैत तँ केतौ खैहन, दलिहन आ तेलहनक चर्च एक संग उठि जाइत। केतौ अन्नक संग तीमनो-तरकारीक चर्च उठैत तँ केतौ तीमन-तरकारीक संग फलो-फलहरिक। एतबे नहि, केतौ एहनो होइत जे खेतीक संग माछो आ दूधोक चर्च उठि जाइत।

भनडाराक भजनमे जहिना केतौ साखीसँ भजन शुरू होइत तँ केतौ भजनक बीच-बीचमे साखी चलैत, आ केतौ साखीए-सँ विसर्जनो होइत अछि तहिना लाल काकीकेँ सेहो छैन। लफ सागक संग लाल काकीक सिनेह आ खाली सिनेहे नहि, जिनगियो ओहन छैन जेहेन वैवाहिक बन्धन होइत। जहिना कनाह-खोरसँ लऽ कऽ दिबड़ा भीड़मे बसैबलाक संग एकसँ एक देवसुन्नैर अपन जिनगी समरपित कऽ अपन कुल-खनदानक संग समाजक मुरेठा सम्हारि रखैत तहिना लालो काकी छैथ।

जइ दिन लाल काकी सासुर एली तही दिन लफ साग सेहो संगे-संग एलैन। दुरागमन भेलापर जखन लाल काकी सासुर विदा हुअ लगली तँ सतरिया धान खोंछिमे दइले जे रखल रहैन तहीमे लफ सागक बीआ छिपा कऽ ओही धानमे ई सोचि मिला लेलैन जे जँ कागतक पुड़ियामे वा लत्तामे बान्हि राखब तँ खोंछि भरनिहारि देखिए जेती, जखने देखती तँ खोलबे करती। जखने खोलती आ सागक बीआ देखती तँ हो-ने-हो डाइन-जोगिनक फसाद ने कहीं उठि जाए। से नइ तँ निछोहैमे कनी समैये ने लगत मुदा कियो बुझत तँ नहि। सएह केलैन।

सागक बीआ नैहरसँ सासुर अनैक कारणो रहैन। जहिना हजारोक भीड़मे प्रेमीक नजैर प्रेमिकापर रहैत तहिना लाल काकी अपन प्रेमी-सागक संग छोड़ए नहि चाहैथ। ओना, मनमे ईहो होइत रहैन जे अनेरे किए सागेक बीआ लऽ जाएब, जइ गाम जाएब तोहू गाममे तँ लफ साग होइते हेतै, मुदा मन नै मानलकैन। मनोक मानब तँ साधारण नहियेँ अछि।

भलेँ साधारणो बात वा काज कहि मना लेब, ई अलग अछि। मुदा लाल काकीक मन ओहू दुआरे नै मानलकैन जे गाम-गाममे जहिना धानक खेती होइतो एकरंगाहो धान होइत आ नहियोँ होइत, तहिना ने सागोक अछि, केतौ मतौना-ढेकी साग होइत तँ केतौ पालक-ठढ़िया, केतौ ललका ठढ़िया तँ केतौ हरियरका, केतौ उजरा भुल्ला तँ केतौ सतरंगा...।

तँए जहिना गाम-गामक पानि, तहिना वाणि, तहिना खेती, तहिना बाड़ी, तहिना झाड़ी, तहिना फुलवारी तहिना ने आनो-आन होइत अछि। तँए कोनो जरूरी नहि, जे लफ साग ओहू गाममे होइते हेतइ। जँ नै होइत हेतै तँ लल्लो-विल्लो भऽ जाएब। लइए जाइमे की लागत, बुझब जे धाने छी। यएह सभ सोचि लाल काकी जहिना तीर्थस्थानक यात्री पनपीबा बरतनक संग सिदहो-समर संगे लऽ चलैत तहिना लफ सागक बीआ संगे लऽ अनली।

लफ सागक गुण लाल काकीकेँ बुझल रहैन। किएक तँ नैहरोमे बेसीकाल खेबो करैथ आ उपजेबो करैथ। खेतियो हल्लुक। जखन सागक गाछ जुआ जाइत तखन ओइमे फड़ल बीआ सेहो रसे-रसे पाकि जाइत। जहिना बुढ़-बुढ़ानुसक विचार बिनु पुछनौं फुटि-फुटि झड़ए लगैत तहिना सागोक बीआ गाछक आशा छोड़ि खापैड़क लाबा जकाँ चनैक-चनैक बहरा जाइत। केतबो पानि-पाथर बरसौ आकि ठनका खसौ जहिना छह-मसुआ बच्चा माइक छातीमे सटि सुति रहैत तहिना सागोक बीआ पृथ्वीक कोरामे सुति रहैत अछि। मुदा अचेतन रहितो चेतन भऽ ओइ दिन फुरफुरा कऽ उठि जाइत जइ दिन उठैक समय अबैत। तँए कियो सागक बीआ जोगा समैपर खेतकेँ तामि-कोरि बाउग नहियोँ करैत तैयो ओइ खेतमे अपनो जनैम जाइत जइमे पैछला साल भेल रहैत।

लफ सागमे लाल काकीक जहैनिक कारण छैन जे ओ जनै छैथ जे

जैठाम लोक नून-भात आकि नून-रोटी खा जीवन बसर करैए तैठाम जँ चारिटा लफ सागक पत्ताकेँ एकलोटा पानिमे कनी नून दऽ मेरचाइक फोरनसँ फोरना देबै तँ तेहेन सिनेही भऽ भात-रोटीमे सटि ओहन गति पकैड़ लैत जेना खाली सड़कमे वाहन धड़ैत। चारिए पातक मेजनक संग अदहा किलो मीटर ससाइर लिअ।

जिनगीक संग पुरनिहार साग अपन कथा-बेथा लाल काकी छोड़ि केकरा लग बाजत। जे ओकरा दिस घुमियो कऽ ने तकैए तेकरा कहिए कऽ की हेतइ। खेतक आड़िपर पहुँचते भुखाएल नेरू-पड़ू जकाँ लाल काकीकेँ साग कहैत-

“काकी, आइए नहि, हजारो बर्खसँ गेनहारी, बथुआ, नोनी इत्यादिक संगे-संग चलैत एलौं, कियो हवाइ जहाजपर भोज-भात करैए मुदा हमरापर किए ने केकरो नजैर पड़लै! जँ नजैर पड़ल रहितै तँ अहिना धरती धेने रहितौं?”

सागक दुखनामा सुनि लाल काकी विह्वल भऽ कहलखिन-

“बहिन, कियो अपना भागे-करमे जीबैए-मरैए। तइले अनेरे किए दुख करै छह। जइ दिन उपैट जेबह तइ दिन बुझिहक जे या तँ ई धरती नै रहए दिअ चाहैए वा ई धरती रहै-जोकर नइए।”

साग बाजल-

“लाल काकी, लोक बड़ कुभेला करैए। नै तँ, कहू जे सिमटीक आँगन-घर बना कऽ रहैए आ हमरो जँ अखाढ़मे कनी माटि छिड़िया सिमटीक अँगनोमे आकि छज्जियोपर लगा देत तँ की आसीन-कातिक तक भाँज नै पुरबै। मुदा आने साग जकाँ जे फुटा दइए जे ई गरमीक छी तँ ई जाड़क छी। भदवारिमे साग खेबोक नै चाही, से कहू जे ई होइ?”

सान्त्वना दैत लाल काकी कहलखिन-

“अइले किए दुख करै छह, तोहर तँ मान-मर्जादा एते छह जे बिनु तोरे अपन माइयो-बापक उद्धार नै कऽ सकैए। करह दहक जेते कुभेला करबाक छै से करह।”

मिथिलांचलक भोज जहिना अदौसँ आइ धरिक भोजनक इतिहास

अपना पेटमे समेटने अछि तहिना गामो ने समेटने अछि। एक दिस जहिना भात दालिक संग तरकारी, तैसंग-संग पानिमे बनल अदौरी, तेलमे बनल बर-बरी आ दही-चिन्नीक संग विसर्जन होइत। जे भोज्यक इतिहास प्रदर्शित करैत तहिना बाधमे बनल रखबारक खोपड़ीक संग बहुमंजिला मकानक बीच आदि मनुक्खसँ लऽ कऽ सभ्य मनुक्ख माने आधुनिक मनुक्ख तकक इतिहासक झलकी सेहो दैत अछि। जइ दिन लाल काकी सासुर एली तइ दिन ओ पनरहे-सोलहे बर्खक छेली। आने-आन जकाँ दुइए बर्खक पछाइत पतिकेँ मुइने विधवा भऽ गेली। दुइए बर्खक अभियन्तर 'लाल भौजी', 'लाल काकी', 'लाल दादी'क माला समाज पहिरा देलकैन। एकोटा सन्तान नै भेल छेलैन। जइ दिन पति मुइलैन तइ दिन एहेन ओझरीमे लाल काकी ओझरा गेली जे भरि पोख कानियोँ नै सकली। ओझरी ई लगलैन जे जइ समाजमे वैधव्य बान्ह एतेक सक्कत अछि जे ता-जिनगी वैधव्य धारण केने रहैत, तैपर अशुभक उपराग ऊपरसँ। मुदा, की समाज ई भार लइए जे ओकर जिनगी इज्जतक संग केना चलतै। जे समाज केकरो जीवन नै दऽ सकैए की ओइ समाजकेँ केकरो ओंगरी बतबैक अधिकार छइ? विधवाक संग जे-जे किरदानी समाज करैत आएल अछि आ काइयो रहल अछि, की ओ समाज सामाजिक बन्धन बनबैक अधिकार रखैए?

नारी जागरण लेल ओकर सुरक्षाक पक्का बेवस्था सेहो हेबा चाही जँ से नहि, तँ ने ओ परिवारक संग अपन प्रतिष्ठा बँचा सकैए आ ने बाहरे केतौ बँचि सकतै।

पतिक परोछ भेलापर माइयो-बाप आ सरो-समाज लाल काकीकेँ केतबो हिलौलखिन-डोलौलखिन मुदा लाल काकी अड़ि गेली जे समाजमे हमरा सन बहुतो छैथ, जहिना हुनका सबहक जिनगी कटतैन तहिना हमरो कटत। जेते भोग पारस छल तेते भोगलौं, आब माँ मिथिलाक फुलवारी छोड़ि केतौ ने जाएब। जखन अपने हँसुआ, खुरपी आ कोदारि चलबैक लूरि अछि, तखन केतौ रहि जीवन-यापन कऽ सकै छी। अपन मान-मर्यादा अपने नइ बिगाड़ब।

अस्सी बर्ख पार केलापर लाल काकीक नजैर ओइ दिस गेलैन जे-

जे नजैरसँ देखने रहैथ। जहिना नजैर-सँ-नजैर मिलाएब आ टकराएब दुनू होइत तहिना लाल काकीक मनमे सेहो उठलैन। एहेन निचेनसँ जिनगीमे कहियो बैसबो ने कएल रहैथ जे बुझबो करितैथ आ सोचबो करितैथ जे जइ जिनगीमे बुधि-विचार जँ जिनगीक संग नै चलत ओ जिनगीए केहेन हएत।

गुनधुनमे पड़ल एक मन कहलकैन-

“हमरा सन-सन लोक लेल जे बेवहार चलि रहल अछि ओकर निमरजना के करत?”

तँ दोसर मन उत्तर देलकैन-

“जे निमरजना करैबला छैथ ओ जखन अपने चालिए ओंघराएल छैथ तखन अनका की देखथिन। पच्छिम मुहेँक गाड़ी पकैड़ पूब मुहेँ जाए चाहै छैथ, से केना हेतैन।”

मनक घंघौज देखि लाल काकी काल्हिये जे ओराहै-ले बदाम अनने छेली, ओराहैले विदा भेली।



शब्द संख्या: 1203

तिरकोरक तरुआ

जहिना नमहर दोकानमे प्रवेश करिते जीवनोपयोगी वस्तु देखि मन हुअ लगैत जे ईहो कीनि लेब, ओहो कीनि लेब। मुदा पाइयो आ विचारो तँ ओतबे रहैए जेते पहिनेसँ विचार भेल अबैए। तहिना इच्छा रहितो किसुनलाल कोठरीमे डाइनिंग टेबुल नै लगा ओसारेपर अपनो दुनू परानी आ अतिथियो-अभ्यागतकेँ खुअबैत अछि। कम दरमाहा साधारण जिनगी। शहरमे रहितो गामक चालि-ढालि बेसी, कारणो स्पष्ट जे शहरी बनैले शहरी जिनगी बनबए पड़ैत। जे ओहिना नहि, पाइक हाथे बनैत। पाइयक काज मुहसँ थोड़े होइ छइ। भर्लें मुँहक आगू पाइक मोल जेहेन होइ। खास्ता कचौड़ी मुँहमे लाड़ैत-चाड़ैत गड़ लगबैत देवकान्त बजला-

“आह! बुझलह किने किसुनलाल, किछु हौउ, दुनियाँ सात बेर किए ने उनटै-पुनटै मुदा अपना ऐठाम गामक जे तिलकोरक तरुआ अछि ओकर तुलना केतए हएत?”

देवकान्त भाइक बात सुनि किसुनलालक मनमे कनियोँ हिलकोर नै उठलै। किएक तँ मनमे यएह नाच होइत रहै जे डेरामे गौंआँ एला हेन, तँए ई नै अजश हुअए जे खेनाइयोमे ठकि लेलक। नीक कि दब भरि पेट कहुना खाथि। जँ से नै हेतैन तँ दसठाम बजता जे खाइयो-ले भरि पेट नै देलक। तही बीच मनमे उठलै जे पुछि-पुछि खुआएब नीक। जे कम-सँ-कम पहिल बेर तँ कहता जे हँ इच्छापूर्ण खेलौं, आब कनी अराम करैक ओरियान करह आ तोहूँ सभ खा-पीबह, काज-उदम देखहक...। दैन्य दृष्टिए देखि किसुनलाल बाजल- “भाय साहैब, खाइ-जोकर बनल अछि की नहि। कहाँ खाइ छिऐ, चारिटा आरो नेने आबी?”

पहिल ढकार ढकरैत देवकान्त उत्तर देलखिन-

“अँए हौ किसुनलाल, तूँ हमरा राक्षस बुझै छह जे आगूमे एते वस्तु ढेरिया देलह हेन आ तैपर सँ परसन लइले कहै छह?”

जहिना डारिमे लागल मचकीक पहिल आस होइत तहिना, मनमे आस जगिते किसुनलाल बाजल-

“भाय साहैब, कनियेँ-कनियेँ समान सभ परसैले घरवालीकेँ कहने छेलिऐन। जेना-जेना भोजन करैत जेता तेना-तेना परैस-परैस दैत जेबैन।”

तहसाना जकाँ तहियाएल भोजन पाबि देवकान्त भाइक मन गदगदाएल रहबे करैन। किसुनलालक बात अन्तो ने भेल छेलै कि बिच्चेमे देवकान्त बजला- “अँए हौ किसुनलाल, तूँ अनठिया बुझै छह। अपन घर छी! जे खगत आकि बेसी खाइक मन हएत ओ मांगि कऽ लेब। तइले तोरा मनमे किए होइ छह जे भुखले उठि जेता। हम ओहन लोक नइ छी जे खाइयो लेब आ दुसियो देब।”

तखने किसुनलालकेँ पत्नी–सिंहेश्वरी–हाथक इशारासँ शोर पाड़ि पुछलखिन- “तिलकोरक तरुआ-दे किछु कहलैन कि नहि?”

“किए?” किसुनलाल पुछलक। “तिलकोरक साग आ चटनी तँ खाइ छी, बनबैयोक लूरि अछि, मुदा तरुआ नै खेने छी।”

ओना, सिंहेश्वरी देवकान्त भायसँ अढ़ भऽ पतिकेँ कहैत रहथिन मुदा बोलीमे एहेन टाँस देने जे देवकान्तो बुझथिन। साग आ चटनी सुनिते देवकान्तक मनमे उठलैन- साग तँ केते दिन खेने छी। तहूमे पेशाबमे गड़बड़ी रहने पथ्यमे यएह चलैए। मुदा चटनी तँ नै खेने छी। लाज-संकोच तँ ओकरा ने होइ छै जेकरा बुझि पड़ै छै जे भारी छी, मुदा हम कोन भारी छी जँ भारी रहितौं तँ बुझले रहैत। नै बुझल अछि तँ बुझि लेब कोन अधला हएत। जँ कहियो खाइयेक मन हएत तँ बुझलेहे ने काज देत...।

अचार मुँहमे लैत देवकान्त मुँहक कर समेट कऽ घोंटैत बजला-

“किसुन, ई की कोनो गाम-घर छी जे कनियाँ एते संकोच करै छैथ। एतै आबह कहुन, कनी एकटा बातो बुझैक अछि।”

देवकान्तक बात सुनि किसुनलाल तँ ससैर कऽ लगमे आबि गेल, मुदा सिंहेश्वरी किछु आगू बढ़ि, किछु पाछू आबि कऽ ठाढ़ भेली।

जहिना कोनो बच्चोसँ कोनो गप बुझै बेरमे रंग-रंगक प्रश्न पूरक प्रश्न पुछि संतुष्ट होइत अछि। तहिना देवकान्तोक मनमे हुअ लगलैन जे कोनो

बात बुझैले सोझहा-सोझही नीक होइ छै। लजकोटर तँ बहुत बात छोड़िए दैत अछि आ बहुत बिसरियो जाइत अछि। दोखाह तँ दुनू भेल। अपने निच्चाँ उतैर सिंहेश्वरीकेँ ऊपर चढ़बैत देवकान्त बजला-

"कनियाँ, आइ ने किसुनलाल दू-पाइ कमाएल हेन तँ फुलपेन्टो पहिरने देखै छिऐ, मुदा जखन गाममे छल तखन तँ वएह एकटा चरिहत्थी गामछा छेलइ। डाँड़मे लपेटने रहै छल। गप-सप्प करैमे कोनो लाज-धाक नै हेबा चाही। हम जे बुझै छिऐ से अहूँ पुछू आ जे नै बुझै छिऐ से हमहूँ किए ने पुछब। तइले लाज-संकोचक कोन काज छइ।"

पत्नीकेँ चुप देखि किसुनलाल बजला-

"भाय साहैब, कहैले तँ गाममे नै छी मुदा गामे जकाँ एतौ छी। ने ओते कमाइ होइए जे होटल घुमब आकि ज्वेलरी घुमब। खाली डेरासँ कारखाना आ कारखानासँ डेरा अबै-जाइ छी। अठबारे छुट्टी दिन कनी-मनी घुमि लइ छी, सेहो पएरे।"

पतिक बात सुनि सिंहेश्वरी पाछूसँ ससैर कनी आगू बढ़ि तिरछिया कऽ ठाढ़ होइत बजली-

"की कहलखिन?"

देवकान्त बजला-

"कहलौं यएह जे तिलकोरक चटनी केना बनबै छिऐ?"

सिंहेश्वरी-

"भैया, हिनका कि कोनो नै बुझल हेतैन?"

देवकान्त–

"नइ कनियाँ, कोनो कि हमरा जँचैक अछि, धरमागती कहै छी नै बुझल अछि।"

तैबीच सामंजस करैत किसुनलाल बाजल-

"भाय साहैब, ओना, हम तरूओ खेने छी, सागो खेने छी, आ चटनियोँ खेने छी आ धिया-पुतामे पाकल तिलकोरक फड़ सेहो खेने छी। जाबे माए जीबैत रहए ताबे आन दिन तँ नहियेँ मुदा जुड़शीतल पाबैनमे

तिलकोरक तरुआ अबस्से तरए। बड़ खर्चाक चीज छी। ओतेक खर्च करि कऽ खाएब असान थोड़े छइ।"

पतिक सह पबिते सिंहेश्वरी बजली- "भैया, हमर माए-बाप बड़ गरीब छला। भरि पेट अन्नो ने भेटै छेलैन, तखन जे तरुआ-बगहरुआक सेहन्ते करितैथ से पार लगितैन?"

सिंहेश्वरीक बात सुनि मुड़ी डोलबैत देवकान्त बजला-

"हँ, से तँ ठीके। हमहूँ की कोनो बेसी खेने छी। जहिया कहियो घरदेखीमे केतौ जाइ छी, तखन खाइ छी। सेहो आब उठाबे भेल जाइए। आब तँ सहजे लोक तेहेन चिकनिया भऽ गेल जे अल्लुएक पाँचटा पूरा लइए। नवका तूर तँ खाइक कोन गप जे बुझबो ने करैत हएत। पात-पुत कहि थोड़े खाएत। अच्छा छोड़ू ऐ सभकेँ, असल बात तँ छुटले अछि।"

विचारक सामंजस पाबि सिंहेश्वरीक उत्साह जगलैन, बजली-

"भैया, साग तँ बुझले हेतैन जहिना कदीमा पात आकि अरिकंचन पातकेँ कत्तासँ काटि भूजल जाइ छै तहिना तिलकोरो पातक होइ छइ।"

हुँहकारी भरैत सिंहेश्वरीक बातकेँ मानि देवकान्त बजला-

"हँ-हँ, तिलकोरक साग तँ केत्तादिन खेने छी। मुदा चटनी नहि।"

जहिना नव काज केने, नव जगहपर पहुँचने वा नव लोकसँ दोस्ती भेने मनमे खुशी होइत तहिना दस बर्ख पहिलुका खेलहाक चर्च करैमे सिंहेश्वरीकेँ मनमे खुशी उपकलैन। मुस्कियाइत बजली-

"भैया, जहिना अरिकंचन-पातकेँ कदीमा पात वा आन पातक तरमे दऽ पतौड़ा बना आगिमे पकौल जाइ छै, तहिना तिलकोरो पातकेँ पकौल जाइए। जखन उपरका पात झड़ैक जाइ छै तखन बुझि जाइयौ जे तिलकोरक पात सीझ गेल हएत। ओकरा चूल्हि सँ निकालि चाहे पानिक बरतनमे दऽ दियौ नै तँ कनीकाल सराइ-ले छोड़ि दियौ। जखन सरा जाएत तखन ओकरा पतौड़ासँ निकालि सिलौटपर थकुचि कऽ पीसि लिअ। बहुत मसल्लाक काजो नै पड़ै छइ। चसगरसँ नून मिरचाइ दऽ दियौ। बस भऽ गेल। ओना, लोक भातोमे खाइए मुदा रोटीक तँ बुझियौ जे जहिना भातक दालि छी, तहिना रोटीक तिलकोरक चटनी छी।"

सिंहेश्वरीक बात सुनि तेसर ढकार करैत देवकान्त लोटा उठा पानि पीब बजला-

“किसुनलाल, बहुत खेलियह समानक आगू खेनिहार थोड़े ठठत। बड़ ओरियान केने छेलह।”

जहिना नीक विद्याथी बोर्ड वा युनिवर्सिटीमे टॉप केलोपर झुझुआइत जे दुइयो प्रतिशत नम्बर और रहैत तँ अस्सी प्रतिशत पूरि जइतए, तहिना किसुनलाल कहलकैन- “भाय साहैब, कनियोँ आर खाइयौ।”

आग्रह सुनि देवकान्त बजला- “हम कि कोनो राक्षस छी जे केतबो खाएब तँ पेटे ने भरत। मनुक्खक जे भोजन छिऐ से तँ खेबे केलौं। तूँ नै अन्दाज केलहक जे लोक केते खाइए। पेटेक कोन बात जे मनो भरि गेल। अच्छा एकटा बात कहह जे अपन गौंआँ के सभ ऐठाम, रहै छैथ?”

देवकान्तक प्रश्न सुनि किसुनलाल मने-मन सोचए लगल जे बम्बइ सनक शहरमे के केतए रहैए, ई भाँज तँ मात्र दुइए गोरेकेँ रहै छइ। पहिल जे काज नै करैए आ दोसर जे कोनो कम्पनीक एजेंसी करैत हुअए। बाँकीकेँ कोन जरूरत छइ। अठबारे छुट्टी होइए तइमे कि सभ करब, केते करब। कपड़ा-लत्ता खींचब आकि सप्ताह भरिक अधखरूआ नीन पुराएब, आकि दुनू परानी मिलि कोनो नव जगह देखए जाएब आकि भेँट-घाँट करब। तखन तँ ओहुना कियो-ने-कियो दर्शनीय जगहपर भेँट-घाँट भइये जाइ छैथ। गाम-घरक हालो-चाल बुझि लइ छी आ संग मिलि चाहो-पान कऽ लइ छी...।

अपन मजबूरीकेँ छिपबैत किसुनलाल बाजल-

“भाय साहैब, अहूँक जेठजन तँ परिवारे लऽ कऽ रहै छैथ, हुनकासँ सभ भाँज लगि जाएत। तखन हम एते जरूर कहब जे जइ करखानामे काज करै छी तइमे तीन गोरे छी। कहैले तँ उठे काज अछि मुदा सभ दिन काजो लगैए आ एकेठाम सात दिनक पगारो भेटैए। जइमे रबि दिनक सेहो भेटैए।”

देवकान्त- “औझुका तँ छुट्टी लिअ पड़ल हेतह?”

“किए छुट्टी लिअ पड़त। कोनो कि ओकर दरमाहाबला नोकरी करै छिऐ। औझुका बदला रबि दिन काज कऽ देबइ। कोनो की स्कूल-ऑफिस छी जे सोलहन्नी बन्न होइए। करखाना छिऐ, सभ दिन चलिते रहै छइ।”

“परिवार किए गामसँ लऽ अनलहक ऐठामसँ कमे खर्चमे गामक परिवार चलैए?”

“भाय साहैब, अहूँ अनठा कऽ बजै छी। गाम-घरक लोकक किरदानी नै देखै छिऐ जे ताड़ी-दारू पीब-पीब कि सभ करैए। अपन इज्जत अपने सोझहामे नीको होइ छै आ लोक बँचाइयो सकैए। तखन देखियौ, मनमे तँ ऐछे जे जखने गाममे रहै-जोकर, कोनो काज ठाढ़ करै-जोकर पूजी भऽ जाएत, तँ गामे चलि जाएब।”

“केते महिना बँचै छह?”

“एते दिन तँ बुझू जे कहुना कऽ गुजर केलौं मुदा आब छह महिनासँ गोटे मास हजार रुपैआ आ गोटे मास पनरहो सौ बँचि जाइए।”

“बैंकमे जमा करैत जाइ छह किने?”

“बैक जाएब से छुट्टी होइए। एजेन्ट-फेजेन्ट तँ ढेरी अबैए मुदा ओकरा सबहक भाँजमे नइ पड़ए चाहै छी।”

“कमो पूजीसँ तँ गाममे काज चलै छै आ बिनु पूजियोक चलै छइ।”

“हँ से तँ चलै छइ। जेकरा अपन कारोबार नै छै ओ दोसराक काज करैए। मुदा देखिते छिऐ जे केते बोइन दइ छइ। तहूमे आब कहुना-कहुना दुनू परानीमे आठ हजार महिना उठबै छी, ऐठाम महगी अछि तँए कम बँचैए। मुदा गाममे तँ कम-सँ-कम ओते कमाइ हुअए जे जहुना गुजर कटै छी तहुना पूरा सकी।”

“अपन की अन्दाज छह जे केते दिनमे पूरा लेबह?”

“जँ भगवान नीकेना रखलैन तँ डेढ़-दू सालमे जरूर पूरि जाएत। अहाँक भाय-साहैब सबहक दोसरे दिन-दुनियाँ छैन।”

‘भाय साहैब’क नाओं सुनिते जहिना भरल पेटक गरमी होइ छै तहिना देवकान्तकेँ फुकि देलकैन। मुदा अपनाकेँ सम्हारैत बजला- “सुथनी

भाय-साहैब! मन भेल जे कनी बम्बै देखी, दरभंगामे टिकट कटेलौं चलि एलौं। तोहर नाओं-ठेकान लऽ नेने रहिहह तँए तोरा डेरापर चलि एलौं। भइये छिआ तँ की, ओइसँ सतरह-बर नीक तूँ छह। कम-सँ-कम समाज बुझि सुआगत तँ केलह।”

अपन प्रशंसा सुनि किसुनलाल विह्वल भऽ गेल। बाजल-

“भाय साहैब, ओते तँ कमाइए ने अछि जे अइल-फइलसँ खर्च करब, मुदा समाजक जँ कियो डेरापर औता तँ अनका जकाँ मुँह नै घुमा लेब।”

किसुनलालक सह पबैत देवकान्त बजला-

“किसुनलाल, जखन परिवारे सभ कोकैन गेल तँ समाज केहेन हएत। मुदा तँए सोल्होअना परिवार कोकनियेँ गेल सेहो बात नइए। जाबे धरतीपर धर्म नै छै ताबे चलै केना छइ।”

किसुनलाल-

“भाय साहैबक भेँट करबैन की नहि?”

“मन तँ एको पाइ नइ अछि मुदा जखन ऐठाम आबि गेलौं तखन नहियोँ भेँट करब उचित नहियेँ हएत। तोरा तँ हुनकर मोबाइल नम्बर बुझल हेतह किने?”

“हँ, से तँ लिखल अछि। मुदा मोबाइल अपना कहाँ अछि?”

“बुथपर सँ तोहीं कहि दहुन जे देवकान्त गामसँ एला अछि। जँ गप करए चाहता तँ अपने कहथुन, नहि तँ जानकारी तँ भेटिये जेतैन।”

भायपर बिगड़ल देखि सिंहेश्वरी देवकान्तकेँ पुछलकैन-

“भैया, एना खिसियाएल किए छथिन?”

देवकान्त-

“कनियाँ, की कहब! कहैले तँ पाइ-कौड़ीबला कहबै छैथ। तहिना घरक घरोवाली छथिन। अपना तँ कनी-मनी कुल-खनदानक लाजो होइ छैन मुदा घरवाली जे छैन ओ भगवानेक देल..!”

सिंहेश्वरी- “जखन अपने नीक छैथ तखन हुनकर घरवालीसँ कोन

मतलब छैन?”

देवकान्त-

“मतलब पुछै छी। की कहब, बजितो लाज होइए जे एके परिवारक छी तखन एना किए बजै छी। मुदा नहियोँ बाजब सेहो तँ गलतिये हएत। अपने जे भाय साहैब छैथ से ने मरदे छैथ आ ने मौगीए। बलिगोबना छैथ। जहाँ किछु बाजए लगता आ पत्नीक आँखिपर नजैर पड़तैन आकि बोलीए बदैल जाइ छैन।”



शब्द संख्या: 1835

एकोटा ने

पुरमपुर गाममे पुरन कक्काक परिवारकेँ गौंओँ आ अनगौंओँ पुनचन परिवारसँ जनै छैन। ओना, अस्सियो बर्खक अवस्थामे कहियो पुरन काका कनमा-कनइ नै पढ़लैन मुदा कनमा-कनइक किरदानी देखि-देखि सदिकाल क्षुब्ध जरूर रहै छैथ। गड़े ने बैसै छैन जे जे वस्तु तराजूपर रखि बटिखाड़ासँ तौलल जाएत ओ जँ बँटाइत-खोंटाइत पौआ-कनमा होइत रत्ती-माशामे चलि जाएत। खाएर ओ तँ चलि जाह, मुदा दुनियाँक एते नमहर धरती केना बँटाइत-खोंटाइत कनमा-कनइ होइत फनइ दिस पहुँच जाइए? वादलक किरदानी की पतालक पानि सोंखि लेत? जँ सोंखउ चाहत तँ राखत केतए? हवा-बिहाड़ि केत्तेकाल अँटका कऽ रखि सकैए। खाएर जे हौउ मुदा करैला लत्तीक मचान जकाँ अपना परिवारकेँ पुरन काका बनौने छैथ।

जहिना सक्कत-कड़गर बीआ धरती धारण करिते, दियारीक तेल-बाती जकाँ अपन तिल-तिल अर्पित करए लगैत अछि, तहिना ने करैलोक बीआ केने अछि। वएह अँकुर ने धरती धारण करैत ऊपर आबि लत्ती बनि लतड़ैए। भलेँ पातर-छीतर कड़चीक आलनक संग मचानपर किए ने पहुँचैए। तँए कि ओ अपन शरीरक रक्षा करैत, अपन मुँह बँचबैत नै पहुँचैए? जरूर पहुँचैए।

पुरन कक्काक परिवारोक सभ तेहने छैन जे अपनामे जँ घंघौज होनि मुदा काकाकेँ लग पहुँचते सभ सकदम भऽ जाइ छैथ, किएक तँ सभ बुझै छैथ जे अगियाएलमे हँसियो हिहिया कऽ धड़ै छइ। तँए जहिना रस्तापर ऐंठैत-जुठैत चलैबला साँप बोहैरमे प्रवेश करिते सोझ भऽ जाइए तहिना कक्काक सोझहामे परिवारक सभ सदस्यक चालि-बेवहार सोझ भऽ जाइत अछि। ओना, बिनु पैरक चलैबला साँप माटिपर चलि केना सकैए। मन-चित्त मारि पुरनो काका राति-दिन परिवारेक पाछू लगल रहै छैथ। अखनो मनमे ओहिना ओ बात तरगरे छैन जे वीर भोग्या बसुंधरा..,

माने जे ऐ धरतीसँ प्रेम करत ओकरे ई कखनो प्रेमी बनि तँ कखनो माए-बहिन बनि चुम्मा लेत।

चेतनसँ बालबोध धरिक परिवार पुरन कक्काक छैन। सबहक बीच तालो मेल अजीव छैन। चेतन सभ जहिना पुरन काकाकेँ गारजन बुझि छुट्टी नेने रहै छैथ तहिना तँ बालो-बोध सभ अपन बाबा बुझि अपने सभ किछु बुझैए। परिवारक सभसँ छोट बच्चा चारि सालक छैन। तालो-मेल नीक छैन।

अँगनाक सभ समाचारक समदिया रहितो संवाद-बाहकक काज बच्चा सभ करिते छैन। एहेन चेला भेटबो मोसकिल, मुदा से तँ छैन्हे। नवका दोस्तियारे तँए बेसीकाल एकठाम रहने चाहो-बिस्कुट संगे करै छैथ, खुशी रहै छैथ। पुरन काका ऐ दुआरे खुशी रहै छैथ जे अपन बात पहिने उसारि, भरि दिन गप सुनैले दिनमा तैयार रहैए। आ दिनमाक खुशीक कारण अछि जे आँखि-कान तँ तखने ने काजक बनतै जखन ओकरासँ काज कराएत। नइ तँ गमे-गमे गेड़ी बनि जाएत। मुदा से कहाँ होइ छै, एक काने सुनैए आ दोसर कान देने उड़ि जाइ छइ। उड़ैत-उड़ैत सुतली रातिमे सभटा उड़ि जाए छइ।

वसन्तक आगमन भऽ गेल। किछु दिन पहिने तक जे मौसम जाड़सँ जड़ियाएल छल, पालासँ पलाएल छल, ओ आब फुरफुरा कऽ उठल। सुखाएल-सड़ल लत्ती आ कुमही जकाँ पबिते वसन्ती हवामे उड़ए लगल। बेदरंग भेल धरती, घर-आँगन जकाँ बाहरै-सोहरै लेल इशारा दिअ लगल। रसे-रसे रस भरल हवाक रमकी रमकए लगल। जहिना सेवा निवृत्तिक समय कोनो अफसरकेँ स्वर्ग सुझैत तँ कोनोक आगूमे नांगट नर्कक नाच होइत, तहिना शिशिर–सिरसिराइत समय–वसन्तक बीच हुअ लगल। मुदा से बात पुरन कक्काक परिवारमे नै छैन। कोल्हुक बरद जकाँ परिवारक सभ सदस्य अपने-अपने नाचक पाछू भरि दिन लागल रहै छैथ।

दिन उगिते दिनमा, बाइस खा माटिक बनौल जत्ताक दुनू पट्टा दुनू हाथमे नेने दरबज्जाक आगूमे बैस, रस्ताक धूरा-गरदाकेँ जत्तामे पीसए लगल। बिनु देखनौं आशा बनले रहै जे बाबा दरबज्जेमे छैथ। सुतल छैथ कि जागल छैथ, तइसँ कोन मतलब दिनमाकेँ। ओ तँ अपन काजमे बेहाल

अछि। मनमे रहबे करै जे चाहक बेर भऽ गेल अछि माए चाह आनि देबे करतैन, हमहूँ जा कऽ पीबे करब। दिनमाक एहेन बिसवास किए ने रहतै, परिवारक बोझसँ दबल थोड़े अछि जे नून नै अछि, तेल नइ अछि आकि केसक तारीखपर जाए पड़त...।

जहिना तत्त्व-वेत्ता तत्त्व-चिन्तनमे रमल रहैत तहिना दिनमा अपन काजमे हेराएल रहैए। कोन मतलब ओकरा छै जे बुझत काजक हेराएल अधखरूआ रहि जाइए।

माइक हाथमे चाह देखिते दिनमा, जत्ता छोड़ि आगूए आगू दरबज्जापर ऊपर चढ़ल।

दिनमापर नजैर पड़िते पुरन काका मुस्की दैत बजला-

"की दिनबाबू, चाहो-ताहक बेर भेलै की नहि?"

तैबीच चाह नेने पुतोहु पहुँच पुरन कक्काक लगमे गेलैन। दिनमाक नजैर देबालमे टाँगल हनुमानजीक छातीक रामपर पहुँच गेल। फोटो देखि दिनमा बाजल-

"बाबा, उ फोटो उतारि दिअ।"

दिनमाकेँ पोल्हबैत पुरन काका बजला- "बौआ, पहिने चाह पीब लिअ पछाइत ई सभ हेतइ?"

दिनमाकेँ जेना बुझले रहै तहिना बाजल-

"पहिने अहाँ पीब ने लिअ, पाछू हम पीअब।"

बहन्ना पकड़ाइत देखि पुरन काका बजला-

"अखन हमरा हाथमे गिलास अछि केना उतारल हएत?"

चाह पीब, खिड़कीपर रखल खुरपी उतारि पुरन काका बाड़ी दिस विदा हुअ लगला। हाथसँ खुरपी छिनैत दिनमो आगू-आगू विदा भेल। दारीमक बाड़ी पहुँच पुरन काका हिया-हिया हियबए लगला तँ बुझि पड़लैन जे दारीमक जड़िमे पानिक अभाव अछि। मुदा गाछक डगडगी आ लदल फूल देखि मन ललिया गेलैन। लाल-लाल फूलसँ लदल गाछ। सभ डारिमे फूल फुलाएल।

खुरपी नेने दिनमा खाधि खुनैक जगह हियबैत रहए। आ पुरन काका फूल सभकेँ हिया-हिया देखैत हरियाएल-हरियाएल फड़ो सभपर नजैर पड़लैन। मन भेलैन जे जेतबे-तेतबे जड़ि सबहक खढ़ उखाड़ि दिऐ। मुदा नजैर दारीमक काँटपर गेलैन। डारिये काँट भऽ जाइए। ऊपर-निच्चाँ सगतैर काँट। जखने अपने खढ़ उखाड़ए लगब तखने दीनमो किछु-ने-किछु करइ लगत। तहूमे खुरपी हाथेमे छइ। तेहेन झाड़ी अछि जे सुगबा साँप जकाँ माथमे गड़तै कि गरदेनमे गड़तै तेकर कोन ठेकान। जखने काँट गड़तै की कानब शुरू करत। जखने कानत तखने ओकरा चुप करब आकि गाछक जड़िक खढ़ उखाड़ब...।

समझौता करैत पुरन कक्काक सोझमे दोसर काज एलैन। काज ई जे फड़क गिनती कऽ ली...। हाथक खुरपी आड़िपर रखि दिनमाकेँ कोरामे उठा काका कहलखिन-

“बौआ, अहाँकेँ नेने हम टहलब आ अहाँ फड़ गनब।”

नव फड़क गिनतीक काज देखि दिनमाक मन खुशीसँ आरो खुशिया गेल। मुदा मनमे एलै जे कट्टा भरि झाड़ीक बगानमे पचासोसँ ऊपर गाछक फड़ केना गनि लेब? तहूमे बीसे तक गनल होइए? तैबीच पुरन काका गाछक सभ फड़केँ अपने हिया-हिया देखए लगला। मनमे उठलैन- फड़क बीच कीड़ोक असर भेल अछि कि नहि, सेहो देखि ली। एक्केटा गाछक फड़ देखि काका अन्दाजि लेलैन जे केते हएत। जहिना गोल-गोल, किछु नमती नेने लाल-लाल फूल हरियर होइत अपन जिनगीक फल पकैड़ रहल अछि, तहिना तँ गोटि-पँगरा करुआएल आमक आकार सेहो पकैड़ रहल अछि।

एकसँ दोसर गाछक फड़ गनैमे दिनमा बेर-बेर बिसैर जाए। कखनो गिनतिये छुटि जाइ तँ कखनो अंके बिसैर जाए। अनेको परियासक बीच एक्को बेर दिनमा बीससँ ऊपर नै बढ़ल।

तैबीच काका पुछलखिन-

“बौआ, केते फड़ भेलह?”

बाबाक प्रश्न सुनि दिनमाक मुहसँ निकैल गेल- “दसटा।”

“अच्छा बड़बढ़ियाँ। आबसँ एत्तै आबि कऽ खेलिहह। ओगरवाहियो भऽ जेतह आ खेलबो करबह।”

नीक फसल भेलैन। खाइ-जोकर फल हुअ लगल। फड़ फल बनि गेल। ओना, सजमैन फड़क-फड़े रहि जाइत अछि। मुदा दारीम, आम, लताम इत्यादि फड़सँ फल बनि जाइत अछि। अन्तिम अवस्था अबैत-अबैत तुबि-तुबि फल अपने खसए लगल।

गाछक सभ फल समाप्त भऽ गेल। जहिना परसौती जनानीकेँ देख-भालक जरूरत पड़ैए तहिना ने वाड़ियो-झाड़ीक अछि। ई सोचि पुरन काका दिनमाक संगे दारीमक गाछ लग पहुँचला। पहुँचते देखलैन जे जे गाछ कहियो फड़-फूलसँ लदल छल ओ आइ सून-सून भेल अपन बेथा सुना रहल अछि..!

बेथित मने काका दिनमाकेँ पुछलखिन-

“बौआ, केते फड़ अछि?”

विचलित होइत दिनमा बाजल-

“एकोटा ने।”

“ऐ लेल विचलित किए होइ छी। जहिना समय आएल छेलै तहिना फेर औत।”

“केना औत?”

“समय अनुसार एकर ताक-हेर करैत रहब तँ एबे करत।”



शब्द संख्या: 1149

धोतीक मान

जहिना तेहैया बोखार तरे-तर अबितो आ जाइतो गहियेने रहैत तहिना लाल काकार्कें तीन दिनसँ विचित्र सोग गहि कऽ पकैड़ लेलकैन। ओना, जखन कोनो काजक अनमेनामे लगि जाइ छैथ तखन छोड़ियो दइ छैन। मुदा काज बदैलते पुन: आबि जाइ छैन। मुदा कहबो केकरा करथिन, घरेलू सोग छिऐन। सोगो तेहेन जे जहिना तिआरि जालमे माछ फँसि जाइत, जे ने बंशी जकाँ जे बोरक सुगन्धसँ फँसि जान गमबैत आ ने सहतक ठनका जकाँ मरैत। मुदा तैयो तँ घाउ लगले छैन।

लाल कक्काक सोगक दोसरो कारण छैन। ओ ई छैन जे दुनू परानीक बीच ने कहियो वैचारिक संघर्ष भेल छेलैन आ ने रक्का-टोकी। मुदा आइ ओ सद्य: भऽ गेलैन।

बात किछु ने, बुढ़िया फूसि। मुदा सोग तेहेन जे रोगेनहिटा नहि, सोगेनौं छैन। जइसँ कोनो काज करैमे मने ने लगए दइ छैन।

तीन दिन पहिने जखन सढ़ुआरेसँ भरपूरा नोत, एलैन तखनेसँ सोगक आक्रमण लाल काकापर भेलैन जे गहिया कऽ धेने छैन। ने छोड़ैत बनै छैन आ ने पूरैत। साधारण जिनगी जीबैक अभ्यास तँए पाइ-पाइक हिसाब जोड़ि समुचित काज करैत जिनगी चैनसँ चलैत रहै छैन। मुदा गतिक अनुकूले आमद-खर्च रहने भातक उजरा आँकर जकाँ दाँत तर खटखटा रहल छैन, जे आँकरक संग भातो फेकए पड़तैन। नजैर उठा कऽ देखैथ तँ सोझहेमे देखि पड़ैन जे भारमे धोतीक खर्च वाह्ययात अछि, किएक तँ धोतीक मान तँ ओइ समय सर्व-सम्मैत छल जखन एकाधिकार वेपार जकाँ छल, मुदा जैठाम दू साए रुपैआक धोती लऽ जाएब तैठाम कियो पहिरनिहार नै अछि, मांगलिक काज छोड़ि धोती म्यूजियमक वस्तु बनि गेल अछि। अपन तँ दू दिनक कमाइ दहा जाएत। मुदा पत्नी तँ मानती नहि। अपना सीमामे सभ बताह होइए, भलेँ आन सीमामे नाँगैर पटपटबए आकि दाँत चिआरए। मानबो उचित नहियेँ। किएक तँ पत्नीक मान तँ

परिवारमे दादीक छैन। बाबा-दादाक पकिया संगी। शुभ काजक शुरूहेमे खट-पट भेने कहीं अन्त धरि ने खटपटाइते रहि जाए, तेकर डरो रहैन...।

मुदा तैयो विचारि लेब जरूरी बुझि लाल काकीकेँ पुछलखिन- “काल्हिये ने नोत पूरए जाएब। आइए ने सभ ओरियान-बात कऽ लेब?”

लाल काकी कहलखिन- “घरक ओरियान ने हम करब, हाटो-बजारक हमहीं करब?”

लाल काकीक चढ़ल तर्क देखि लाल काका दोहरौलैन- “बजारक काज की सभ अछि?”

“आर किछु ने अछि। खाली जोड़ भरि धोती आ अँगा-गमछा कीनि लेब।”

लाल काकी आढ़ैत सुनि लाल काका मने-मन जोड़ैथ तँ देखि पड़ैन जे कियो धोती पहिरनिहारे परिवारमे नै अछि, जखन धोती नइ, तखन कुर्ता आ गमछा तँ सुखल नून-चूड़ा भेल। केतबो हएत तँ जलखैइए। मुदा रहैथ तँ बेवस। पुछलखिन- “आब कि कोनो भार-दौर चलै छै जे ई सभ लऽ जाएब?”

लाल काकाकेँ चिलहोरि जकाँ झपटैत लाल काकी बजली- “एक तँ चाउर दहीक बदला रुपैये लऽ जाएब मुदा नव वस्त्रो नै लऽ जाएब से केहेन हएत?”

बजैत लाल काकीक आँखिसँ नोर ढवढबए लगलैन। फटैत छातीक दरद बाँसक झाँझन जकाँ झनझनाए लगली- “बहिन मरमा मरिये गेल, मुदा अन्तमे मुँह नै देखि पेलौं। भगवानो तेहेन छैथ जे सभटा दुख ओकरे घरमे देलखिन। चढ़ल जुआनी दुनू परानी मरल, अढ़ाइ बर्खक मइटुग्गर-बपटुग्गर बेटाक बिआह छिऐ, तेकरा पाँच हाथ वस्त्र हमहूँ नै देबै तँ दुनियाँमे के देतइ?”

❑ शब्द संख्या: 480

साझी

गामक पहिल घटना तँए गाममे विचित्र हलचल भोरेसँ उठि गेल। उठबो केना ने करैत, अखन धरि तँ इतिहासो यएह कहलक आ समाजो सएह। मुदा घटना बदलने इतिहासक रस्तो बदैल जाइ छै आ बहिला समाज सेहो बाह पकड़ै छइ। विचित्र हलचलक कारण भेल विचित्र घटना। विचित्रक कारण भेल चित्र विचित्र बनि गेल, तँए गामक सबहक मनकेँ कुचित्र सुचित्र बनबए लगल। जेहेन जेकर रंग-गाढ़ तेहेन तेकर चित्र गढ़गर। तँए एक रंगाह नै भेने आरो बेसी हलचल। मनक प्रेम तँ तखन ने बढ़ै छै जखन अनुकूल प्रेमी भेटै छइ। प्रेमियो कि कोनो एक्के रंगक होइए जे ओहीपर नजैर पड़तै आ नजैर पड़िते धारक पानि जकाँ मोटाए लगतै। जँ से नइ हेतै तँ जेहो छै तइमे सँ किछु रौदमे उड़तै, किछु धरती पीतै आ किछु लोको घटौतै, जहिना बिलंबसँ चलैवाली गाड़ी टीशने-टीशन विलैमते चलैए, भर्लें कुमेल भेने रस्ता-बाटमे छोड़ि आन-आन दौड़ैत चलैए...।

ओना, गामक विचित्र घटना देखि सबहक मन उड़ैत मुदा जिनगीक काज पकैड़-पकैड़ हटबैत गेल। मुदा केतबो हटल तैयो तँ बाँकीए रहि गेल, सोलहन्नी नहियेँ हटल। नहियेँ हटल तँ की हेतइ? अदहासँ बेसी तँ रहिए गेल, तँए बहुमतेसँ ने समाज, देश सभ चलै छइ। तखन गामेमे कोन उनटन भऽ गेलै जे गाम-समाज नै चलतै। मुदा गामो तँ सोलहन्नी मरिये नै गेल अछि जे कियो नामो लइबला नै रहतै। से तँ अछिए। सेहो तेहेन अछि जे हजार कानकेँ एक्के बेर भरि देत। जहिना पूजा करब काज छी तइसँ कि हल्लुक काज फूल तोड़ब थोड़े छी। जखन नै छी तखन किए दुनू दू रंग हेतइ।

चौबट्टी परहक इनारक चलती सभसँ बेसी भऽ गेल। नवकी पनिभरनी सभ थैर-गोबर छोड़ि-छोड़ि पहिने पानियेँ भरए इनारपर पहुँच गेली। मुदा तँए कि पुनियोँ दादी आ घुरनियोँ दीदी ओहने अगुताएल छैथ जे पहिने पानियेँ भरए पहुँचती। एक तँ बेटा-पुतोहुकेँ डाकैन देती जे ऐसँ

निपुत्रे नीक, ने तँ ऐ चौथापनमे अपने घैल उठाबी। तहूमे नवका आगि गाममे पजरल। माघमे जँ अनको धधगर घूर भेटए तँ ओकरा छोड़ि देब बेवकुफीए छी, भलेँ अपनो धिया-पुता किए ने घरमे कठुआ जाए। ओना, दुनू गोरेक घर इनारसँ बहुत हटल नहि, मुदा लग-दूर कोन बात भेल। लगोक बाटमे दसटा गप करैबला भेटल तँ बेसीए समय लगत आ नहियेँ भेटने दूरो लग भऽ जाइ छइ। सएह दुनू गोरे–पुनियाँ दादी आ घुरनियाँ दीदी–केँ भेलैन। जवाबदेहियो तँ कम नहियेँ छैन अनकर बातसँ ऊपर उठा अपन बात नै रखती तँ पुनियाँ दादी आ घुरनी दीदी कथीक। तइसँ नीक तँ नवकीए, जे कम-सँ-कम अपनो हित-अपेछित लग रसगर बात बजै छैथ।

संजोग तँ संजोगे छी, चाहै काज करैक संजोग हुअए आकि भोज खाइक, नीके होइ छइ। भलेँ ओ चालि बदैल कुसंजोगे किए ने भऽ जाए। पूबसँ पुनियाँ दादी आ दच्छिनसँ घुरनी दीदी पहुँचली। पुनियाँ दादी घुरनी दीदीसँ जेठ। तँए जेठक आदर करैत घुरनी दीदी इनारपर चढ़ैसँ पहिने स्वागत करैत पुनियाँ दादीकेँ टुसि देलखिन-

“जहिना पाबैन दिन परिवार हड़बड़ा जाइए तहिना दादीकेँ देखै छिऐन!”

अपन स्वागत देखि पुनियाँ दादीक मन खुशीसँ खुशिया गेलैन। टुटल दाँतक मुहसँ मुस्की दिअ लगलखिन। अखन धरि पुनियाँ दादीकेँ धेनहि जे गामक बात हमरा छोड़ि दोसर बुझबे ने करैए। भलेँ सात पुतोहु हाथे मारि-गारि किए ने खाइत हेती। खाएर.., पुनियाँ दादी पहिने आँखि उठा इनार दिस तकली तँ बुझि पड़लैन जे जिज्ञासु बेसी अछि। घुरनी दीदी दिस देखैत बजली-

“गै घुरनी, कहुना भेलेँ तँ बेटीए भेलेँ, आइ-काल्हिक नव-नौतुक हमर-तोहर बात सुनतौ। देह देखि सभ अपने मोटाएल अछि। मुदा तोरा नै कहबो से केहेन हएत...।”

जिज्ञासा भरैत घुरनी दीदी मलसारि दैत बजली-

“कोनो तेहेन गप छैन दादी?”

पुनियाँकेँ सभ दादी कहैत आ घुरनीकेँ दीदी। ओना, उमेरोक

हिसाबसँ उचिते छइ। मुदा दुनू गामक पुतोहुए बनि गाम आएल छैथ। दीदीक आदरसँ दादी आरो अह्लादित होइत। जहिना संज्ञाक संग सर्वनाम, विशेषण आदि सभ अगुआ-पछुआ बनि रथकेँ खिंचैत तहिना दादीक मनमे सेहो उठलैन। सोझहे बजैसँ नीक बुझि पड़लैन जे अलंकार-छन्द बनबे किए कएल जखन ओकर बेवहारे नै हेतइ। अलंकार शैलीमे दादी गामक चौहद्दी बान्हि बाजए लगली-

"एहेन अतहतह तँ एक गामक के कहए जे परोपट्टामे केतौ ने देखै छी, जे..?"

दादीकेँ विह्वल होइत देखि दीदीक जिज्ञासा तेज भेलैन। लपैक कऽ पुछलखिन- "से की, से की दादी?"

जहिना आमक गाछक डारिमे पाकल आम देखि झमाड़ि-झमाड़ि डोला पाकल आम खसबए चाहैत, मुदा डोलौनिहार ई नै बुझि पबैत जे पाकले खसत आ काँच नै खसत। हँ एहनो होइ छै जे बेसी पाकलक डण्टीक रस सुखने असानीसँ खसैत मुदा जे डमहा पाकल छै ओ तँ ओहिना छै जहिना डमहा काँच होइ छइ। तहिना दादीक मन छगुन्तासँ छनकैत रहैन जे एहेन तँ केतौ ने भेल से गाममे केना हएत। मुदा भऽ तँ गेल!

भेल ई जे ज्ञानचन काकाकेँ तीन बेटा आ दू बेटी छैन। तीनू बेटा पढ़ि-लिखि कऽ आने जकाँ नोकरी करए गाम छोड़ि देलैन। भीन भऽ गेलखिन कि साझीए-मे से नै कहि, मुदा ज्ञानचन काकाकेँ एको पाइ मदैत नै केलखिन। ओना, तीनू भाँइ ऊपरा-ऊपरी पढ़लो-लिखल छैथ आ नीक नोकरियो छैन। पहिल बेटी डॉक्टर पतिक संग सेहो बाहरे रहै छथिन। छोट बेटी वैधव्य भऽ गेलैन। असमय बेटीकेँ विधवा भेने ज्ञानचन काकाकेँ जबरदस धक्का मनमे लगलैन। अपनोसँ बेसी काकीकेँ लगलैन। एहेन कोन माइक छाती हएत जे अपने सुहागिन आ बेटीकेँ वैधव्य देखए चाहत। मुदा उपाइये की! दुखक तँ सभसँ पैघ दबाइ नोर छी। जेते नोर झड़त तेते भारी दुख मेटाएत।

जहिना रेहीक संग मक्खन, छालही मोहि आगिपर लोहियामे चढ़ा

घी बरकौल जाइत से दादीकेँ बरकौले ने होनि तँए क्षुब्ध रहैथ। बजली-

“आब तँ अपनो उमेर ढेरी भेल तैपर नाना-जनम एहेन काज नै देखने छेलौं से गाममे देखै छी।”

दादीक बात सुननिहारकेँ आरो जिज्ञासा बढ़ा देलकैन। एक्के-दुइए सभ पनिभरनी एक्के बेर दादीपर जोर देलकैन। थकथकाइत दादी बजली-

“ज्ञानचनक तीनू बेटा–रूपचन, गुनचन आ विचारचन–केँ जखन नोकरी छुटलैन तखन गाम आबि साझी भऽ गेलखिन।”

दादीक उत्तरसँ दीदी संतुष्ट नै भेली, मुदा संतोष नै भेलैन तँए पूरक प्रश्न केलखिन-

“तइसँ पहिनहि भीन भेल छेलखिन?”

दीदीक प्रश्नसँ दादीकेँ क्रोध उठलैन, बजली-

“जेना लोक केबाड़ चौकी काटि-काटि बँटबारा करैए तेना होइतै तखन बुझितहक। आकि मनुक्खकेँ इशारा होइ छइ। मझिला बेटा अपन बेटीक बिआहमे चालीस लाख रुपैआ खर्च केलकै मुदा छोटका भाएकेँ पाइ नै देलकै तँ नून-तेल लगा केलक। की यएह सझिया भैयारी छिऐ?”

दीदी बजली-

“तखन तँ कमाइयो ने सबहक सभ रंग हेतै, ओ केना मिलौत?”

तैपर दादी बजली-

“सएह ने देखहक। जेकरे बेसी छै सएह पहिने कहलकै जे हमरा एते अछि, सभ मिला कऽ परिवार चलौ।”



शब्द संख्या: 998

सतभैंया पोखैर

पोखैर कहिया खुनौल गेल आ के खुनौलैन ई मिथिलांचलक इतिहासे जकाँ अखन धरि हेराएले अछि, मुदा एते गामक सभ मानैए जे पोखरिक बतारी ने एकोटा गाछ-बिरीछ अछि आ ने आन कोनो चीज। ओना, पोखैर नमहर रहने रंग-बिरंगक खिस्सा-पिहानी अछिए। कियो दैंतक खुनल कहैए तँ कियो राजा-रजबारक। मुदा जे हौउ, हजार बर्खसँ ऊपरक पोखैर जरूर अछि, जे सभ मानैए। शुरूमे पोखरिक महार जेहेन रहल हुअए मुदा अखन झड़ि-झूड़ि गेल अछि आ पोखरिक पेटो गदियाह भऽ गेल अछि।

गाममे एकेटा यएह पोखैर अछि, मुदा एहेन अछि जे एते सघन गाम रहितो पोखरिक अभाव गौंआँकेँ नै हुअ दइ छैन। चाकर-चौड़गर पेट अखनो ऐछे, मुनहर जकाँ दर्जनो ठेक-बखारी सदृश...।

गाममे सभसँ पुरानो आ झमटगरो परिवार मात्र सतभैंयाकेँ रहलैन। पोखैरो हुनके सबहक छिऐन। केना भेलैन से तँ नीक जकाँ किनको नै बुझल अछि मुदा जहियासँ देखै छी तहियासँ हुनके सबहक कब्जामे रहलैन अछि। ओना, पोखैर तँ गामे-गाम अछि मुदा आन गामक पोखैरसँ ऐ पोखरिक अलग पहचान अखनो अछिए। ने एते नमहर कोनो गामक पोखैर अछि आ ने चौबगली महारक घाट। एक्के घाट रहने पारो नहियेँ लगैत जेना आन-आन गामक पोखैरमे अछि। आन गामक पोखैरमे बड़ बेसी अछि तँ एकटा-दूटा घाट अछि। एकटा मरद आ दोसर जनाना लेल। तहूमे रंग-बिरंगक बेवहार बनल अछि, जइक चलैत जँ कहियो गाममे आगि-छाइ लगै छै तँ गामे सुन भऽ जाइ छै, मुदा एकोटा पोखैर रहने आइ धरिक इतिहासमे कहियो ऐ गाममे एना नै भेल अछि। ओना, गामक बनाबटो आन गामसँ भिन्न अछि। केते गाम पूबे-पछिमे सूर्यमण्डल-गढ़ैनक बनल अछि जइसँ पूर्बा-पछबाक झोंकमे आगि लगिते धुआ-पोछा जाइए।

बिनु जाठिक पोखैर रहने अनगौंआँ तँ पोखैर मानबे ने करैत मुदा

पोखरिक सभ काजक पूर्ति तँ होइते अछि, तँए गौंआँ लेल धैनसन। कियो अनगौंआँक गपपर धियानो ने दइत। सभ यएह मानि चलैत जे कियो अपन मुँह दुइर करैए। नीककेँ अधला कहने थोड़े अधला भऽ जाएत आ अधलाकेँ नीक कहने थोड़े नीक भऽ जाएत। जँ एहेन बजनिहार अछि तँ ओ अपन मुँह दुइर करैए। सभकेँ अपन-अपन गुण-धर्म होइ छै, से तँ अछिए। चारू महार घाट रहने सबहक काजो चलिते अछि। तहूमे आन गाम जकाँ कोनो रोक-राक ऐछे नहि, जे ई घाट पुरुखक छिऐ तँ ई घाट जनानाक, ई फल्लाँक खुनौल छिऐन तँए दोसरकेँ नहाए देथिन कि नहि से हुनकर मन-मरजी छिऐन। कियो जाठि गाड़ि पोखरिक पहचान बनौने छैथ तँ छैथ। पोखरिक पहचान भलेँ जाठि हौउ, मुदा झील-सरोवर आकि धारमे जाठि कहाँ रहैए। तँए कि ओकरा कुमार कहि कात कऽ देबइ। आम खेनिहारकेँ आम चाही आकि ओ गाछ-गाछी गनत। हँ, ई बात जरूर जे आमक गाछ केना होइ छै, केना लगौल जाइ छै, केना ओकर सेवा कएल जाइ छै एकर जानकारी रहक चाही। जइ जाठि लऽ लऽ अनगौंआँ नचै छैथ ओ तँ ईहो कहता ने जे जाठिक काज की होइ छइ? जँ बीच पोखरिक पानिक नाप मानल जाए तँ जइ पोखरिक किनछैरेमे उपयोग करै-जोकर नहाइ-धोइक पानि रहत, ओकर बीचक नाप नपैक जरूरते की रहत? ओहन पोखरिक मानियेँ केते हएत जे एकटा घाट–जे भलेँ सिमटीए-ईटाक किए ने हौउ–बना बाँकी भागमे मोथी रोपि खेत बना लेब आ जँ कहीं गाममे आगि लागत तँ छूत-अछूत कहि गामे जरा देब, मुदा आगि लगबे ने करै से ने सोचब आ करब। जनियेँ कऽ पोखैरकेँ अघट बना दुइर कऽ लेब, नहाइ-धोइ-जोकर नै रहए देब तँ ओइमे दोख केकर? खाएर जे हौउ, मुदा चारू महार घाटो आ बिनु जाठिक पोखैरो तँ अछिए।

शुरूहेसँ गामक सतभैंया परिवार जोतल-चौकियौल खेत जकाँ समतल रहल अछि। ओना, बीच-बीचमे बाढ़ि-भुमकममे थोड़-बहुत उभर-खाभर बनबो कएल तँ ओकरा पुन: सेरिया समतल बना लेल गेल। मुदा भविस दिस नै देख, भूते दिस देखने तँ भूत लगबे करै छइ। मुदा तेकरो भगबैक तँ उपाय होइते अछि।

बाबेक अमलदारीसँ सतभैंया अपन परिवारक पहचान परोपट्टामे

बनौने रहल अछि। ओना, सात भाँइक भैयारीमे तीन भाँइक परिवार नावल्द भऽ गेलैन जइसँ ऐगला पीढ़ी अबैत-अबैत सातसँ चारि भैयारी रहि गेल। सात भाँइसँ सतरह हेबा चाहै छल से नै भऽ चारिपर उतैर गेल, तेकर कारण भेल जे एक भाँइ बेटीक बाढ़िमे दहा गेला। ढेनुआर नक्षत्र जकाँ बेटीक आगमन जोड़ा-पल्ला जे आबए लगलैन से ठीके सातसँ सतरह तँ नहि, मुदा एकसँ एगारह जरूर भऽ गेलैन। मुदा एकसँ एगारह होइतो हुनकर मुँह कहियो मलीन नइ भेलैन। मनक विश्वास अन्त धरि बनले रहि गेलैन जे प्रकृतिकेँ अपन गति छै, ओ अपन निअम-निष्ठासँ चलैए। जँ से नहि, तँ एक कम्पनीक वस्तु एक रंग होइ छै मुदा तइमे ओहन मेल-पाँच केना भऽ जाइ छै जे मेल-पाँच भेलोपर चारि-पाँच वा पाँच-छहसँ आगू-पाछू नै होइत अछि। भऽ तँ ईहो सकै छल जे एक रंगाहे होइत वा एकसँ पाँचो होइत वा आरो अन्तर भऽ सकै छल। मुदा से कहाँ होइए? जहिना एकसँ साए धरि गनू आ साएसँ एक दिस गनू, पचास तँ बिच्चेमे रहत। तँए बेटा-बेटीक बाढ़ि अबौ आकि रौदी हौउ, मुदा अपन व्यासक अनुकूले रहैत आएल अछि आ रहबो करत।

दोसर भाए जे बच्चेमे कुभेला भेलासँ गाम छोड़ि परदेश गेला से पुन: घुमि कऽ नहियेँ एला। बाल-बोधकेँ सेवाक जरूरत होइ छै, होइत एलैए आ सभ दिन होइत रहतै। मुदा जखन वएह बाल-बोध चेतन भऽ जाइ छैथ, तखन हुनक विवेक की कहै छैन से तँ आनक-आन नै बुझि सकत। ओ अपने अपन कर्तव्यकेँ निर्धारित कऽ जीवन-पथपर चलता। खाएर जखन धरतिये भूमि छी तँ जेतए बास करब ओकरे मातृभूमि बना लेब। तहूमे ओइ बच्चाक तँ अधिकार बनियेँ जाइ छै जेकर जन्म जेतए बनि गेल हुअए। मुदा प्रश्न तँ अहूसँ आगू अछि। जँ धरती स्वर्ग वा वैकुण्ठ बनए चाहए तखन अपनामे बँटि कऽ बनत आकि सम्मलित भऽ कऽ? जँ से नहि, तँ हम केतए छी ई तँ देखए पड़त?

मुदा मिथिलांचलोक भूमि तँ वएह भूमि छी जे सभ दिन प्रकृति प्रदत्त रहल अछि, अखनो अछि आ आगूओ रहबे करत। जँ से नहि, तँ कहाँ अरब करोड़पर लटकल आ करोड़ लाखपर? सभ दिन जहिना रहल तहिना अखनो अछि। भलेँ केतौसँ हमहूँ कहिऐ जे छीहे।

तेसर भाँइक परिवार ऐ लेल आगू नै बढ़लैन जे शरीरसँ निरोग रहितो मनसनक बच्चेसँ भऽ गेला। जइसँ ने बिआह केलैन आ ने कोनो भाँइक बात-विचारमे कहियो रहला। तहिना बाँकी भैयारी मिलि घरक मोजरे समाप्त कऽ देलकैन। मुदा तइले हुनको मनमे कहियो दुखो नहियेँ जन्म लेलकैन। जखन भाय सभ लगमे बैसैथ तँ गरैज-गरैज बजैथ जे 'मने सभ किछु छी, जे मनक मालिक ओ सबहक मालिक।' मुदा भाइयो सभ बिना किछु टोकारा देने चुपे-चाप सुनि लैत जे अनेरे टोकने आरो बरदियाएब। से नहि तँ एक झोंक बाजि नारद जकाँ वीणा हाथमे लेता आ जेमहर मन हेतैन तेमहर विदा हेता। असगरूआ परिवारमे एककेँ वौड़ने परिवारेक उसरन होइए मुदा गनगुआरि जकाँ एकटा टाँग टुटनहि की हएत। एक भाँइ तँ परिवार-टोलसँ लऽ कऽ समाज धरि गढ़ि लइए। हम सभ तँ कहुना तैयो चारि भाँइ बँचल रहबे करब। बाँझी लगने डारि फड़ै नइए मुदा तँए कि ओ गाछसँ हटल रहैए, एहेन तँ नै होइत।

पिताक अमलदारीमे चाकर-चौड़गर, चौघारा घरक आँगन हथिसार सन दरबज्जा, चन्द्रकूप सदृश इनार, सरोवर सदृश बिनु जाठिक पोखरिक बीच सबहक जिनगियो संयमित रहैन तँए परिवारमे हर-हर खट-खटक प्रश्ने किए उठत। ओना, सातो भाँइक सातो काज सात रंगक। जिनगी लेल सातो उपयोगी मुदा गुण-बेवहार आ उपयोगक हिसाबसँ छोट-पैघ। हर-हर खट-खट नै होइक कारण एकटा दोसरो छल जे अपन-अपन बुधिक उपयोग कऽ स्वतंत्र रूपसँ सभ अपन-अपन काज सम्हारै छला। एक काजमे ने करैक बखेरा ठाढ़ होइत–जे एना-हेतै, एना नै हेतइ–मुदा एक विचारमे तँ से नइ होएत। समतल बिछानक सुख जहिना सुतनिहारकेँ होएत, तहिना ने समटल परिवारोकेँ होएत। छोट ओसार रहत आ बच्चा बेसी रहत तँ ओंघरा-ओंघरा खसबे करत। खाइकाल भिन्ने छिपली-बाटी फुटत, जहिना वस्तु वेपारक सहायक छी तहिना वेपार उपयोगक। जइ वस्तुक जेते उपयोग जिनगी लेल होएत ओ वेपार ओते चतरल। मुदा प्रश्न अछि जँ सभ फूल फूले छी तँ देवताक बीच बँटाएल किए अछि? जँ देवताक परसाद परसादे छी तखन महादेव किए बाँतर छैथ?

अखन धरि सतभैंया परिवारमे घराड़ीसँ लऽ कऽ बाध धरिक

जमीनमे दुइए बेर बँटबारा भेल छेलैन जे खूटे-खूट भेल छेलैन मुदा ऐबेर रूप बदैल गेल। भितरिया गुमराहट आबि गेल। मुदा खुलि कऽ आगू भऽ बजैले कियो अपन डेग नै बढ़बए चाहैथ।

जहिना सुखल जारैनक बीच आगि हवा पबिते धधैक उठैए तहिना पोखरिक लहैर जकाँ सतभैंया परिवारमे उठए लगलैन। कारणो अछि जे कहिया केतए जे कँचका ईटापर खपड़ा घर बनौलैन सएह अखनो धरि चलि आबि रहल छैन। निच्चाँ जहिना मुसहैनक माटि भरल तहिना अकासक तरेगन जकाँ फुटल खपड़ा लग इजोत होइत। शुद्ध किसानक घर। चाहे खेतमे काज करैकाल बरखा हुअए आकि सुतली रातिमे, अन्तर कोनो नहि। जहिना गोनैरक दुनू भाग एक्के रंग भेने उनटा-सुनटाक प्रश्ने नहि, पहिलुका चद्दैरक चारूभाग बराबरे होइ छेलै आ जे बँचल अछि ओ अखनो ऐछे, तहिना धोतियोक, मुदा आजुक जे सिंग-मांगबला चद्दैर वा अन्य जे वस्त्र अछि ओ एकभग्गुए नहि, संयुक्त परिवारक एकाकी रूप जकाँ बनि गेल अछि। जहिना जनमौटी बच्चा छोटसँ पैघ बढ़ैत सिरिफ मानवे नहि, महामानवो बनैत अछि मुदा वएह मनुक्ख मृत्युक पश्चात अछियामे जखन जरबैले जाए लगैए तँ पैघसँ छोट बनैत-बनैत लोथरा जकाँ बनि जाइत अछि तहिना ने भऽ रहल अछि। ओना, खूटे-खूट जमीन बँटनौं जहिना छुतकाबला केश कटबैकाल सभ बरबरिये भऽ जाइ छैथ। तहिना बाधक जमीनमे कनी घटियो-बढ़ी भेलैन मुदा घराड़ी आ पोखैरमे कोनो तरहक कमी-बेसी नइ भेलैन, सभ अपन-अपन उपयोगक अनुकूल रहैत आएल छैथ। तँए सतभैंया परिवारकेँ गामक लोक एके परिवार बुझि ने कियो किछु बजैत आ ने किछु पुछैत। जइसँ पूर्बा-पछबाक कोनो लसैर नहियेँ लगल छेलैन। जखन लसैरे नै तँ असर किए। तेतबे नहि, ईहो बुझैत जे जहिना गाछक डारि फुटने फूल-फड़ थोड़े बदैल जाइ छै तहिना अनेरे देह रगड़ने तँ अपनो रगड़ा लगबे करत। मुदा से नै भेल, भऽ ई गेल जे सात भैयारीमे तीन भाँइकेँ सुखने गाछक डारि जकाँ चारिए-टा रहि गेलैन आ तहू चारिमे दूटा बँझियाइए गेलैन, तँए फल-फूलक आशे नै रहलैन। मुदा दुइयो भाँइ रहने चारि भैयारीक परिवार पसारै-जोकर तँ भइये गेला। गड़बड़ एतबे भेलैन जे एक भाँइकेँ एक आ एक भाँइकेँ तीन बेटा भेलैन।

एक रहितो मानवीय विचार आर्थिक विचारमे बदैल रगड़ा-रगड़ी शुरू भेल।

जखने तीन भाँइ एक दिस हएत आ दोसर दिस कियो असगरे पड़त तँ निसचिते छह हाथ पैरक जगह दूटा हाथ-पएर झँपेबे करत। मुदा चद्दैर तँ ओइठाम ने झाँपि चारूकात अड़ियबैत जैठाम ओढ़निहारसँ डेढ़िया-दोबर होइत, से तँ परिवारमे भइये गेल छैन। विचारवान परिवार सभ दिनसँ रहलैन जँ से नै रहलैन तँ आन-आन गाममे एहेन-एहेन परिवार मटियामेट भऽ गेल। मटियामेटे नहि, केते जहल भोगलक तँ केते अस्पताल, केते फाँसीपर लटकल तँ केते कपार फोड़ा मरल। मुदा विचारेक चलैत ने परिवारकेँ ने कहियो सम्प्रादायिक आ ने जातिक हवा कनियोँ डोलौलकैन। समैयक प्रभाव तँ सभ किछुपर पड़िते अछि से तँ परिवारोमे भेलैन। ओना, जेकरा समय कहै छिऐ–दिन-राति–ओइमे ओतेक बदलाव कहाँ आएल, किएक तँ अखनो बारहो मास आ छबो ऋृतु होइते अछि। अपन-अपन गुण-धर्म तँ बँचौनहि अछि। मुदा एकटा गड़बड़ तँ परिवारमे भइये गेलैन। ओ ई जे एक भाँइक बेटा–श्याम–भैयारीमे असगरे छथिन। असगर भेनाइ तँ बड़ पैघ बात नहियेँ भेल, मुदा पिताक भैयारीमे छोट भाइक बेटा रहने किछु गड़बड़क सम्भावना तँ जनमियेँ गेलैन।

बाबाक अमलदारीमे सातो भाँइक बीच बँटबारा भेलैन मुदा ओ पुन: समटा गेलैन। कारण ई जे शुरूमे तँ बँटबारा भेलैन मुदा तीन भाँइक परिवार घटने फेर समटा गेलैन। केना नै समटाइत, तीनूकेँ कियो पानियोँ देनिहार तँ नहियेँ रहलैन।

चारू भाँइक बीच एहेन सम्बन्ध बनल रहलैन जे भीन-भीनौजीक परिस्थितिये पैदा नै लेलकैन। तेकर कारण भेल जे चारू भाँइक चारि तरहक कारोबार रहलैन। एक काजमे चारि गोरेकेँ रहने वैचारिक मतभेद होइक सम्भावना रहै छइ। किएक तँ एक्के काज केते ढंगसँ कएल जा सकैए। तहूमे जखन समैयक मोड़ अबै छै तखन काजोमे मोड़ अबै छइ। सभठाम भलेँ नहि अबौ मुदा नहियेँ अबै छै सेहो नइ कहल जा सकैए। चारू भाँइकेँ परोछ भेने परिवारमे भीन-भिनौजक सम्भावना बनलैन। सम्भावनाक कारण भेलैन जे एक भाँइकेँ एकेटा बेटा, जखन कि दोसरकेँ तीनिटा भेलैन। दू भाँइ तँ मेटाइए गेला।

छोट भाइक बेटा रहितो श्याम भैयारीमे सभसँ जेठ, खाली भैयारीए-मे जेठ नहि, पढ़ै-लिखै दिस सेहो विशेष झूकान रहैन। एक तँ पढ़ैक लगन दोसर सुभ्यस्त परिवार रहबे करैन। मुदा तीनू भाँइ घनश्याम खेलौड़िया बेसी। सदिकाल सिनेमे-पत्रिका आ खेले-पत्रिका उनटा-पुनटा देखैत। पढ़ैपर तँ ओतेक नजैर नहि, मुदा फोटोपर बेसी नजैर पड़ैत।

अखन धरि श्यामक विचारमे कोनो दूजा-भाव नै आएल छेलैन जइसँ कोनो तरहक नीक-अधलाक प्रश्ने नै उठल छल। जे किछु कारोबार छेलैन सामूहिक छेलैन। तहूमे एकटा जबरदस गुण श्याममे छैन जे घरसँ बाहर धरिक जे कोनो काज होइ छैन ओ तीनू भाँइ–अपना लगा चारू–केँ जरूर जानकारीमे दैये दइ छथिन। मुदा भैयारीक संग दियादनियोँ तँ बरबैर भइये जाइत अछि। एक बाप-माए वा सहोदर पित्ती-पितियाइनिक बीच जे सिनेह रहैत ओ तँ चारि गामक चारि दियादनीकेँ एने तँ किछु-ने-किछु गड़बड़ भइये जाइत अछि। कारणो छै, मिथिलांचलेमे एक सीमा कातक गाम आ दोसर सीमा कातक गामक बीचक जे दूरी अछि तइमे खान-पान, रहन-सहन, बोली-वाणी इत्यादिमे किछु-ने-किछु अन्तर बनले आबि रहल अछि। तहूमे जइ इलाकामे बाढ़िक उपद्रव कम छै आ जइ इलाकामे बेसी छै, दुनूक जीवन शैलीमे सेहो बदलाब अबै छइ। जखने जीवन-शैली बदलत तखने जीवन पद्धति बदलत। जखने जीवन पद्धति बदलत तखने जीवन-लीला बदलए लगै छइ।

जहिना गाममे अखड़ाहा रहने किछु-ने-किछु लूरि कुस्तीक भइये जाइ छइ। तहिना मध्य मिथिलांचलक भाषामे पश्चिम–भोजपुरी सीमा–क्षेत्रक सुआसिन एने, भाषामे किछु-ने-किछु रूप बदलले रहै छै जइसँ भाषापर माने बोली-वाणीपर प्रभाव पड़ै छइ। तहिना पूवरिया इलाका वा दछिनवरिया इलाकाक प्रभाव सेहो पड़िते आबि रहल अछि। जहाँ धरि कुटुमैतीक प्रश्न अछि ओ तँ भागलपुरसँ मोतिहारी आ जनकपुरसँ सिमरिया धरि होइते आबि रहल अछि।

एकाएक श्यामक मनमे भैयारीक प्रति सिनेह किछु कमए लगलैन। सिनेहमे कमी एने काजमे कमी आबए लगलैन। जेना शुरूसँ परिवारक काजक जानकारी सभकेँ दैत अबै छेलखिन तइमे किछु कमी आबए

लगलैन। तीनू भाँइ खेलौड़िया सोभावक रहबे करैथ, तैबीच काजक आदेश कम पाबि आरो खेलौड़िया भऽ गेला।

अखन धरि घनश्यामकेँ श्याममे कोनो कमी नै देखि पड़ैन। तँए हिसाबक कोनो जरूरतो नहियेँ बुझैथ।

श्यामक मनमे सिनेह कमैक कारण भेल जे पत्नी सदैतकाल कानमे घोरि-घोरि पियबैन जे सम्पैत अपन आ सुख-मौज दियाद सभ करैए! पहिने तँ श्याम पत्नीकेँ सेवक बुझैत आबि रहल छला, ई नै बुझै छला जे दियादनीसँ दियादियो ठाढ़ होइ छइ। मुदा विचारो तँ किछु छिऐ, अड़ि कऽ पत्नी पूजे करैकाल खिसिया-खिसिया बाजए लगलैन- "जइ पुरुखकेँ कोनो बात बुझैक ज्ञाने ने छै ओ पुरुख नहि, पुरुखक झड़ छी!"

पत्नीक बात श्यामकेँ छातीमे धक्का देलकैन। मन कहए लगलैन जे 'झड़'क अर्थ तँ ओ होइत जे कखन अछि आ कखन अपने झड़ि जाएत तेकर कोनो ठेकान नहि। जे पाछू दिस ससरत ओ पौरुष केना पाबि सकैए? मुदा अखन मुँह खोलैक तँ समय नै अछि सिरिफ सुनैक समय अछि...।

जहिना बाल्टी भरि पानिमे नेबो आ चीनी रखिए देने तँ सरबत नै बनैए। नेबोकेँ काटि गाड़ि कऽ रस मिलौल जाइत अछि तहिना चिन्नियोक अछि। जहिना एक शब्द वा एक पाँति पढ़लासँ बुझिमे नै अबैत बल्कि दोहरा-दोहरा पढ़लासँ वा ऐगला-पैछला पाँतिक मिलानसँ बुझल जाइत अछि तहिना ऐगला बातक प्रतीक्षामे श्याम आँखि उठा पत्नीपर देलैन।

नजैरक पानि देखि पत्नी बुझि गेली जे ऐगला बात सुनैक प्रतीक्षा कऽ रहल छैथ। जहिना मधुमाछीक सभ छत्तामे एक्के रंग मधु नै रहैत, कोनोमे कम तँ कोनोमे बेसियो रहैत आ तइ संग-संग नव-पुरान–पहिलुका-पैछला–सेहो रहैत। तँए ठिकिया कऽ ओइ छत्ताकेँ पकड़ब बुधियारी छी जइमे डगडगी भरल नवका मधु रहैए। किएक तँ पुरना मधु दबाइ-दारू लेल नीक होइ छै, खाइले तँ नवके नीक हएत, तहिना वकील जकाँ अपन पक्ष रखैत पत्नी बजली- "अखन धरि अहाँ एतबो ने बुझै छिऐ जे चारू भाँइक बीच पनरहटा बाल-बच्चा आँगनमे अछि। पनरहोक खर्च तँ

सागीरदेमे सँ चलैए। एके रंग लत्ता-कपड़ा, खेनाइ-पीनाइ अछि, मुदा ई बुझै छिऐ जे ऐमे अपन केते हएत आ दियाद-वादक केतबे छैन?"

श्यामक नजैर धँसए लगलैन। पत्नीक विचारमे किछु तत्त्व बुझि पड़लैन मुदा से स्पष्ट नै भऽ सकल! प्रतीक्षाक नजैर उठा श्याम आगू दिस ताकए लगला। तैबीच अवसरक लाभ उठबैत पत्नी दोहरौकैन- "पनरहटा बाल-बच्चामे अपन तीनटा अछि। बाँकी बारह तँ भैयारीए-क भेल। तैसंग अपने दू परानी छी आ ओ छह परानी अछि। कनी जोड़ि कऽ देखियौ जे अदहा हिस्सामे अपन केते हएत आ केते हुनका सबहक हेतैन।"

श्यामक मन सहमलैन। सहैमते उठलैन- जे पत्नी अक्षरस: सत्य कहि रहली हेन। सम्पैतक अर्थ सुख-भोग होइ छै, परसादी बाँटब नहि।

पूजासँ उठि भोजन कऽ श्याम घनश्यामकेँ सोर पाड़ि कहलखिन-

"घनश्याम, दुनियाँक तँ बेवहारे भैयारीमे भीन होएब रहल अछि। अपनो सभकेँ कम नै निमहल। गाममे देखै छिऐ जे केते छौड़ाकेँ मोँछक पम्हो ने आएल रहै छै आ बापसँ भिन भऽ जाइए अपना सभ तँ सहजे धीगर-पूतगर भेलौं। भीन भऽ जाह।"

जेना घनश्यामो प्रतीक्षेमे रहए तहिना धाँइ-दे बाजल- "भैया, सभ दिन अहाँक आदेश मानैत एलौं, आइ नै मानब से उचित हएत। मुदा अहाँ जहिना जेठ भाय छी तहिना तँ रामो-बलराम अछि। भलेँ ओ दुनू छोट भाए छी, जे कहबै से करत। मुदा तैयो बिना पुछने किछु नै कहब।" "बड़ बढ़ियाँ, अखन जा कऽ पुछि लहक। सुति कऽ उठै छी तखन फेर गप करब।"

घनश्याम उठि कऽ विदा भेल।

तीनू दियादनियोँ आ दुनू भाइयोकेँ एकत्रित कऽ घनश्याम पुछलक-

"सबहक बीचमे कहै छी। भैया बजा कऽ कहलैन जे भीन भऽ जाह। से की विचार?"

बलराम कहलकैन- "विचार की भैया, ओ असगर छैथ तँ जीविए लेता आ हम तँ सहजे तीन भाँइ छी। हुनका जे मनो खराप हेतैन तँ ने कियो डॉक्टरो ऐठाम लऽ जाइबला हेतैन आ ने बजारसँ दबाइ कीनि कऽ

अनैबला हेतैन।”

घनश्याम-

“सबहक की विचार?”

पहिल दियादनी-

“अपन परिवार बुझि नौरी जकाँ दिन-राति खटै छी तैपर जे पाँचो मिनट चाहमे देरी हेतैन तँ साँढ़-पारा जकाँ गर्द करए लगता। भने नीक हएत। जानो हल्लुक हएत।”

सुति उठि चाह पीब पान खा श्याम घनश्यामकेँ सोर पाड़लखिन। अबिते घनश्याम लगमे बैस कहलकैन-

“जे विचार अहाँक अछि भैया, सएह हमरो अछि। अखने बाँटि लिअ।”

घनश्यामक बोली सुनि श्याम सहमला। मनमे उठलैन, हम जे बुझै छिऐ तइसँ भिन्न ने तँ बुझैए। मुदा बात तँ आगू बढ़ि गेल आब जँ पाछू हटब सेहो नीक नहि। बजला-

“बँटबारामे कोनो बेवधान तँ छहे नहि। सभ किछु अदहा-अदही भेलह। तखन बाप-पुरुखाक बनौल जेठौंस होइए से तँ तोहीं बजबह?”

श्यामक विचार सुनि घनश्याम कहलकैन-

“अहाँ पितासँ हमर पिता जेठ छला। संयोग नीक रहलैन जे भिनौजी नै भेलैन। जखन पिताक अधिकारक हिसाबसँ आइ बँटै छी तँ हुनकर जेठौंस केते हेतैन से तँ हमर हएत किने?”

श्याम कहलकैन-

“देखह, तमसा कऽ नै बाजह। सभ दिन अपन सतभैंया परिवार ‘विचारक परिवार’ मानल जाइत रहल अछि, तैठाम कनी-मनी चीज लेल झगड़ब नीक नहि।”

घनश्याम मुड़ी डोलबैत बाजल-

“बात तँ बड़ सुन्दर आ बड़ सोझगर कहलौं मुदा एक वंशक सभ रहितो अहाँ अइल-फइलसँ रही आ हम सभ बँटाइत-बँटाइत एते बँटा जाइ

जे घसाएल सिक्का जकाँ सभ किछु रहितो चलबे ने करी, से केहेन हएत?”

तैपर श्याम पुछलखिन-

“तोहर की विचार?”

घनश्याम कहलकैन-

“तीनू भाँइक विचार अछि जे घर-सँ-घराड़ी, खरिहाँन-सँ-खेत धरि चारू भाँइ एकरंग कऽ लिअ। जँ से नहि, तँ...।”

श्याम-

“तँ की?”

घनश्याम-

“ई तँ माटिक चर्च केलौं। पोखैर सेहो तहिना बाँटब। जँ से दइले तैयार नै हएब तँ जमीनक फैसला जमीनपर हएत।”

श्याम-

“सएह।”

घनश्याम-

“हँ! सोलहन्नी सहए।”



शब्द संख्या: 2999

न्याय चाही

झूनाएल धान जकाँ पचासी बर्खक शम्भु काकार्कें ओछाइन छौड़ैसँ पहिनहि मनमे उठलैन जे आब तँ चल-चलौए छी, से नहि तँ जिनगीक अपन हिसाब-किताब दैये दिऐ, सएह नीक। नै तँ शासनक कोन बिसवास केकरो दोख गारा मढ़ि सजा केकरो भेटै छइ। मुदा सोझहामे एते तँ जरूर हएत जे अपन बात अपने रखि सकै छी। तैपर जँ नहि मानत तँ हमहूँ नइ मानबै। लड़ि मरी कि सड़ि मरी; शेषे कथी बँचल अछि...।

जहिना नमहर काजमे समैयो अधिक लगैए आ छोट काजमे थोड़ मुदा काज तँ दुनू कहबैए। कियो काहू मगन कियो काहू मगन, मगन तँ सभ अछिए। गंभीर प्रश्नमे ओझराएल शम्भु काका, तँए मन-चित्त आ देह एकबट्ट भेल रहैन।

पत्नी कुमुदनीक मनमे उठलैन जे भरिसक सुतले तँ ने रहि जेता। लगमे पहुँच छाती डोलबैत पुछलकैन- "अखन धरि किए बिछान पकड़नहि छी?"

पत्नीक स्वरलहरीमे लहराइत शम्भु काका हलैस बजला- "अखन धरि यएह बुझै छेलौं जे अपने केलहाक भागी कियो बनैए, मुदा..?"

बजैत शम्भु काका ओछाइनपरसँ उठि जहिना उगैत सुरूजक दर्शन लोक दुनू हाथ जोड़ि प्रणाम करैत करैए तहिना दुनू हाथ जोड़ि पत्नीक आगूमे ठाढ़ होइत दोहरा कऽ बजला- "माफी मंगै छी, गलती भेल अछि मुदा दोसराक गलती ऊपर मढ़ल गेल अछि।"

अकचकाइत कुमुदनी, बिनु किछु सोचनहि बजली- "से की, से की, एना किए भोरे-भोर पाप चढ़बै छी?"

"पाप नै चढ़बै छी जिनगीक जे घटल घटना अछि, तइ निमित्ते मांगि रहल छी।"

"जखन एते कहबे केलौं तखन किए ने मनो पाड़ि देब। अहाँ तँ

बुझिते छिऐ जे बसिया भात खेनिहारि बिसराह होइए मुदा रौतुका उगरल अन्न फेक देब नीक हएत?”

पतालसँ अबैत बलुआएल पानि जहिना छन-छनाइत पवित्र भऽ अबैए तहिना कुमुदनीक विचार सुनि प्रोफेसर शम्भु काकाकेँ भेलैन, बजला- “अपना दुनू गोरेक एक जिनगी ऐ धरतीपर रहल अछि की नहि?”

“हँ, से तँ रहले अछि। तँए ने अर्द्धांगिनी छी।”

“हमर देहक अर्द्धांगिनी छी आकि जिनगीक?”

“ई बात अहाँ बुझेलौं कहिया जे पुछै छी?”

पत्नीक प्रश्न सुनि प्रोफेसर शम्भु काका सकदम भऽ गेला। मुदा लगले मनमे उठलैन जे टटको घटना बसिया जाइ छै आ बसियो घटना टटका भऽ जाइ छइ। ई निर्भर करैए कारीगरपर। जेहेन कारीगर रहत तेहेन टटकाकेँ बसिया आ बसियाकेँ टटका बनबैत रहत। खाएर जे हौउ। पत्नीकेँ पुछलखिन-

“अपना दुनू गोरे एकठाम केना भेलिऐ?”

“एना अरथा-अरथा किए पुछै छी? जे कहैक अछि से सोझ डारिये कहू। एना जे हरसीकार-दिरघीकार लगा-लगा बजै छी से नइ बाजू। जेकरा नीक बुझबै तेकरा नीक कहब आ जेकरा अधला बुझबै तेकरा अधला कहब। अहाँ लग जे कनी दबो-उनार भऽ जाएत तँ हारि मानि लेब सएह ने हएत, आकि छाउर-गोबर जकाँ छिट्टामे उठा बाध दऽ आएब।”

जहिना पोखरिक पवित्र जलमे स्नान कऽ पूजाक मूर्ति गढ़ि मंत्र पढ़ैत दान कएल जाइत तहिना शम्भु काका बड़बड़ाए लगला-

“जखन हम चौबीस बर्खक रही तखन अहाँ चौदह बर्खक छेलौं। दस बर्खक अन्तर। आइ धरि कहाँ केतौ देखि पेलौं जे पुरुष-नारीक बीच उमरोक विभाजन भेल। जँ से नहि तँ..? जँ एको औरूदे दुनू गोरे जीब तैयो तँ अहाँ दस बर्ख विधवे बनि रहब। ऐ विधवाक सर्जक के? समाजमे कलंकक मोटरी देनिहार के? की ई बात झूठ जे जइ घरमे जेते कम वस्तु रहै छै आगि लगलापर ओतबे कम जरै छै आ जइ घरमे अधिक वस्तु रहै छै आगि लगलापर जरबो बेसी करै छइ? पचास बर्खक तपल-तपाएल

जिनगीक अन्त केना हएत?”

दुनू हाथ जोड़ि शम्भु काका पत्नीसँ माफी मंगलैन।

मुदा जहिना बच्चाकेँ नव दाँत रहने अधिक-सँ-अधिक काज लिअ चाहैत, नव औजार हाथमे एने अधिक-सँ-अधिक काजो आ अधिक-सँ-अधिक समय सेहो संग मिलि बीतबए चाहैत तहिना कुमुदनीक सिनेह आरो जगलैन। बजली- “माँफी-ताँफी नै मानब? पति छी तँए पुछै छी। एहन गलती भेल किए, से जाबे नै कहब ताबे किछु ने मानब।”

पत्नीक प्रश्न सुनि शम्भु काका स्तब्ध भऽ गेला। मन कछमछाए लगलैन। सत् बड़ कटु होइ छइ। मुदा जँ पत्नियोँ लग सत्यक उद्घाटन नै कऽ सकब तँ दुनियाँमे दोसरठाम कइए केतए सकै छी?

शम्भु काका साँप-छुछुनैरक स्थितिमे पड़ि गेला। एहेन कोनो विचार मनमे उठबे ने करैन जइसँ मन मानि लइतैन जे ऐसँ पत्नी मानि जेती। अल्ल-बल्ल किछु बच्चाकेँ कहल जाइ छै, एक तँ सियान कि जे सियानोक ऐगला खाढ़ीमे पत्नी पहुँचल छैथ, दोसर अर्द्धांगिनी सेहो छैथ। कोनो विचारकेँ बलजोरी थोपि नै सकै छिऐन, जँ थोपियो देबैन तँ मानिए लेती सेहो नै कहल जा सकैए। जेते दवाब दऽ कऽ बजैक अधिकार हमरा अछि तेते हुनको तँ छैन्हे। जँ किछु नै कहबैन तखन तँ आरो स्थिति बिगैड़ जाएत। जहिना हुनका मनमे गेंठी जकाँ जनमगाँठ पड़ि जेतैन तहिना तँ अपनो मन नहियेँ बँचत। जँ से नै बँचत तँ आँखि उठा देखि केना पेबैन? जँ से नै देखि पाएब तँ पति कथीक? सिरिफ रंगे-रभसटा तँ पत्नीक सम्बन्ध नै छी? जँ ओतबे मानि बुझबैन तँ पति-पत्नीक सम्बन्ध बुझब थोड़े हएत। पति-पत्नीक सम्बन्ध तँ ओ छी, जहिना जनकक एक हाथ हवन-कुण्डमे आ दोसर पत्नीक करेजपर रहै छेलैन, मुदा जहिना नव जीवनक दिशा विपैतक अन्तिम अवस्थामे भेटैए तहिना शम्भुओ काकाकेँ भेटलैन।

..थालमे गड़ल मोती जहिना जहुरी हाथमे देखिते नयन कमलनयन बनि जाइत तहिना कक्कोक नजैरकेँ भेलैन। मन मुस्किएलैन।

पतिक मुस्की देखि कुमुदनी मने-मन नमन केलकैन।

जिज्ञासु छात्र जकाँ पत्नीक जिज्ञासु नजैरकेँ देखि प्रोफेसर शम्भु

बजला- “देखू, प्रश्न एकेटा नै घनेरो अछि, जँ एक-एक प्रश्नक उत्तरो दिअ लगब तँ प्रश्ने छुटि जाएत। जँ प्रश्ने छुटि जाएत तखन उत्तरे केना देब। तँए किछु नहि बुढ़िया फूसि।”

पतिक विचार सुनि कुमुदनी अधखिल्लू कुमुदनी जकाँ जइ अवस्थामे भौंरा फरिच तँ देखैत मुदा अधखिल्लू कपाटसँ निकैल नै पबैत, तहिना कुमुदनी असमंजसमे पड़ि गेली।

पत्नीकेँ असमंजसमे पड़ैत देरी प्रोफेसर शम्भुक मनमे उठलैन जे जहिना माटिक ढेपा, गोला, चेका जोड़ि-जोड़ि पैघसँ पैघ बान्ह बान्हल जाइए तहिना जँ बान्हि दिऐन तँ जरूर ठमैक जेती। मुदा मन मानलकैन नहि। पत्नीक बातमे तँ अखन धरि ओझराएल रहलौं। जरूर माए-बापक काज मानल जाएत। मुदा, की हमरे टा परिवारमे भेल आकि दोसरो-तेसरो परिवारमे? जँ एक समाज नहि, एक गाम नहि, अनेक समाज आ अनेक गाममे होइत अछि तँ जरूर दोषक जड़ि केतौ आरो छइ। अन्तए केतए छै से कहि देबैन, मानती तँ मानती, नहि तँ आगू कहबैन नेति-नेति।

जहिना उगैत गुज्जर, उगैत कलशकेँ कहैत जे दुनू गोरे संगे-संग रहि दुनियाँ देखब तहिना प्रोफेसर शम्भु पत्नीकेँ कहलखिन- “सुनू, सभ बात सबहक नजैरपर सदिकाल नै रहै छै, भऽ सकैए जे जे बात दस-बीस बर्ख पहिने कहि देबाक चाहै छल, से नै कहलौं। अपनो धियानमे नै रहल। जहिना असगरे धान तौलनिहार गनि-गनि तौलबो करत आ उठि-उठि लिखबो करत तँ गिनती-गिनतीमे झगड़ा हेबे करतै, किएक तँ जे जोरगर रहतै ओ मन रहत आ जे अब्बल रहत ओ हेरा जाएत। तहिना ने अपनो दुनू गोरेक बीच अछि।”

“दुनू गोरे” सुनि कुमुदनी कछमछेली। कछमछाइते पाछू उनैट-उनैट देखए लगली।

प्रोफेसर शम्भु बुझि गेला जे शिकारीक वाण सटीक बैसल। जहिना बाल-बोधक उनटा-पुनटा काज देखि सियानकेँ हँसी-लगैत तहिना प्रोफेसर शम्भुकेँ हँसी लगलैन। मुदा लगले मनमे उठलैन जे अपनो पैछला कएल काज मोन पड़ने तँ से होइए। एकाएक मुँह बन्न भऽ गेलैन। आने-आन

पुरुख जकाँ अपन पुरुषत्व देखबैत प्रोफेसर शम्भु बजला-

“आइ धरि, अखन धरि कहियो हमरा मुहसँ फुटल जे हम न्यायालयसँ दण्डित भेल जिनगी जीब रहल छी? कियो एको दिन पुछाड़ियो करए आएल जे केना जीबै छी? समाजमे जाधैर बुढ़-बुढ़ानुसक पूछ नै हएत ताधैर समाजक पैछला पीढ़ी नाँगैर पकैड़ वैतरणी पार केना हएत। हँ ई जरूर जे साँपकेँ डोरी नै कही, मुदा विचार तँ हेबाके चाही किने।”

घरमे चौंकल बरतनक ढनमनी जकाँ कुमुदनी ढनमनाइत बजली-

“जखन अहाँ दुनियाँक नजैरमे दण्डित छी तखन..?”

पत्नीक चिन्तासँ चिन्तित भऽ प्रोफेसर शम्भु बजला-

“अखन धरि तँ छिपेने रहलौं जे अपन दोख अहाँकेँ किए दी।”

पतिक बेथासँ बेथित कुमुदनी बजली-

“कनी फरिछा कऽ कहू?”

“सेवा-निवृत्त होइसँ छह मास पहिने प्रिंसिपल बनौल गेलौं। कौलेजक भार बढ़ल। परीक्षा विभाग सेहो छइ। सुननहि हेबे जे केते हो-हल्ला भेल। मामला न्यायालय चलि गेल। गोल-माल जरूर भेल रहइ, जानकारीमे नै रहए। मुदा तैयो जवाबदेहक रूपमे फँसलौं।”

कुमुदनी-

“अहाँक किछु दोष नै रहए?”

प्रोफेसर शम्भु-

“एकदम नहि।”

कुमुदनी-

“फैसला केना भेल?”

प्रोफेसर शम्भु-

“सेवा निवृत्त लग देखि न्यायालय दोषी बना छोड़ि देलक।”

कुमुदनी- “आ हुनका सभकेँ?”

प्रोफेसर शम्भु-

“कमो दोखबला बेसी सजा पौलक आ बेसियो दोखबला कम सजा पौलक।”

तैपर कुमुदनी पुछलखिन-

“एना किए भेल?”

प्रोफेसर शम्भु बजला-

“जँ पहिने बुझितौं तँ ऐ भीर जेबो ने करितौं, मुदा से नै भेल। जाधैर लिखित-मौखिक रूपमे बेवस्था चलत ताधैर अहिना हएत।”



शब्द संख्या: 1311

पनियाहा दूध

आँगन बहारि, बाढ़ैन धोइ कऽ पछबरिया दावा लगा रखि सुनयना दरबज्जा दिस तकलैन तँ बुझि पड़लैन जे मास्टर साहैब (पति) भरिसक सुतले छैथ, उठा देब उचित हएत मुदा मन ठमैक गेलैन। ठमैकते मन कहलकैन-

'आठमे दिन गाम आएल रहैथ तँ चारि बजे भोरेसँ हरविर्रो केने रहै छला जे घरमे कोढ़ियाक बाढ़ि आबि गेल अछि, जे काजक बेरमे सुतल रहत ओकरा कहियो भाभन्स हेतइ? मुदा आठे दिनक दूरीमे एना किए देखै छी?'

फेर मन घुमि कहलकैन-

'उमेरोक दोख होइ छइ। ओना, सठिया तँ गेले छैथ।'

तत्-मत् करैत सुनयना दरबज्जा-आँगनक बीच ठकुआ कऽ ठाढ़ भऽ गेली, ने आगू डेग उठैत रहैन आ ने पाछूए ससरैत रहैन।

ओना, जीवानन्दक नीन समैपर टुटि गेल छल, एक तँ ओहुना उमेर बढ़ने खूनो पनियाए लगै छै आ नीनो पतराए जाइ छइ। जे जीवानन्दोकेँ भेले रहैन, नीन टुटिते मनमे उठलैन जे उठिए कऽ की करब? काजे कोन अछि जे तइ पाछू लागब। आँखि बन्न केने सोचैत रहैथ।

जहिना चिन्तक चिन्तनक अवस्थामे निष्तेज भऽ जाइत तहिना जीवानन्द बिछौनपर निष्तेज छला। ओना, आँखियो खुजैक आ बन्न होइक ढेरो कारण अछि मुदा हुनका से नहि रहैन। मनमे केतेको रंगक विचार टकराइत रहैन, तँए ऐगला रस्ता देखैमे एक-दिसाह भऽ गेल छला। आलमारीक किताब जकाँ रंग-रंगक विषय एकेठाम सैंतल रहैन, असल विचार परिवारमे गड़ल रहैन। मुदा परिवारसँ पहिने जे अपनापर नजैर पड़लैन तँ तेतइ गड़ि गेला। सेवा-निवृत्त भऽ गेलौं, जीवैक उपाय भलेँ जे हुअए मुदा काज तँ हेरा गेल! आब काजे की अछि जइ अनमेनामे समय

गूदस करब? जखन काजे हेरा गेल तखन जिनगी केना चलत? जँ जिनगीए नइ चलत तँ जीवित-मृत्युमे अन्तरे की भेल?

ई सभ बात जीवानन्द बाबूक मनपर लधले रहैन तैबीच दोसर उठि गेलैन जे करबो केकरा लेल करब? पैछला कियो छैथे नहि, ऐगलो उड़िए गेल। बीचमे अपनाकेँ पाबि मन दहैल गेलैन। सेवा-निवृत्तिक तँ एक अर्थ ईहो होएत ने जे काज करै-जोकर नै रहलौं?

फेर मन ओझरा गेलैन। 'अन्धेर नगरी चौपट राजा, टके सेर भाजी टके सेर खाजा'क पइर भऽ गेल! काजो तँ दू रंगक होइत अछि, एक शरीरक शक्तिसँ कएल जाइत अछि आ दोसर वौद्धिक शक्तिसँ। हम तँ शरीरक शक्तिसँ नै वौद्धिक शक्तिसँ करै छेलौं तखन किए नै करैबला रहलौं? आमक आँठी जहिना कोइलीसँ धीरे-धीरे सक्कत बनि सृजन शक्ति प्राप्त करैए, से कहाँ भेल? जँ वौद्धिक शक्तिकेँ शरीरक शक्तिक सीमांकन कएल जाएत तँ केहेन हएत? खाएर जे हौउ, ठनका ठनकै छै तँ कियो अपना माथपर हाथ दइए। मुदा सेहो तँ नै भऽ रहल अछि। जे ठनका शरीरकेँ के कहए जे घरो-दुआर आ गाछो-बिरीछकेँ तोड़ि-फाड़ि दइए ओइ ठनकाकेँ हाथ केतेकाल बँचा सकैए?

जीवानन्द बाबूक मन फेर ठमैक गेलैन। मुइल धार जकाँ परिवारो भऽ गेल अछि, की हमरा बँचौने बँचत? बँचबो केना करत, ने पैछला घुमि औता आ ने ऐगला आबए चाहत। लऽ दऽ कऽ दू परानी भेलौं, तहूमे तेहेन पाकल आम जकाँ भऽ गेल छी जे कखन तुबि खसब तेकर कोन ठेकान...। खाएर जे हौउ, जाबे आँखि तकै छी ताबे तँ जीबए पड़त आ जाबे जीब ताबे जीबैक उपाय सेहो करैये पड़त। अपने जीने जिनगी आ अपने मुइने मृत्यु..!

गुन-धुनमे पड़ल जीवानन्दक मन समाज दिस बढ़लैन। समाजे लेल की केलिऐ जे हमरा लेल करत। जहिना देवस्थान दस गोरेक सहयोगसँ ठाढ़ो होइत आ चलबो करैत तहिना तँ समाजो अछि, मुदा से तँ किछु ने केलिऐ..! थकथकाएल मन कहलकैन- "की ओछाइने धेने रहब आकि उठबो करब?"

मुदा लगले दोसर मन कहलकैन- “उठिए कऽ की करब?”

मन आगू बढ़ि शिक्षक समाज दिस बढ़लैन। सेवा-निवृत्ति तँ सभ होइ छैथ, मुदा, की हमरे जकाँ सभकेँ हेतैन? भलेँ सभकेँ होनि वा नइ होनि मुदा किछु गोरेकेँ तँ हेबे करतैन। जखन सबहक जिनगी एक वृत्तमे बीतल तखन किए सभकेँ सभ रंग हेतैन? परिवारो आ समाजो तँ सबहक सभ रंग छैन। से तँ छैन्हे। दिनानाथ बाबूकेँ देखै छिऐन जे सेवा-निवृत्तिक उपरान्तो विद्यालय छोड़ि नै रहलैन अछि। जखन कि सुखदेव बाबू सेवा-निवृत्ति होइसँ तीन बर्ख पहिनहि जे ओछाइन धेलैन से अखनो धेनहि छैथ। परिवारमे जँ केकरो किछु अढ़बै छथिन तँ मुँह दुसि कहै छैन जे भरि दिन कौआ जकाँ कॉउ-कॉउ करैत रहै छैथ। मनुक्खकेँ जँ कौआ मानि लेल जाए तँ बोलकेँ की कहबै?

जीवानन्दक मन आरो घुरिया गेलैन। फेर मनमे उठलैन जे अनेरे औनाइ छी। जेतबे रहए तेतबे टाँग पसारी नै तँ पओल जाएब। सुतले-सुतल पत्नीकेँ सोर पाड़लखिन- “कनी एमहर आउ?”

आँगन-दरबज्जाक बीच ठाढ़ सुनयना पतिक हाक सुनिते डेग आगू डेग बढ़ौलैन। केबाड़ लग आबि हिया-हिया देखए लगली। पहिलुका माने सेवा-निवृत्तिसँ पूर्वक अपेक्षा पतिक रूप बदलल-बदलल बुझि पड़लैन। मन कहलकैन- एना केना भेलैन, अखन धरि तँ किछु कहबो ने केलैन, तखन किए पानि उतरल बुझि पड़ै छैन?

केबाड़क एकटा पट्टा खोलि देने रहथिन आ दोसर ओहिना लागल रहइ। तही बीच जीवानन्दक मनमे उठलैन जे जाबे नोकरी करै छेलौं ताबे बाहरसँ कमा कऽ आनि पत्नीक हाथमे दइ छेलिऐन, आ अपने अपनाकेँ गारजन बुझै छेलौं, से तँ आब नै हएत! जँ से नै हएत तँ परिवार आगू मुहेँ केना ससरत? पाहुन जकाँ आठ दिनपर अबै छेलौं आ कमासुत बनि जाइ छेलौं।

पतिक बदलल रूप देखि सुनयनाक मनमे उठलैन जे अखन धरि किछु करबो ने केलैन हेन आ तरे-तर फटि रहल छैथ..!

नवकवरियाक चुटकीक आवाज जकाँ सुनयनाक आगमन बुझितो

जीवानन्दकेँ उठैक हूबा देहमे नै रहलैन। मनोक बोझ तँ माथकेँ ओहिना भरिया दैत जहिना कोनो वस्तुक बोझ भरियबैत।

जीवानन्दक मनकेँ जिनगीक बोझ ऐ रूपेँ दबने जेना सवारी कसल घोड़ा वा खलीफा होइत। भरियाएल मनमे उठलैन- जाबे धरि बाहरसँ कमा घर अनै छेलौं, जइ बले परिवार ससरै छल ओ तँ टुटि गेल! ओहीपर ने अपनो आ घरो-परिवारक छहर-महर छल। मुदा से नइ भेने तँ ओहिना भऽ जाइ छै जहिना माटिक बनल रस्ताकेँ पानिक धार काटि अवरूद्ध कऽ दइ छइ। की कमाइएपर गारजनी छल? पत्नीए-कैँ की सुख हमरासँ भेलैन? घर-गिरहस्ती सम्हारैमे दिन-राति एकबट्ट केने रहै छैथ। एक तँ मिथिलांचलक किसान परिवारक अजीव गढ़ैन अछि, जैठाम एलापर देवियो-देवता भोथिया गेला। सौंसे जनकपुरमे जनकेक दरवार जकाँ बुझि पड़लैन? नान्हिटा बात थोड़े छी? जैठाम गाम-गाम व्यास भागवत बचै छैथ, गाम-गाम कीर्तन-भजन, भोज-भनडारा होइत रहैए, तैठाम समाज विपरीत दिशामे बहि गेल, मुदा देखलैन कियो ने। दरबज्जाक सौभाग्य छल नीक-नीक बात-विचार करब, तैठाम दरबज्जा टुटि आँगन घरक कोठरी बनि गेल अछि! जैठाम कम-सँ-कम लोकक पैठ रहैत, जैठाम आनक सुख-दुख सुनैक आ सुख-दुखक दबाइ बुझैक अवसर नै भेटैत, तैठाम पति-पत्नीक सम्बन्धक आधार की बनि सकैए। देखा-देखीक दुनियाँमे चिन्ता–चिन्तन किए रहत। जँ से नै रहत तँ मनक सुखक दिशाक धारा किए ने बदलत। जीवित-मृत्युक निर्णय के करत? केना हएत? कोनो मुसरा गाछ होइ आकि लतियाएल लत्तीक होइ, ओकर बाढ़ि ताधैर समीचीन होइत जाधैर ओकरा अनुकूल वातावरण भेटैत रहैत। ओना, लाखो किड़ी-मकौड़ी कोमल-किसलयकेँ नष्ट करैबला अछि मुदा प्रकृतोक तँ गजब गढ़ैन अछि, एक-दोसरकेँ नष्ट करैबला सेहो मौजूद अछि। बिनु मुँहक गाछ वा लत्तीक दशा तँ ओहने होइ छै जेहने साँपक मुँह थकुचेला पछाइत होइ छइ।

जीवानन्दकेँ एहसास भेलैन जे हमरापर नहि, पत्नीपर घर-ठाढ़ अछि। जँए घर ठाढ़ अछि तँए समाजक परिवार कहबैक लाली अछि। मुदा समाज तँ ओहिना नइ केकरो महत दैत, सेवाक अनुकूल केकरो महत दैत

अछि। से हमरासँ की भेलइ? जखन किछु ने भेलै तखन केते महत हेबा चाही? मुदा जेकरा घर-परिवार आ गाम बुझै छी, तेकरा छोड़िए केना देब? मुदा ई प्रश्न तँ गामक छी, अपन नहि। परिवारमे जे छहर-महर भेल ओइमे हमरा कमाइसँ की भेल। यएह ने भेल जे बेटीक बिआह केलौं, बेटाकेँ पढ़ेलौं-लिखेलौं आ अन्तिम अवस्थामे अपन घर बनेलौं। मुदा बेटीक बिआह, पढ़ाइ-लिखाइ एते भारी किए अछि जे जिनगी भरिक कमाइसँ लोककेँ पारो ने लगै छइ। जँ एतबेमे सभ ओझरा जाएत तँ समाजक गति केहेन हएत? जँ समाज दुरगैतक चालि पकैड़ चलत तँ मनुक्खक पैदाइस केहेन हएत। जैठामक जेहेन मनुक्ख तैठाम तेहने दुनियाँ...।

करोट फेरते जीवानन्दक मनमे उठलैन जे हारि मानी झगड़ा फड़ियए। पत्नीसँ क्षमा माँगि लेब। जँ से नइ माँगब तँ हुनकर विचार छिऐन जे घरमे रहए दैथ वा नहि। समाजक संग तँ वएह रहली। पत्नीक प्रति जे प्रेम हेबा चाही से कहाँ कहियो भेल। क्षण-पलक सम्बन्ध रहल, जीवन-लीलाक सम्बन्ध कहाँ रहल! हुनकर दुनियाँ हमरासँ भिन्न रहलैन। मुदा आइ तँ ओही दुनियाँक जरूरत हमरो भऽ गेल अछि। खण्ड विकसित देशमे जहिना जनता-सरकारक बीच सम्बन्ध रहैत, तहिना ने भऽ गेल अछि। जेना पति रूपमे ओ सेवा केलैन तेना हम कहाँ केलिऐन। जँ से करितिऐन तँ ओ ओहिना ओत्तै अँटकल रहितैथ, जेतए नामो-गाम नै सीखि पेली। जतबो समय गाममे बितेलौं, हुनकर कमाइ खेलौं, तेतबो तँ हुनका नै कऽ सकलयैन। एतबे नहि, दरबज्जापर जे माल अछि, आ हुनका देखि भूख-पियास कहए लगै छैन मुदा हमरा देखि घिरनी जकाँ नाचि भगबए चाहैए। अठबारैयो जँ अबैत रहलौं तैयो तँ अपन बुझि खाइ-पीबैले किछु ने केलिऐ! कोनो कि मनुक्ख छी जे घड़ी-मोबाइल देखि मिनट-सेकेण्ड बुझत, ओकरा लेल तँ अठबारैयो सटले-दिन भेल। तहिना तँ गाछियो-बिरछीक अछि। जुड़शीतल दिनसँ ओकरा जलढार हेबा चाही से अनका तँ कहलिऐ, मुदा अपना...। किए ओ अपन बुझत?

जहिना सासुरमे जमाए सासु-ससुरक आगू लाड़-झाड़ करैत जे ई नै अछि तँ ओ नै अछि, तहिना जीवानन्द ओछाइनसँ उठि, बैसैत पत्नी दिस देखि बजला- “एते दिनक जिनगीमे कहियो निठुर दूध नै खेलौं। आब

अहाँक दरबारमे छी, जेना राखी।”

पतिक बात सुनि सुनयना विह्वल भऽ गेली। अपन कर्तव्यक बोध भेलैन। मन कहलकैन- पतिक सेवा पत्नीक पहिल दायित्व छी। मुदा लटारम करैत सुनयना बजली- “एना संस्कृतमे नै कहू, भखियौटीमे कहू जे की कहै छी?”

पत्नीक बात सुनि जीवानन्दक मन हेरा गेलैन। जैठाम सुग्गा-मेना संस्कृत-पाठ करै छल तैठाम मनुक्खक दूरी एते किए भेल? प्रश्नमे ओझराइते जीवानन्दकेँ बुकौर लगि गेलैन। बोली नै फुटलैन।

आजुक शिक्षक जकाँ जीवानन्दक जिनगी नै रहलैन। शिक्षक समाजक प्रति समरपित छला। ओइ समाजक बीच पढ़ाइ-लिखाइ प्रतिष्ठाक मूल बिन्दु छल। ओ सभ मानै छैथ जे जइ विषयक जरूरत विद्यार्थीकेँ ट्यूशन पढ़बाक होइ छै ओइ विषयक पढ़ाइमे कमी छइ। विद्यार्थी लेल किछु सहज विषय होइत अछि किछु कठिन। मुदा जइ विषयक जे शिक्षक होइ छैथ हुनका लेल तँ ई समस्या नै भेल। जँ हुनकामे शिक्षणकलाक पूर्णता हेतैन तँ विद्यार्थीकेँ किए समस्या ग्रस्त रहए देथिन। की वजह छै जे अपना ऐठाम अदौसँ लऽ कऽ अखन धरि शिक्षण-संस्थानमे छड़ीक चलैन नै रहल] मुदा तँए कि कियो पढ़ि-लिखि विद्वान नै भेला? भेला।

जइ हाइ स्कूलमे जीवानन्द शिक्षण कार्य करै छला ओइ विद्यालयकेँ अपन छात्रावास सेहो छइ। जइमे पचाससँ ऊपर छात्रो आ अदहासँ बेसी शिक्षको रहैत। मेसमे भोजन जएह विद्यार्थी लेल सहए शिक्षको लेल बनैत। ओना, शिक्षक सभ अलगसँ दूध कीनि रातिमे सुतै बेर पीबैथ।

जहिना बाटमे हेराएल बटोही दोसरकेँ पुछैत, मुदा उत्तर देनिहारो तँ रंग-बिरंगक होइत अछि। कियो एहनो होइत जे अपने हरेबाक चर्च करैत, तँ कियो हेराएलकेँ आरो हेराएल बाट देखा दैत, आ कियो एहनो होइत जे कहैत जे संगे चलू। ओ ऐ आशाक संग चलैक बात कहैत जे जँ किछु नै कहबै तँ गोंग कहत, मुदा बिनु बुझलमे की जवाबो देल जा सकैए। ओ संग केने ताधैर चलैत रहैए जाधैर आँखिगर नै भेट जाइ छइ। तहिना अर्द्धांगिनी

रूपमे सुनयना पुछलखिन- “की सुच्चा दूध कहलिऐ?”

जीवानन्द बजला- “पैंतीस सालक नोकरीमे कहियो सुच्चा दूध नहि पीब सकलौं। पीलौं जरूर मुदा ओकरा अदहासँ बेसी थोड़े कहल जेतइ।”

जहिना मृत्तासनपर चढ़ल राहीकेँ सर-समाजसँ लऽ कऽ आ कुटुम-परिवारक लोक आबि-आबि जिज्ञासा करैत जे ‘भैया’, कि ‘काका’, आकि ‘बाबा’ कथी खाइ-पीबैक मन होइए, तहिना सुनयना पुछलखिन- “एते दिन जेतए अहाँ छेलौं छेलौं आ हम छेलौं छेलौं। मुदा आब तँ ओत्तै अहूँ रहब जेतए हम छी।”

पत्नीक विचारक गाम्भीर्यसँ जीवानन्द आँखि पड़ल अजगर साँपक सोझसँ पड़ा नहि पाबि, बजला- “कहलौं तँ बेस बात मुदा मनुक्ख तँ मनुक्खक बीच किछु बन्धन निर्धारित कऽ रहैत अछि। डोरी-पगहाक जरूरत तँ पशु लेल होएत, मुदा बान्ह तँ एकमुड़िया नै भऽ सकैए। ओकरा लेल तँ जाधैर दू-मुड़िया नै लटपटौल जाएत, ताधैर गीरह केना पड़तै। जाधैर कुशियारक गाछ जकाँ गीरह नै बनत ताधैर रस-जल केना समटाएल रहत?”

पत्नीक प्रश्न सुनि जीवानन्द जिनगीक ओझरी देखए लगला जे ई बन्धन छुटल कहिया। तरसैत मन पत्नीक करेजमे पहुँचलैन। जहिना निशाँएल लोक अपने अड़-दड़ बजैत तहिना जीवानन्द बाजए लगला- “कामिनी, सेविकाक रूप छोड़ि संगी कहिया बुझलयैन। ई दोख केकर? मुदा दोख तँ दुनू दिस देखए पड़त। पत्नी कोन रूप देखलैन। सभ दिन ओ पति बुझि सेवा करैत एली। कहियो किछु नै मंगलैन। अपन परिवारक स्तर बुझि अपनाकेँ सम्हारि रखली।”

बड़बड़ाइत पतिकेँ देखि सुनयना बजली- “हारि मानी झगड़ा फरियाए। एके बेर बाजि जाउ जे जे हूसल से हेराएल, जे जीबए से खेलए फॉगु।”

मरैत रोगी जकाँ जीवानन्द बजला- “सुच्चा दूध आबो नै पीब सकै छी?”

“पीब सकै छी। जखन गाए पोसैक लूरि अछि तखन किए ने पीब

सकै छी। मुदा जैठाम दिन-राति लूटनिहार लूटि रहल अछि तैठाम थनक दूध कण्ठ लग पहुँचत कि नहि, तेकर कोन बिसवास?”

पत्नीक प्रश्न सुनि जीवानन्द जी-जी कऽ उठला। बिसरल बात मोन पड़लापर जहिना ओकर रूपो-रेखा सोझमे आबए लगैत तहिना भेलैन। बजला-

“शुद्ध-अशुद्ध दूध ने एक परिवारक समस्या छी आ ने एक गामक। दूधमे पानि देब चलैन भऽ गेल अछि। ओना, जे अपने गाए-महींस पोसि दूध खाइ छैथ, तिनकर संख्या कम अछि। जे बेचनिहार छैथ ओ दूध बेचि चाउर-दालि, तरकारी इत्यादि कीनै छैथ। खाली दूधेटा मे पानि नै देखै छथिन। आनो-आनो तहिना अछि, तखन कएल की जाए। कुल-मिला कऽ देखलापर यएह ने देखा रहल अछि जे ताड़ी पीयाक, गांजा पीयाककेँ गारि पढ़ि कहैत अछि, ओ फोकटिया अछि। अहिना एक-दोसरमे सटल सम्बन्ध अछि। सभकेँ सभ गारि पढ़ैए आ सबहक सभ सुनैए। तहूसँ टपि अपने मुहेँ गरिया अपने सेहो सुनैए।”

विह्वल होइत सुनयना टोकलकैन-

“तखन उपाय?”

“उपाय एतबे जे जेते परिवारमे खर्च हएत कम-सँ-कम ओतबो उपारजन कऽ लेब तखन परिवारक पार लगि जाएत। तहिना गाममे जेतेक खर्च अछि ओते जँ गौंआँ मिलि उपारजन कऽ लेता तँ गामोक पार लगि जाएत। जइसँ समाजेक कल्याण नहि, देशक कल्याण सेहो हएत।”



शब्द संख्या: 2152

कर्ज

जमीन निलामीक नोटिश पाबि बरिसलालक सभ आशा ओहिना झड़ए लगल जहिना वसन्तसँ पूर्व गाछक पतझड़ होइत वा फलसँ पहिने फूल झड़ए लगैत। हलसैत जिनगीक आशा देखि बैंकसँ कर्ज लऽ बोरिंग-दमकल करौलक। मुदा समैपर कर्ज अदा नै कए सकल, जइले कर्ज लेलक सएह हाथसँ निकलैत देखि सोगसँ सोगाएल अखड़े चौकीपर पेटकान दऽ मने-मन सोचैत जे की करैत की भेल। सौनक मेघ जकाँ बरिसलालक दुनू आँखिमे नोर भरि गेल।

बीसम शताब्दीक आठम दशकमे हरित-क्रान्तिक हवा घुसकैत-घुसकैत गाम धरि पहुँचल। नव हवाक सुगन्ध नाके-नाकसँ लऽ कऽ खेतो-खरिहाँनमे पहुँचल। गामक किसानक सीमांकन शुरू भेल। ओना, सीमांकन नाम-मात्रेक भेल मुदा भेल तँ। नाम-मात्र ऐ लेल जे सैद्धान्तिक रूपमे तँ सीमांकनक रूप रेखा तैयार भेल, मुदा जमीनक ओझरी कँटहा बाँस जकाँ ओझराएल छल। जइमे कड़चीसँ बेसी काँट। एक-एक कड़चीमे साइयो काँट। सोरगर-मोटगर पाकल देखि भलेँ आरीसँ जड़ि काटि दियौ मुदा झोंझसँ निकालब असान नहि। जइसँ बेवहारिक पक्ष कमजोर पड़ल। चारि श्रेणीक अन्तर्गत किसानकेँ रखल गेलैन। अढ़ाइ एकड़सँ निच्चाँ एक श्रेणी, चारि एकड़सँ निच्चाँ दोसर श्रेणी, दससँ निच्चाँ तेसर आ तइसँ ऊपर चारिम श्रेणी। निचला किसान लेल सरकारी खजाना खुजल। रंग-रंगक प्रोत्साहनक घोषणा भेल। सरकारी घोषणा, तँए सभले भेल जे बैंकक माध्यमसँ बोरिंग-दमकल भेटत।

मुदा जइ माध्यमसँ बोरिंग-दमकल भेटत सएह नगण्य। एक दिस फौज जकाँ किसान तँ दोसर दिस जैठामसँ भेटत सएह नहि। मुदा तैयो गोटि-पँगरा तँ छेलैहे। सरकारी सुविधा सब्सिडीक रूपमे भेटत। तेकर कार्यालय भिन्न बनल।

किसानक बीच प्रोत्साहनक घोषणासँ नव जागरणक संचार भेल।

गाम-गाममे भी.एल.डब्लू.क माध्यमसँ काजक सूत्र तैयार भेल। आने किसान जकाँ बरिसलालोक डेग बढ़ल। एक-तिहाइ सब्सिडी सुनि बढ़बो केना ने करैत। जखने किसानक हाथ पानि औत तखने चौमसिया खेती बारहमसिया बनि जाएत। जखने बारहमसिया बनत तखने ने किसान डारि-डारि झूला लगा बरहमासा गौत। जँ से नहि, तँ छहमासे, चौमासा ने गबैत रहत। जे चौमास किसानक बखारी छी, तेहीमे ने भाँग-धुथुर उपजैए।

वस्तुगत काज तँ नहि, मुदा चौरीसँ चौमास धरिक, चारि गुणा उपजाक नक्शा तँ किसानक मनमे बनबे कएल। बीघा-एकड़क हिसाब भलेँ अखनो धरि नै फरियाएल मुदा-एकड़-हेक्टेयर तँ आबिए गेल अछि। किछु एनए आ किछु ओनए करैत किसान अपन हिसाब तँ बैसाइए लेलक।

अखन धरिक जे छोट आ मध्यम किसान महाजनीक कर्जमे डुमल छल ओइमे पूजीपतिक प्रवेशक दुआर खुजल। कम सुदिक बात तँ आएल, मुदा छह मासक पछाइत सुदि-मुरि बनि जाएत से एबे ने कएल। अखन धरि जे सुदिक सुदक प्रथा नै छल सेहो आएल। भलेँ केतौ महाजन सप्पत खा केकरो घराड़ी लऽ नेने होइ आकि केतौ सप्पत खा कर्जा डुमा देने होइ, ई अलग बात। औझुका जकाँ दहेजो ओते भारी नै छल जेते माए-बापक सराध। ओना, दहेजोक जड़ि मजगूत बनि रहल छल, किएक तँ शहरक आमदनी गाम दिस आबए लगल छल। गाममे छोट पैघ किसानोक संख्या बेसी, मुदा बोनिहारक संख्यासँ कम अछि। ओना, सभ गामक रूपो-रेखा एक रंग नहियेँ अछि। कोनो गाम एहेन अछि जइमे पाँच प्रतिशतसँ कम जनसंख्या गामक नबे-पनचानबे प्रतिशत जमीन पकड़ने अछि, तँ कोनो गाम एहेनो अछि जइमे दस-पनरह प्रतिशतक अन्तर छइ। ओना, एहनो किसान छैथे जिनका अपन जमीनक अता-पता नै बुझल तँ एहनो किसान जे अपने सबतूर मिलि खेती करै छैथ। तैसंग एहनो ऐछे जे खेतक आड़िपर पहुँच जूति-भाँति तँ लगबैत अछि मुदा अपने हाथे किछु नै करैए।

गाछी, खरहोरि, बँसवाड़ि आ घराड़ी लगा बरिसलालकेँ पाँच बीघा जमीन अछि। जइमे दू बीघा बेख-बुनियादिमे फँसल छै, बाँकी तीन बीघा जोतसीम। एकटा बरद राखि सफटैती कऽ खेती करैत अछि। ओहू तीन

बीघा जोतसीममे तीन मेलक जमीन छइ। पनरह कट्ठा चौरीमे छै, जेकर मलगुजारीक संग लगतो साले-साल डुमि जाइ छइ। मुदा छोड़ियो केना देत, आखिर खेत तँ खेत छी। रौदी भेने ओहीमे ने उपजा होइ छइ। बाँकी सवा दू बीघा मध्यमसँ भीठ धरिक जमीन छइ। दसो कट्ठा भीठमे मरूआ, भदै आ गदैरक संग कुरथी-तेबखा होइ छइ।

गहुमक खेती तँ आबि गेल मुदा तइले तँ पानि चाही। पानिक साधन मात्र पोखैर अछि, जइमे करीन लगा किछु अगल-बगलक खेतक पटबन लोक करैए। लोकक बीच ने पढ़बै-लिखबैक जिज्ञासा रहै आ ने सुविधा। गनल-गूथल विद्यालय-महाविद्यालय। बरिसलालो दुनू बेटाकेँ गामक स्कूल धरि पढ़ा खेतीए-बाड़ीमे लगौने....।

मिथिलाक किसान खेतक ओहन प्रेमी बनल रहला जेहेन पतिव्रता नारी जे बाल विधवा होइतो प्रतिष्ठाकेँ कमलक माला बना गरदेनमे लटका हँसि रहली अछि। जँ से नै रहल छैथ तँ भागि-पड़ा अर्थशास्त्री बनि किए अपन खेत-पथारकेँ सम्पैत नै बुझि प्रतिष्ठाक वस्तु बुझि रहल छैथ? की ओहिना खेतीकेँ उत्तम आ नोकरीकेँ मध्यमक विचार देलैन? जँ एकरा मुहावरा-कहावत बना देखब तँ मिथिलाक चिन्तनधारा धरि नै पहुँच पाएब। जैठाम खेतकेँ अपन अधिकारक वस्तु बुझि अपना हाथक हथियार बना अपन स्वतंत्रताकेँ अक्षुण्य रखैक विचार सेहो देलैन। ई तँ अपन-अपन विचार होइ छै जे कियो हथियारकेँ बम-बारूद बुझैत तँ कियो हाथक यार बुझि विचारक बाट बनबैक विचार व्यक्त करैत। तहिना अस्त्र–शस्त्र सेहो अछि।

मध्यम किसान वा लघु किसानक जीबैक जिनगी ब्लौटिंग पेपर सदृश बनि गेल छैन। जेकरामे लालो आ कारियो रोशनाइकेँ सोंखैक शक्ति छै। बाढ़ि-रौदी एकैसम शताब्दीक ऊपज नहि, अदौसँ रहल अछि। भलेँ कहि सकै छी जे धार-धुरक बान्ह-छान्ह दुआरे हुअ लगल अछि, भऽ सकै छै, केतौ-होइत हेतै, मुदा प्रश्न धारेक पानिक नहि अछि, तहिना रौदियो रहल अछि। धारोक कटनी-खोंटनी कम नहि अछि। मिथिलांचलकेँ कोसी-कमला तेखार कऽ देने अछि। प्रश्न अछि बाढ़िक जड़ि। पहाड़ी धार छी, जे दुब्बरसँ धोधिगर धरि अछि। पानिक एक साधन भेल, दोसर बरखा भेल।

ओहन-ओहन बरखा होइत रहल अछि जे पनरह-पनरह दिनक ओरियान पहिनहिसँ कऽ कऽ पूर्वज रखै छला। हथिया मात्र एक नहि जेकरा बरखा ऋृतुक अन्तिम नक्षत्र कहि टारि देब। पनरह-पनरह दिन लधले रहै छल। ओना, बरखाक कोनो ठेकान नहि, माघोमे पाथर खसि उपजल उपजाकेँ नास करैत रहल अछि। अन्तिमक जन्म ताधैर नै होइत जाधैर आदि नै होइत, बरखा ऋृतुक आदि आद्रा छी। तँए 'आदि आद्रा अन्त हस्त' ई भेल बरखाक आँट-पेट। पूर्वज सभ स्पष्ट विचार देने छैथ जे बरखाक कोनो बिसवास नहि जे केते हएत। 1971 ई.मे बंगला देशक लड़ाइक लगभग सालो भरि बरखा होइते रहल, ओहन-ओहन बरखा होइत रहल अछि जइमे साएक-साए घर खसैत रहल अछि। घरमे दबल बाल-वृद्ध, माल-जाल, धन-सम्पैत इत्यादि नष्ट होइत रहल अछि मुदा तैयो ब्लौटिंग पेपर जकाँ सभ किछुकेँ सोंखि ऐठामक किसान जीबैक बाट धेने आबि रहल अछि। दुनियाँमे ने साधकक कमी अछि आ ने साधना भूमिक, मुदा मिथिलांचल श्रेष्ठ किए? केतौ जाड़क साधना तँ केतौ तापक तप तपि तपस्या करैत, तँ केतौ पानिक तपस्या सौभरी ऋृषि बनि करैत। मुदा तैयो मिथिलांचल साधनाक फुलवारी लगा रखने अछि जइ फुलवारीक फूल मैथिलानी सीता सजबैत रहली अछि। ने मिथिलाक भूमि बदलल, आ ने बदलल ऋृतु ऋृतुराज, बदैल रहल अछि खाली बोतलक रस। घरक समस्या कहाँ? समस्या तँ तखन उठैत जखन रहैक घरसँ घर-भाड़ा असुलैक विचार जगैत। गाछक निच्चाँ सात हाथ, नौ हाथक घरमे जीवन-यापन कऽ वेद-पुराण सिरजलैन। की दुनियाँक देखनिहार मिथिलांचल छोड़ि देखि रहला अछि? जँ से नहि तँ समस्याकेँ कोन रूपेँ देखलैन? यएह ने सरकारी योजना जहिना कागतपर औषधालय बना साले-साल मरम्मतक नाओंपर योजना लूटाइत रहअ आ पान सालक बाद माटिपर खसा मलबा हटबैक खर्च होइत रहअ।

खेतसँ उपजल खढ़, बाँस आ साबेक घर बना समस्याक समाधान करै छला। ओ सभ अपन विचारकेँ स्वतंत्र रखि स्वतंत्र जीवन बेतित करै छला। पढ़ै-लिखैक ओते समस्या नहि, किएक तँ जेहेन जिनगी रहत, तेतबे बुधिक ने जरूरत हएत। बेसी भेलासँ तँ लोक छड़ैप-छड़ैप अनको गाछक

आम तोड़ए लगैए। भलेँ अपन पूर्वजक घराड़ीपर नढ़िया किए ने भुकए, मुदा दुनियाँकेँ मातृभूमि कहि सेवारत् रहै छी। ओही रूपक फूसिघर बना जिनगीक गारंटी केने छला। अखुनका जकाँ नहि, जे एक दिस लग्गी लगा भाँटा तोड़ैक बाट धेने छी आ दोसर दिस हजार-दस-हजार बर्ख जीबैबला ऋृषि-मुनिक दुहाइ दइ छी। एकैसम सदीमे कियो अपनाकेँ ऐगला पीढ़ीक नजैरक पुतली बना रहल छी। जहिना बरखा, तहिना जाड़ आ तहिना रौदक ताप तपैत लोक अपन बाल जीवनसँ लऽ कऽ वृद्ध तकक अनुभव करैत जिनगीकेँ असथिर बना नीक-नीक उमेर पबैत रहला अछि।

प्रश्न उठैत जे की एहेन विचार मरि गेल आकि जीवित अछि? ने मरल आ ने स्वस्थ भऽ जीवित अछि। गाम-समाजमे लटपटाइत जीवित जरूर अछि मुदा...। जीवित ऐ रूपेँ अछि जे अखनो खेतीकेँ उत्तम मानल जाइत अछि। कृषि जिनगीकेँ थाहि चलबैए। तहूमे सामाजिक स्तरपर तँ आरो थाहल अछि। जइ जिनगीमे दोसराक जरूरत नै हुअए तँ ऐ सँ नीक जीवन केकरा कहबै? आजुक हवा भलेँ जेतेक जोर मारए मुदा असथिर वस्तुकेँ कहाँ किछु बिगाड़ि पबैए। अनभुआर धारमे ने नमहर-नमहर जलचरक भय रहै छै किएक तँ धुमैत धार गहींर-गहींर मोइन फोरि लइए जइमे ने डुमैक डर रहै छै, जँ से नहि, तँ डुमैक डर केतए। तहिना ने धरतियोक बीच अछि। जहिना पानिमे गोहि, नकार आदि रहैए तहिना ने धरतियोपर बाघ, सिंहसँ लऽ कऽ नाग सेहो बास करैए।

..थाहल जिनगीक अर्थ ई जे जँ तीन बीघा वा दू बीघा जमीनमे समुचित बेवस्था कऽ खेती कएल जाए तँ युगानुकूल मनुक्ख बनब बड़ भारी नहि। जिनगी तखन भारी बनैए जखन गरथाहमे पड़ि जाइत अछि। ओना, किसानक जिनगीकेँ पंगु बना देल गेल अछि। जँ से नहि, तँ किसान हितैषी कोन जरूरतक पूर्ति सरकारी बेवस्थामे नै भऽ पाबि सकैए। मुदा नीको-नीको परिवार माने दस बीघासँ ऊपरबला किसान परिवार ने अपना बेटाकेँ नीक शिक्षा दऽ पाबि रहल अछि आ ने जनमारा बिमारीक इलाज कऽ पाबि रहल अछि। जहिना सुति उठि ‘सीता-राम’, ‘राधा-कृष्ण’ वा ‘सतनाम’क नाम लेल जाइत तहिना ने आब ‘टाटा-पापा’ लैत उठै छी। मुदा, की हम सभ नढ़रा मकै सदृश जिनगी नै जीबै छी जे भोगर गाछ

रहितो अन्नक केतौ पता नहि! कृषि तँ आमक बगीचा वा खीड़ाक लत्ती सदृश अछि। जहिना गाछक पल्लवक मुहसँ गिरहे-गिरहे पल्लव निकैल डारि बनैत रहैए, खीड़ा लत्तीक मुहसँ लत्ती बनि फुलाइत-फड़ैत रहैए तहिना ने जिनगियो छी जे धरतीसँ जनैम फुलाइत-फड़ैत विसरजन करत। खेत तँ ओहन सम्पैत छी जे जिनगीकेँ आगू-बढ़बैक शक्ति रखैए। केतबो शक्तिशाली किए ने आगि हुअए मुदा जँ ओइमे नव ज्वलनशील वस्तुक समागम नै हेतै, तँ केतेकाल ओ जीवित रहि सकैए। मुदा जाधैर धार टपनिहार वा सरोवरमे स्नान केनिहारकेँ पानिक थाह नै लगि जाएत, ताधैर धार टपब वा स्नान करब तँ अथाहे रहत। आ जाधैर अथाह रहत ताधैर शंका रहबे करत। जाधैर आशंका रहत ताधैर विचार प्रभावित हेबे करत। मुदा एतेकक बावजूद हम किए..? की हम नै जनै छी जे जाधैर कृषिकेँ सर्वांगिन विकासक प्रक्रियामे नै अपनौल जाएत ताधैर नचारी-सोहर केतेकाल सोहनगर हएत। हर आदमी आ हर परिवारकेँ ठाढ़ भऽ चलैक प्रश्न अछि, नै कि एक दोसराकेँ छिटकी मारि खसबैक...।

पाँचटा किसानक संग बरिसलाल सेहो बोरिंग-दमकलक विचारकेँ आगू बढ़ौलक। प्रखण्ड कार्यालयसँ फार्म लऽ बैंकमे आवेदन देलक। संगीक जरूरत तँ पड़बे केलै, किएक तँ जिनगीमे पहिल खेप प्रखण्ड कार्यालय आ बैंक पहुँचैक अवसर भेटलै। नव योजनाक काज बैंकमे आएल। ओना, गामक आ गामक किसानक हिसाबे बैंकक संख्या दूधक डाढ़िए छल, मुदा छल तँ।

बरिसलालक आवेदन स्वीकृति करैत जमीनक बौन्ड बना माइनर एरिगेशनकेँ काज करैक भार देलक। बैंक-कर्जक सुदि शुरू भेल।

माइनर ऐरिगेशनक आँट-पेट छोट। एकाएक काजमे बढ़ोत्तरी भेल। ने काज करैक औजार अधिक आ ने करैबला। तँए ठीकेदारीक चलैन। तहूमे एक अनुमण्डलक बीच एकटा कार्यालय। लेनिहार हजार हाथ, देनिहार एक हाथ। मुदा तैयो बरिसलालक आदेश पत्रकेँ फाइलमे लगा देल गेल। एक-तिहाइ सब्सिडी लेल सब्सिडी कार्यालयक जरूरत रहबे करइ जे जिलाक अन्तर्गत छल।

दौड़-बरहा करैत बरिसलालकेँ खर्चक संग-संग साल बीति गेल।

वरसातमे एक तँ धसना धँसैक डर दोसर लोक खेती कहिया करत। बोरिंगक काज छोड़ि बरिसलाल खेतीमे लगि गेल। पहिल साल बीतल, दोसर साल शुरू भेल। ताधैर बैंकक कर्ज चक्रवृद्धि ब्याजक दरसँ एते मोटा गेल जे सब्सिडी तहीमे उधिया गेल।

दोसर साल, शुरूहेसँ बरिसलाल अपन काजक पाछू पड़ि गेल। मुदा आइ-काल्हि करैत माइनरो-एरिगेशनक काज आ सब्सिडियो ऑफिसक काज लटकले रहलै। चढ़ैत बैसाख बरिसलाल रघुनन्दनकेँ कहलक-

"बौआ, छोड़ि दहक। बोरिंग नै भेल तँ करजो तँ नहियेँ भेल। बुझबै जे एते दिन घुमबे-फिरबे केलौं।"

बैंकक प्रक्रिया रघुनन्दनकेँ बुझल। बरिसलालक बात सुनि अवाक् भऽ गेल। मन कलैप उठलै- बाप रे, सुदि-मुरि लदा गेलै, कोट-कचहरीक मुद्दा बनि गेलइ! दोख केकरा लगतै? कोन मुँह लऽ कऽ समाजमे रहब!

ग्लानिसँ रघुनन्दनक मन बिसाइन भऽ गेलइ। साहस बटोरि बाजल-

"काका, जँए एते दिन तँए दू मास आरो। बैसाख-जेठ बँचल अछि। काल्हि चलू, या तँ अपन काज आपस लेब वा हाथ पकैड़ काज कराएब। तइले जे हेतै से देखल जेतइ।"

रघुनन्दनक बात सुनि बरिसलाल ठमैक गेल। बाजल- "बौआ, हम तँ तोरेपर छी, आगिमे जाइले कहह आकि पानिमे, तोरासँ बाहर थोड़े हएब।"

बरिसलालक विचार सुनि रघुनन्दनक मनमे उत्साह जगल। दोसर दिन दुनू गोरे माइनर एरिगेशनक कार्यालयसँ बोरिंग गाड़ैक सामान नेने आएल। गाड़ैक दिन तकबए गेल तँ आगूमे भदबा पड़ैत रहइ। जोड़-घटाउ करैत आठ दिन पछाइत बोर करब शुरू भेल। सिरिफ ठीकेदारेटा आएल बाँकी सभ काज गामेक मजदूर करत। ओना, बोरिंगक काजमे गामक मजदूर अनाड़ीए छल मुदा अनाड़ियो तँ केते रंगक होइ छइ किने। जेते काज तेते जीवनी आ तेते अनाड़ी। जखने काजक लूरि भऽ गेल तखने जीवनी, आ जाधैर नै भेल रहल ताधैर अनाड़ी।

तेतबे नहि, एक काजक जीवनी दोसर काजक अनाड़ी सेहो होइते

अछि। तँए जीवनी-अनाड़ीक भेद करब कठिन। ओना, काजक भितरो जीवनी-अनाड़ी होइत अछि। जहिना एकपर साए खड़ा अछि तहिना कहैले तँ ‘एक’ पहिल सीमा भेल आ ‘साए’ दोसर सीमा, मुदा दुनूक बीच अन्तर ओतेक अछि जेते एक प्रतिशत आ साए प्रतिशत होइए। तहिना काजोक अछि। एके काजक भीतर साइयो रंगक काजक अंश होइत अछि। किछु अंशक बादे जीवनी मानल जाए लगैत अछि मुदा लूरिगर होइतो पूर्ण लूरिगर नहियोँ मानल जाइत। पूर्ण लूरिगर तखन मानल जाएत जखन काज एक समय-सीमाक भीतर होइत अछि। ओना, काजोक सीमाक निर्धारन व्यास पद्धतिक अनुकूल होएत। जँ से नै होएत तँ किछु एहनो काज केनिहार छैथ जे समैयो-सीमासँ पहिनहि कऽ लइ छैथ आ किछु एहनो छैथ जे काज तँ कऽ लइ छैथ मुदा समय-सीमा टपा कऽ। तँए कि ओकरा अनाड़ी कहल जेतइ?

मुलाइम माटि रहने सबा साए फीट बोर आठे दिनमे भऽ गेल। लेयरो बढ़ियाँ, चालीस फीट लेयर। ओना, जँ नीक लेयर होइत तँ पनरहो फीटमे पाँच हार्स पावरक इंजन पूर्ण पानि पकड़ैत, मुदा लेयरोक तँ ठेकान नहि, नीक-अधला संगे अछि। कोनो बाउल–जेना सौतबी–एहेन होइत जइमे पानिक मात्रा पनरह प्रतिशतक आस-पास रहैत आ कोनो एहेन होइत जइमे अस्सी प्रतिशत तक पानि रहैत। मुदा बरिसलालक बोरक लेयरक स्थिति किछु भिन्न छल। निच्चाँक तीस फीट लेयरमे अस्सी प्रतिशत पानि छल आ ऊपरकामे कम। तँए ठीकेदार बाजल-

“बरिसलाल बाबू, अहाँक तकदीर नीक अछि। कहियो बोरिंग-भथन नै हएत। किएक तँ तेहेन निचला बाउल अछि जे सभ दिन पानि दनदनाइते रहत। तँए नीक हएत जे जहिना भीत-घरमे ठेमा-ठेमा रद्दा पड़ैए तहिना किछु दिन जे बोर ठेमा जाएत तँ धँसना धँसैक सम्भावना समाप्त भऽ जाएत। ओना, क्रेसिंग-पाइपसँ बोर कएल अछि, पाइप लोड करैमे कोनो दिक्कत हेबे ने करत, मुदा अहीं हितमे कहै छी।”

ठीकेदारक मुहसँ ‘तकदीर’ सुनि बरिसलालक मन उधिया गेल। ठीकेदारक ऐगला बात नीक नहाँति सुनबे ने केलक। अन्तिममे ‘हित’क चर्च सुनि बाजल- “ठीकेदार साहैब, अहाँ कि कियो बीरान थोड़े छी जे

अधला करब। अहाँ तँ सद्य: इन्द्र भगवान छी, जेमहर ताकि देबै तेम्हरे ताड़ि देबइ। जेना-जेना अहाँ कहब तेना-तेना करैले तैयार छी।”

ठीकेदार बाजल- “हमरो गाम गेना बहुत दिन भऽ गेल। अखन ऑफिसक छुट्टीक काजो ने अछि। किएक तँ बोर करैक सीमा जेते अछि तइ पूरैमे एकबेर गामसँ घुमि आएब। अहूँक काज नीक हएत आ अपनो काज भऽ जाएत।”

कहि ठीकेदार गाम चलि गेल।

पनरह दिन बीति गेल। जेठ चलए लगल। रोहैण नक्षत्रक आगमन भऽ गेल। संयोगो नीक रहल जे अगते विहड़िया हाल सेहो भऽ गेल। जहिना भक्त भगवानक मिलन होइत तहिना बरिसलालक मनमे उठल- अपनो हाथ पानि आबि गेल, ऊपरसँ भगवानो देता। पानिक धनिक बनि जाएब...।

जहिना टिकुली अपन पाँखिक होश केने बिना हवामे उड़ैत-उधियाइत ओतए तक पहुँच जाइए जेतए ओकर पाँखि बेकाबू भऽ टुटि जाइ छै, माने माटिक चुट्टी वा गाछक घोड़नकेँ पाँखि होइते जहिना मरैक दिन लगिचा जाइ छै, मुदा बुझि नै पबैत अछि तहिना बरिसलालोकेँ हुअ लगल। मुदा रोहणियाँ हाल जहिना धरतीक शक्तिमे नव उर्जा दैत तहिना बरिसलालोक मनमे आएल। पत्नियोँ आ दुनू बेटोकेँ शोर पाड़लक।

लगमे अबिते तेल विहीन बच्चाक मुँह लाली धरैत अनरनेबा जकाँ हरियरसँ लाल होइत देखलक। तहिना पत्नियोँक ओ दिन मोन पड़लै जइ दिन हाथ पकैड़ जिनगीक भार उठौने छल। किए ने लोक भार उठौत। जखन एकटा नव शब्द ताधैर संग पूरैत जाधैर ओकर मथन होइत। नै तँ संगे किए रहत, बड़ीटा दुनियाँ छै केतौ वौड़ जाएत। पत्नीक नव रूप देखि बेटाकेँ सम्बोधित करैत बरिसलाल बाजल- “बौआ, तोरा सभकेँ जहिना कोरा-काँखमे खेलेलियह तहिना हँसी-खुशीसँ जीबैक ओरियान सेहो कऽ देलियह।”

पतिक बात सुनि सुशीलाक मन पहाड़क झरनासँ झड़ैत पानिक चमकैत रेत जकाँ चमकए लगलैन। बजली- “सोझहे दीक्षा देने नै हाएत।

एक-एक दिन, एक-एक क्षणक काजक बात बुझा दियौ तखन हएत?"

अखन धरि बरिसलाल कोट-कचहरी करैत बहुत किछु सीख नेने छल। गाम-गामक खेती-पथारी, फल-फलहरी, तीमन-तरकारीक संग गाम-गामक माल-जालसँ लऽ कऽ माछ पोसब इत्यादि सभ किछुकेँ देखि-सुनि चुकल छल।

जहिना मिडिल स्कूलक बच्चा हाइ स्कूलमे प्रवेश करैत नव-नव पोथी देखि ललाए लगैत तहिना बरिसलालक दुनू बेटाक जिज्ञासा जगल। जिज्ञासा देखि बरिसलाल बाजल- "बौआ, माटिमे धन छिड़ियाएल छै खाली बीछिनिहार चाही।"

अखन धरि दुनू भाँइ आमक टुकलासँ लऽ कऽ पाकल आम धरि बीछि चुकल छल, तँए बीछैक बात सुनिते जेठका बेटा–महावीर–पुछलक-

"केना बिछबै बाबू?"

बरिसलाल बेटाक प्रश्न सुनि खुशिया गेल। आजुक बेटा जकाँ नहि, जे नोकरियो करैत आ नोकरो रखैत। जखन अपने काज अछि तखन अपनासँ जे समय बँचत सहए ने दोसरकेँ देब। बाजल- "बौआ, अखन तूँ सभ भारी काज करै-जोकर नै भेलह हेन। ओना, कनी-कनी जँ हेन्डिल मारब सीख लेबह तँ दमकलो चलाएल भइये जेतह। मुदा जँ दस कट्ठामे सालो भरि तरकारीक खेती करबह तँ ओते कोन परदेशिया कमाएत। हँ समय बदलने लोक रंग-बिरंगक वृत्तियो बदैल लेलक हेन। जइसँ किछु अनाप-सनाप सेहो भऽ रहल छइ। मुदा बुधिक संग पूजी आ पूजीक संग बुधि नै चलत तँ अनेरे दब-उनार होइत रहत।"

जेठक पूर्णिमा दिन बोरिंग लोड भेल। लोड होइसँ तीन दिन पहिने अपन ऊषा मशीन आबि गेल रहइ। बोरिंग लोड कऽ ठीकेदार-मजदूर मिलि माछक भोज खा, सोलह घन्टा पानि चला काज सम्पन्न केलक। अखाढ़ चढ़िते मानसून उतैर गेल। पहिलुके दिन तेहेन बरखा भेल जे खेत-पथारमे पानि लगि गेल। नीचला खेती बुड़ैक लक्षण धऽ लेलक। तेसरे दिन बाढ़ि चलि आएल। पोखैर-झाँखैर, चर-चाँचर भरि गेल। पानिपर पानि आ बाढ़िपर बाढ़ि केते बेर आबि गेल। दहार भऽ गेल। एहेन दहार भेल जे

नवान पाबैनोकेँ लोक बिसैर गेल। मुदा कातिक अबैत-अबैत रब्बी-राय छीटब शुरू भेल। गहुमक खेती नै भऽ सकल। किएत तँ अन्नमे गहुमक खेती सभसँ महग खेती होइत। मुदा धान नै भेने किसानक स्थिति बिगैड़ गेल। एक तँ ओहिना बरिसलालक स्थिति दू सालक दौड़-बरहामे बिगड़ले छेलै तैपर दाही आरो बिगाड़ि देलकै। सालो भरि बोरिंग-दमकल बैसल रहि गेलइ। तरकारी खेतीक ओहन दशा बनि गेल जेकर बाजार नहि। कच्चा सौदा, नष्ट होएत। देखैत-देखैत सतासीक बाढ़ि आ अठासीक भुमकम आबि गेल। जर-जर बरिसलाल फड़-फड़ करैत फड़फड़ा रहल छल। तही बीच बैंकक पक्षसँ जमीन-निलामीक नोटिश भेटलै।



शब्द संख्या: 2949

परदेशी बेटी

उबाइन होइते घटक काका दाँत पीसैत काकीपर बिगड़ैत घर छोड़ि विदा भेला। मनमे उठलैन- एहेन पड़ाइन पड़ा जाइ जे दोहरा कऽ ने घरक मुँह देखी आ ने घरेवालीक। मुदा ओहन क्रोधे आकि हँसबे कि जे दोसरपर नै बिसाए। एक तँ घरक बात तहूमे पति-पत्नीक बीचक, तँए अनका बजबो उचित नहि। दुनियाँमे केकरो कियो ने कहै छइ। भलेँ बिनु कहनौं दुनियाँ किए ने बुझिते हौउ...।

मने मन घटक काकाकेँ पकिया निर्णय भऽ गेलैन। लोकोकेँ कोन मतलब छै जे बताह जकाँ अनेरो अनका देखि हँसि देब आकि बिनु मतलबो-के घन्टा भरि केतौ सोखर पसारि देब। ओना, घटको काका आन जकाँ नहि, जे आँगनसँ निकैलते डेढ़िएपर-सँ पाछू घुमि-घुमि देखए लगितैथ, देखबो केना करितैथ? कोनो कि अदी-गुदी विचारक चोट लागल छैन, पुरुखे छिआ जे अखनो धरि बरदास केने छैथ, नहि तँ मूसक दबाइ पीब नेने रहितैथ।

एक तँ ओहुना अखन घटक काकाकेँ टोकैक लग्न नहि, कारण लगनक समय नै छी, लगनक समयमे ने पतियानी लागल काज रहै छैन, कुसमयमे तँ दुनियाँक निअमे छै जे अपनो लोक पुछैले तैयार नै होइत अछि, घटक काका तँ सहजे विदाइ लेनिहार छैथ। बिनु रेटक आमदनी। जेहेन मुँह तेहने आमद। ओना, नइ टोकैक ईहो कारण अछि जे मध-असरेसक गिरहस्ती चलैए, आइ-काल्हि जेते समय लोक केकरोसँ गप करत तेतेकाल जँ देहे कुरिया लेत तँ ओइसँ बेसी नीक। भगवान केकरो अधला बना पठबै छथिन, भलेँ रोगे-बियाधि किए ने हौउ। जँ सभ अधले रहैत तँ किए कियो देह कुरियबैले सोनाक सिक्का बना-बना आगूमे रखैत। ओहिना पैघ शैरीकार कहै छैथ- "न हौहैठमे मजा है, न कलकैल में मजा है,

खुदा ने दिया खुजली खुजलाने में मजा है।"

खाएर जे हौउ। ओना, किष्कारक समय रहने देवियो देवता अखन छुट्टी लऽ नेने छैथ, चौड़चनक पछाइत ज्वाइन करता। जहिना फुलही थारीमे जेतेकाल दही रहैत ओते बेसी कसाइन होइत तहिना घटक कक्काक मन कसाइन भेल जाइत रहैन। जहिना भरल पेटक प्रेम-गीतक स्वर आ जरल पेटक प्रेम-गीतक स्वरमे मात्राक भेद होइत तहिना घटक कक्काक मनमे उठैत रहैन जे आइ धरि कहियो नइ उठल छेलैन। केना नै उठितैन? सभ दिन दस गोरेक बीच हँसि-बाजि समय खटियबैत रहला आ आब जखन शिव लिंगक, फूल जकाँ वा नारियल-ताड़ जकाँ फड़ैबला भेला तँ आनक कोन गप जे जाँघतर बसैवाली पत्नियोँ दुतकारि देलकैन। ई तँ हिनके चाबस्सी होनि जे जहर-माहुरक कोन गप जे केकरो लग बजौ नै चाहै छैथ।

कसाइन बीच बिसाइन भेल घटक कक्काक मनमे उठलैन। जिनगी भरि घरे बसबैक काज करैत एलौं मुदा..? बेटा, प्रेमसँ चाहे बिगैड़ कऽ आकि पड़ा कऽ परदेश चलि गेल तँ चलि गेल। सबहक बेटी सासुर बास करैए, ओहो करह। मुदा पत्नी तँ पत्नी छी। जँ घरे नहि, तँ घरवाली की, आ घरेवाली नहि, तँ घर केहेन। भाड़ाक घर जँ अपना घर सन होइतै तँ मूसे किए घरमे घर बनबैत। ओकरो तँ पानियेँसँ आ पाथरोसँ ने जान बँचबैक छइ। मुदा किए? अपन घर कियो अपना विचारे अपन आँट-पेटक अनुकूल लम्बाइ-चौड़ाइ नापि कऽ बनबैए तँए बेसी सुरक्षित होइ छइ। मुदा गणेशजी अपन वाहनकेँ ई बात ने किए बुझा देलखिन जे लोकक घरमे जे घर बनबै छेँ, से अपने-जोकर बनबिहेँ। जइ भीतपर घर ठाढ़ अछि ओकरे किए जंजल बना दइए। जखन भीते जंजल भऽ जाएत तखन हथियाक झाँट केना बरदास करत! घर खसत घर बन्हनिहारक मुदा मूस तँ बीलेमे अन्नक ढेरीपर अरामसँ पड़ल रहत। ओकरा थोड़े किछु हेतै, ओ तँ अपन घर पताल दिस बनौने अछि, आ घर खसत धरतीपर। किए ने ओकर जान बँचले रहतै..?

तैबीच घटक कक्काक मनमे एकटा घटकैती आबि गेलैन। मोन पड़िते ठोरपर तेना मुस्की आबि गेलैन जे ठोर बरदास नै कऽ सकलैन। खापैड़क तीसी जकाँ चनचना उठलैन। कहू जे बेंगबा सन छौड़ाकेँ इन्द्रक

परी सन कनियाँ केकरा किरतबे भेलइ। मुदा कलयुगक उपकार हत्या बरबैर। जँ से नहि, तँ ओकरा जँ अपन उपकार मोन पाड़ि देबै तँ कि ओ नै कहत जे पाँचो टुक कपड़ा आ दैछना कथीक नेने रहिऐ। ओ खुशनामा देने रहए आकि काज करैक बोइन। मन घुमि कऽ पत्नीक कहल बातपर आबि अँटैक गेलैन। कहू ई केहेन भेल जे मुँह फोड़ि दुसैत पत्नी कहलैन जे अहाँ आगू-पाछू किछु सोचै नै छी, जहाँ कोसीकातक बकेनमा दूधक दही आ तिलकोरक तरुआ आगू पड़ैए आकि बुधिए बिगैड़ जाइए! जइ परिवार लेल जिनगी भरि झूठ-फूस बाजि, नीक-अधला काजक विचार नै केलौं तइ परिवारमे एहेन गंजन हुअए तँ मनुक्ख केतए रहत?

घटक कक्काक खौंझ आरो तेज भेलैन। खौंझाइत मन कहलकैन-पत्नी रस्तामे रोड़ा अँटकौनिहार के? दस गाम घूमै छी, दस लोकमे रहै छी हम आ उपदेश देती ओ! जे सभ दिन जाँघक निच्चाँ रहली ओ छड़ैप कऽ छातीपर चढ़ि मुक्का देखौती; एहेन पुरुष हम नै छी। जहिया जे हेतै से हेतै अखन घरसँ नै पड़ाएब।

घटक कक्काक भक् खुजलैन तँ देखलैन जे आब तँ किलोमीटर भरि हटि दोसर टोल लग पहुँच गेल छी, घुमि कऽ आँगन केना जाएब? केतबो किछु भेल तँ भेल मुदा पुरुष अपन पुरुखपना केना छोड़ि देत? नेरौल थूक केना चाटत? मुदा अपने फुरने घुमबो केहेन हएत? मरदक बात वाण समान होइए जे धनुषसँ निकैल गेल निकैल गेल..! बड़बड़ाइत घटक काका अपन दुनू हाथक तरहत्थी माथपर लऽ बैस रहला।

जहिना किसान, बिनु खुरपियोक गाछक जड़ि लग बैस चुटकीए-सँ खढ़ उखाड़ि कमठौन करए लगैत तहिना घटक काका घुमैक ओरियान सोचए लगला। मुदा लगले मन तुरुछए लगलैन। ई तँ धोबियो कुकुरसँ टपब हएत, जे ने घरक आ ने घाटक रहब। जँ बलजोरी घरमे रहौ चाहब तँ पत्नी केते मोजर देती। मन घुमलैन। हमरो एते नै अगुतेबाक चाही छल। गलती अपनो भेल। एना जे लोक छोट-छोट बातपर घरसँ पड़ाएत तँ कहियो कुकुर-बिलाइ जकाँ अपन घर हेतइ। साँझू पहर, जखन लोक बाध-बोनसँ अबैए तखन केकरा घरमे ने हर-हर-खट-खट होइ छै, मुदा कहाँ कियो हमरे जकाँ रूसि-फुलि कऽ पड़ा जाइए। जँ एकरत्ती दब-उनार

बात पत्नी कहबे केलैन तँ की हेतइ। कोनो कि जड़ि भीरा कऽ टिक काटि लेलैन। अर्द्धांगिनी छैथ, बाल-बच्चा आ परिवारपर जेते अधिकार पतिक होइत तइसँ की कम पत्नियोँक होइत अछि। बेटा-बेटी तँ दुनूक छी। ई तँ समैयक दोख छी जे कखनो गरमी आनि गरमा दैत अछि तँ कखनो ठंढी आनि ठंढा दैत अछि। सौंझुका झगड़ा राति खसैत-खसैत मेटाइए जाइए किने। आकि हमरे जकाँ दिन-राति धेने रहत। भोर होइते दुनू परानी घर-अँगनाक काजमे लगि जाइए। कहाँ एको मिसिया मान-रोख मनमे रखैए। जहिना डिक्शनरीमे नवका शब्द अबितो अछि आ जाइतो अछि तहिना ने घरोमे किछु-ने-किछु अबितो रहत आ किछु-ने-किछु जाइतो रहत। मन आगू घुसकलैन। आगू घुसैकते घटक काकाकेँ मोन पड़लैन अपन बिआहक दिन समाजक बीच सरियाती-बरियातीक बीच तँ हमहीं ने हाथ पकैड़ जिनगी भरि संगे रहैक वादा केने रही, से की भेल? जहिना कटही गाड़ी कुगरक रस्तामे कनी दब-उनार भऽ उनटिये जाइए तँए कि गाड़ीवान गाड़ी रखनाइए छोड़ि देत। जँ छोड़ि देत तँ आगू केना घुसकत? औगुताइमे एहेन भारी गलती नै करक चाही। कोन दुर्मतिया चढ़ि गेल जे एना केलौं। एकोरत्ती उम्रोक लेहाज-विचार केलौं? जुआन जकाँ निर्णय केलौं। कहू जे आब हमर उमेर अछि जे संगी छोड़ि असगरे रही। कोनो कि संयासी छी जे दोसर नै सोहाएत। अपने दिन-राति घीमे डुमल रहब मुदा दोसरकेँ कुत्ता जकाँ पचैये ने देब। भरि दिन शनियाही गुड़-चाउर चिबबैत रहब आ अनका देखबे ने करब। जँ केतौ जाएब तँ पेटो संगे जाएत। पेटक आगि जेहने परिवारमे तेहने तीर्थ-स्थानोमे जगितै अछि। ओकरा तृप्ति करब आवश्यक होइत। जँ से नहि, तँ भूखे भजन किए ने होइत। खाइले के देत? जँ देबो करत तँ एक मुट्ठी देत। एक दिन खेलासँ जिनगीक भूख मेटाएत? जँ से होइत तँ डिबियो लऽ कऽ तकलापर एकोटा भिखमंगा नै भेटैत...।

मन घुमलैन। हारि मानी झगड़ा फरियाए। जहिना बाढ़िक तेसरा दिन पानि ठाढ़ भऽ उनटा-पुनटा दिशा पकड़ए लगैत तहिना घटक कक्काक मनमे हुअ लगलैन। अपन विचारक अनुकूल बात केकरा अधला लगै छइ। संयोगो नीक रहलैन। मुदा मनमे खरौंच लगलैन। समाजो तेहेन भऽ गेल अछि जे केकरा के पुछत? जहिना भोजक जएह बारीक मिठाइ

परसैए सएह माछो-मौसु। कहू ई केहेन भेल? सभ तरहक पनचैती बड़के काका करता। जमीनोक पनचैती आ दुनू परानियोँक झगड़ा हुनके चाही। जँ जमीनक पनचैती अमीन नै करत, अहिना सभ गुणक आधारक से आदमी नै करत तँ खीर-खिचड़ीमे कोनो भेद रहत..!

ई सभ गप घटक कक्काक मनमे नचिते रहैन, तखने सुन्दरलाल टोकलकैन- "भाय साहैब, अहीं ऐठाम जाइ छी?"

'अहीं ऐठाम जाइ छी' सुनि घटक काका औनाए लगला। अपन ठौर केतए अछि जे जाएत। की कहबै? से नइ तँ भरमे-सरम आँखि मुनि लइ छी जे बुझत हवामे अलिसा गेल छैथ।

उत्तर नै पाबि सुन्दरलाल दोहरा देलकैन- "भाय साहैब भकुआएल छी, भक् खोलू।"

अकचकाइत घटक काका बजला-

"नइ, नइ! कनी आँखि लागि गेल। की कहलह?"

सुन्दरलाल कहलकैन-

"घरपर चलू। निचेनसँ बुझा देब, रस्ता-पेराक गप नै छी।"

एक तँ राकश दोसर नौतल। घटक काका हरे-हरे कऽ घर दिस विदा भेला। मनमे उठलैन जे कोनो विचार दोहराइयो कऽ होइत अछि, किए ने दुनू परानी मिलि फेरसँ विचारि लेब...।

घर दिस विदा होइते घटक काका सुन्दरलालकेँ कहलखिन-

"गपो शुरू करह। जेते भेल रहत ओते तँ काजे ने भेल रहत।"

क्षुब्ध होइत सुन्दरलाल कहलकैन-

"देखियौ भाय, बिआह भेल केकरो आ जहलमे अछि हमर बेटा!"

अकचकाइत घटक काका पुछलखिन-

"से की, से केना?"

'से की, से केना?' बाजि घटक काका मने-मन महावीरजी केँ गोड़ लागि निसाँस छोड़ैत, सोचए लगला- बाप रे एकटा काजमे जँ एना भेल, हम तँ जिनगी भरि यएह केलौं! खुनी केसमे बेसी दिनक सजा होइ छइ।

मुदा खुदरो-खुदरी केस मिला तँ ओहूसँ बेसियाइए जाइ छइ। हे भगवान, रच्छ रखलह! आबो छोड़ि देबाक चाही!

घटक कक्काक मन जेना ठमकए लगलैन। ठमकैत मनमे उठलैन- जइ इंजीनियरकेँ जइ मशीनक बोध भऽ गेल अछि, जँ ओइ मशीनक तकनीक बदैल जाएत, तखन की हएत? दोसर काजक लूरि कहिया भेल जे करब। हे भगवान, जनिहह तूँ..!

तैबीच सुन्दरलाल कहलकैन- "भैया देखियौ, हमरे बेटा फुलबाक बिआह बंगलोरमे करा देलकै। ओहन-ओहनकेँ गाममे के पुछै छइ। मुदा ट्रन्सपोर्टमे नोकरी भेने दिन-दुनियाँ बदैल गेलइ। भषो सीखि लेलक। अलगर्जा कमाइ हुअ लगलै। बी.ए. पास लड़कीक संग बिआह करा देलकै।"

घटक काका- "बी.ए. पास लड़की गछलकै केना?"

सुन्दरलाल-

"केहेन गप करै छी। जखने लोक कमाए-खटाए लगैए तखने ने सर्टिफिकेटक ओरियान करए लगैए। एम.ए. पासक सर्टिफिकेट कीनि नेने अछि।"

घटक काका-

"लड़कीबला केतए-के छिऐ?"

सुन्दरलाल-

"नवटोलीक छिऐ। तीस-पैंतीस बर्ख पहिने गामसँ पड़ा कऽ गेल। नोकरी करए लगल। ओत्तै परिवारो रखैए, घरो-दुआर बना लेलक। अपन इलाकाक जाति बुझि कुटुमैती कऽ लेलक।"

घटक काका-

"आब की भेल?"

सुन्दरलाल कहलकैन-

"बिआहक बाद लड़की जोर केलक जे गाम जाएब। एबो कएल। मुदा जहिना पढ़ल सुग्गा बौक होइत तहिना वेचारीकेँ भऽ गेलइ। पनरहे

दिनमे नाकोदम भऽ गेलइ। जहिना सासु अल्हैर कहए लगलै तहिना ससुरो माथा पीटए लगलै। सर-समाजक तँ चर्चे छोड़ू। ने भाषाक ताल-मेल बैसै आ ने खाइ-पीबैक वस्तुक।”

बिच्चेमे घटक काका बजला-

“ई तँ भारी जुलुम भेल! तखन की भेलइ?”

सुन्दरलाल- “लड़की पड़ा कऽ दरभंगामे गाड़ी पकैड़ बंगलोर चलि गेल। हमरा बेटापर केस कऽ देलक। जेलमे पड़ल अछि।”

डेढ़ियापर अबिते घटक काका बजला-

“एहेन खच्चरपन्नी गाममे चलतै। अच्छा कनी ओहू पार्टीक बात बुझि लेब तखन कहबह। अखैन जाह, कनी हमहूँ औगुताएले छी।”

दरबज्जापर गल-गूल सुनि रेखा आँगनसँ आबि खरिहाँनक मेह जकाँ बीचमे ठाढ़ भऽ सोचए लगली- केहेन पुरुख छैथ जे थूक फेक पड़ाएल रहैथ जे घुमि कऽ ऐ घरक मुँह नै देखब, से सालक कोन गप जे दिनो भरि नै निमाहि सकला!

..मुदा मन ठमकलैन। सप्पत-किरिया लोककेँ थोड़े टिक पकैड़ उखाड़ै छै, जँ से उखाड़ितै तँ भरि दिन लोक किए सभ बातमे ‘जय गंगाजी’ बाजि आकि माटि उठा-उठा सप्पत खाइए। जहिना लोक भात-रोटी खाइए तहिना ने सप्पतो-किरिया खाइक वस्तु भेल। खेलक पचलै, फेर खेलक फेर पचलै। रसे-रसे एहेन पचान पचि जाइ छै जेहेन झूठ-सच्चमे पचल अछि आ सच्च-झूठमे। जँ तुकबन्दी करैक लूरि भऽ जाए तँ शायर-कवि बनबे करब आ जँ झूठ-सच्च पचबैक लूरि भऽ गेल तँ वक्ताकेँ के कहए सेसर ‘अनुभवी वक्ता‘ बनबे करब। तहिना तँ हिनको जिनगी तेहने रहल छैन। तहूमे समाज तेहेन लाइसेंस दऽ देने छैन जे साले-साल थोड़े रिनुअल करबए पड़तैन, ता-जिनगी लेल बनि गेल छैन।

आँखि उठा घटक काकापर देलैन तँ देखलैन जे मुँह धुआँ केने लटकौने छैथ आ जहिना कोयलाक धुआँमे चमकैत बिजली बनैत तहिना उपदेश झाड़ि रहल छैथ। रेखाक मन रोषा गेलैन। घरे परिवारक लोक किए ने होथि मुदा जहिना गलत, गलत छी तहिना सहियो सेहो सही छीहे।

गलतीक की कोनो पारावार छइ? रावण जकाँ लाख-सबा लाख धिया-पुता जहिना त्रेतामे छेलै, जे घटि कऽ द्वापरमे साए-सैंकड़ापर चलि एलै तहिना ने अखनो अछि। तहूमे कलयुग छी। पापेक युग। देवतो सभ पड़ा कऽ उनीकुटी चलि गेल छैथ। जाए तँ चाहलैन समुद्र दिस मुदा भोर होइते लाजे सभ रस्तेमे रहि गेला...। रोषाएल रेखा झपैट कऽ बजली-

"बौआ, अहीं सभ ने सर-समाज छी। जेहने समाज रहैए तेहने लोक काजो-उदेम करैए?"

रेखाक बात सुनि सुन्दरलालक मनमे पंचक एहसास भेलइ। पंचक एहसास होइते अपन बात बिसैर गेल। बिसैर गेल बेटाक जहलक उपाय। दमकलक चक्का जकाँ पहियाक रूप बदैल एक सुरे मुड़ी डोलबैत बाजल-

"हँ, से तँ छीहे। केकरो कटने समाज कटै छइ। तेहेन लस्सा बनल छै जे केतबो कटतै तैयो सटिते रहतै।"

सुन्दरलालक बात रेखा नइ बुझि बजली- "नइ बुझलौं अहाँक बात।"

जहिना नमहर नाँगैर नमहर जानवरक पहचान छी तहिना ने काजक नाँगैर मनुक्खोक पहचान होइ छइ। जँ से नहि, तँ रावणसँ पैघ आसन हनुमान कथीक बनौलैन। ओही नाँगैरक बले ने सौंसे लंका जरा देलखिन आ अपना किछु ने भेलैन। बुझल-बिनु-बुझल दुनियाँमे केहेन हएत जे नै हएत। कोनो प्रश्नक उत्तर दुनूक एक भऽ सकैए। मुदा से होइ छइ। बुझनिहार संग बुझनिहार रहैत तँ बिनु बुझनिहारोक संग तँ बिनु बुझनिहार हेबे करतै...।

जइ काजमे सुन्दरलाल अपने ओझराएल छल तही काजक ओझरी छोड़बैक भार लैत बाजल-

"भौजी, अहाँ-हमरामे कोन भेद अछि। नीक-अधला सभ गप तँ दिअर-भौजाइमे होइते छइ। से कि कोनो आइए आकि अदौसँ होइत आबि रहल अछि। देखियौ, जहिना करोटन फूलक पत्ता-पत्तामे गाछ पैदा करैक शक्ति अछि, तहिना ने समाजोकेँ बनबै-मेटबैक दुनू शक्ति छइ।"

सुन्दरलालक विचारक सूरमे अपन विचारक सूर मिलबैत रेखा

बजली-

“बौआ, पहिने कनी भैयाकेँ बुझा दियौन जे रूसि कऽ जे भगला से कोन अनचित बात कहलयैन।”

नमहर झगड़ा देखि सुन्दरलालकेँ नमहर पंचक एहसास भेल। जहिना नमहर लीब जाइत, तहिना सुन्दरलाल लीबैत बाजल-

“भौजी, केना कहबैन हम। सँए-बहुक झगड़ामे लबड़ेटा पड़ैए। अहाँ जे कहलौं से तँ भाइयो-साहैब सुनबे केलैन।”

जहिना एक चुरुक जलसँ सौंसे घरक वस्तु पवित्र बनि जाइत तहिना घटक काका अपन गनजन सम्हारैत बजला-

“हौ सुन्दरलाल, जहिना तूँ छोट भाए भेलह तहिना ईहो घरेवाली भेली। तँए बजैमे थोड़े कोनो धरी-धोखा हएत। जुआनमे मौगी घरसँ पड़ाइत अछि आ उमेर बढ़ने पुरुख। तोहीं कहह जे कोन गलती केलौं?”

मुड़ी डोलबैत सुन्दरलाल बाजल-

“से के कहैए जे अहाँ अधला केलौं।”

पाशा बदलैत देखि रेखा बजली-

“बौआ, नौंए-कौंए कऽ भगवान एकटा बेटा देलैन। अपने दुनू परानी ने सोचब जे केहेन पुतोहु एने घरक गाड़ी ससरत। सिनेमा-नाटक जकाँ थोड़े मनुक्खक जिनगी क्षणे-क्षण बदैल सकैए आकि क्षणे-क्षण आगू-पाछू भऽ सकैए।”

रेखाक बात सुनि, मुड़ी डोलबैत सुन्दरलाल बाजल-

“हँ, से तँ होइते छइ। अहीं कहू भौजी, केकरा चलैत हमहीं एते तबाह छी। उहए छौड़ा माने हमरे बेटा एहेन किरदानी किए केलक? जहिना बिआह भेने अनेरे लोक घटक बनि जाइए तहिना किए बनल? नै बनल तँ जहलमे किए अछि?”

रेखा-

“अहाँ अपनापर नै लिऔ। बेटा केलहा काजक दोखी बाप नै होइए मुदा माए-बापक...। काल्हि भऽ कऽ जे कोनो दोख लगा बेटाकेँ कहबै तँ

ओ नै मुँह दुसैत कहत जे केकर केलहा छिऐ। जहिना अपन बेटीकेँ पोसि-पालि बिआह करै छिऐ तहिना ने सभ करैए। मुदा घरक मिलानी जँ नै करबै तखन पढ़ल सुग्गा बौक नै हेतइ।”

पत्नीक बात सुनि घटक काका सहमला। पाछू घुमि तकलैन तँ बुझि पड़लैन जे केते घुर-बहुर काज भेल अछि। ईहो हएत। यएह ने दस गोरेमे बजलौं। कोनो कि इएहटा बात बजलौं। सदिकाल तँ एहेन-एहेन बात चलिते रहैए। बड़ हएत तँ बाजब जे पत्नीक विचार नै भेलैन। तहूमे के एहेन छैथ जे पत्नीक बात काटि सकै छैथ।

मन झिलहोरि खेलए लगलैन। जहिना पघिलल कटहर गाछसँ खसिते छँहोछित भऽ छिड़िया जाइए तहिना घटक कक्काक मन छँहोछित भऽ छिड़िया गेलैन।



शब्द संख्या: 2515, तिथि : 25 जून 2012

मान

तराजूक दुनू पलराक बीच जहिना डन्डी लागल रहैत, जइ सहारासँ वस्तु-जातक ओजन मानल जाइत तहिना जिनगीक बीच सेहो डन्डी होइत अछि। कमल फूलक डण्टीक सहारासँ जहिना फूलक सभ अंग समान रूपेँ खिल-खिल खिलैत तहिना जिनगियोक होइत, मुदा से कहाँ होइए? जिनगीक तराजूक पलरा दू रंगक होइए, एक पुड़ल दोसर घटबी। पलराक घटी-बढ़ी भेने तराजू पसगाँह भऽ जाइए जइसँ घटैत-बढ़ैत जिनगी जीवनक दू धारामे प्रवाहित होइत चलए लगैए। एक महिना अखाढ़ रहितो दू नक्षत्रमे विभाजित होइत, ओना, एक पूर्ण होइत दोसर अपूर्ण भेने बीच-बीचमे तेसरो चलि अबैत। तैबीच आद्रा नक्षत्र अपन पूर्ण जिनगी बितबैए। भलेँ अखाढ़क पहिल भाग हो वा मध्य वा अन्त। पनरह दिन अन्हार बीति आठ इजोरिया मास टपि गेल। हाजरी भुकबैले मौसम जोगार लगा नेने अछि मुदा आद्राक उपस्थिति दर्ज नै भेल अछि। ओना, कहैले सालक पाँच बरखा भऽ चुकल अछि मुदा तैयो आद्रक जगह उम्मस अपन पूर्ण जुआनीमे जगमगा रहल अछि। गोनूझाक हरवाहिक जलखैक खीर जकाँ हाल धरतीकेँ छुछुओने अछि। दिन उगिते जहिना दिनानाथक दर्शन होइत तहिना किसानक बीच नव दर्शन आएल। ओ छी श्री-विधिसँ खेती करब। मास दिन पूर्व धानक बीआ, जैविक खाद आ किटनासक दबाइ इत्यादिक बँटबारा, पैछला हिसाबे ऐबेर इमानदारीसँ भेल। इमानदारी ऐ लेल जे जहिना बैंकक कर्जकेँ लोक चौक परहक भुज्जा खा सठा दैत तहिना अखन धरिक बीआ-बालिक हिसाब रहल। वैचारिक रूपमे बीआ पाड़ि खेती करैक समय सेहो पौलक। संयोगो नीक रहल जे एकटा बरखा सेहो भेल। बरखा हाथ लगने किछु गोरे बीआ खसौलैन। देखबामे बरखा भेल, मुदा बीआ पाड़ैबला नै भेल। जइसँ बीआ अदहा-छिदहा जनमल। किछु गोरे कलसँ आ घैलसँ पटा डुमा हाल बना बीआ खसौलैन। जनम्बैमे ओ सभ जीतला। मुदा किछु गोरे अखनो बीआ घरेमे आद्राक आशापर रखने

छैथ। ओना, अद्रोसँ रोहैण नक्षत्रक बीआकेँ निरोग मानल गेल अछि। मुदा रोहैण नक्षत्रक पछाइत हिसाबकेँ अनदेखी केने बीराड़ेमे बीआ जरबो करैत। खेतीक एक उपाय तँ हाथ आएल मुदा मूल उपाय–पानि–नै आएल। एक पाशापर भगवान बैसल, दोसर 2008 ई.क कोसीक विभिषिका नहरकेँ खा गेल, तइ लगल 1987 ई.क बाढ़ि आ 1988ई.क भुमकम बीस-पच्चीस बर्ख पहिने बोरिंगकेँ खा गेल छल। जुड़शीतलक चलती कमने पोखरिक उड़ाही सेहो रूकिये गेल जइसँ ओ अपने तेना रोगा गेल अछि जे जान-ले रबिक संग एकादशियो करैए। मनुक्खक जन्म-संस्कार ओतए पनपब शुरू होइत जेतए ओकर जन्म होइत अछि। ई दीगर बात जे केतौ पेटक बच्चाक सेवा पोनगैसँ पहिनहि हुअ लगैत आ केतौ रस्ते-पेरे जन्मो लैत आ पाललो-पोसल जाइत।

आद्राक कर्त्तव्यक लापरवाहीसँ जन-जनक बीच तबाही तँ ऐछे, जे श्रमक घटबी सेहो बेसियाइए गेल अछि। मुदा किछुओ किए ने हौउ आखिर वसन्तक उनाड़ियो मास तँ छीहे। तँए किए ने बाग-बगीचामे बगवार वसन्तक संग चैतावर आ बरहमासा गाएत। आमक संग-संग जमुनिया धार सेहो बहिते अछि। टोलक पाँच गोरेक गाछी एकठाम छैन। साधारण परिवार तँए छोट-छोट गाछी छैन। मुदा कलमी-सरही सभ रंगक आम लुबधल अछि।

..सभ मिला कऽ करीब पच्चीस तीस गाछ पाँचो परिवारक जीवन-शैली एक रंग कऽ देने अछि तँए विचारोमे एकरूपता छैन। एते जरूर छैन जे बिनु कहने कियो कोनो गाछपर ने ढेपा फेकैत आ ने हाथसँ तोड़ैत। मुदा खसल आमक कोनो रोक नहि। जइसँ चेतन तँ अपन-आनक ठेकान जरूर बुझैत मुदा बाल-बोध नहि। पाँचो परिवारक धिया-पुता एकेठाम खेलबो करैत आ आम खसलापर पबैले दौड़बो करैत। ओना, अबोध बच्चा रहने, आवाजकेँ ठीकसँ नै अकानि कियो केम्हरो कियो केम्हरो दौड़ जाइत मुदा केकरो भेटलापर एते खुशी सभकेँ जरूर होइत जे हेराएल भेटल।

रातिक दू बजैत। उमस भरल दिनक संग अदहा रातियो बीति गेल। एक बजेक बाद पूर्बाक लहकी उठल। दिन भरिक गुमराएल मन नीन दिस दौड़ल। दुनू बेटाकेँ संग केने गुलजारी आमक गाछी विदा भेल। अष्टमीक

चान लुप्त भऽ गेल छल। जइसँ अन्हारक साम्राज्य पसैर गेल छल। आठ गोरेक परिवार गुलजारीक। तीनू बापूत मिला आठटा पाकल आम भेटलै। आँगन आबि डिबियाक इजोतमे आठो आम गनि छोटका बेटा बाजल-

“जेते गोरे घरमे छी सभ-ले एक-एकक हिसाबसँ आमो अछि।”

राधेश्यामक बात सुनि गौरीशंकर बाजल-

“जहिना छोट-पैघ आम अछि तहिना तँ घरमे लोको अछि, तँए...।”

“भैया, अखन माएकेँ रखैले दऽ दहक। अपना सभ खाइबेर-मे खाएब।”

राधेश्याम बाजि कऽ चुप भऽ गेल।



शब्द संख्या: 648

मनोरथ

जहिना शोभा काका सभ छुट्टी गामेमे बितबै छैथ तहिना सभ रबियो बितबै छैथ। सुविधो छैन। पाँचे कोसपर विद्यालय छैन, साइकिल छैन्हे तँए अबै-जाइमे असोकर्जो नहियेँ होइ छैन। शनिकेँ स्कूलो अदहे होइ छैन, सेहो सुविधा भइये जाइ छैन।

आने शनि जकाँ सात बजे साँझमे शोभा काका गाम पहुँचला। पछबरिया घरक दाबा लगा साइकिल ठाढ़ कऽ कैरियरपर सँ झोरा उतारि आँगनमे पएर रखिते छला कि पत्नीपर नजैर पड़लैन।

जेठ-अखाढ़ मास तँए डिबिया नेसैक ओरियान सुगिया काकी करै छेली। ओना, डेढ़ियापर जखने साइकिल खड़खड़ाएब सुनलैन कि बुझि गेली जे एहेन आवाज तँ अपने साइकिलक छी। आ आँखि उठैबते नजरियो पड़िए गेलैन।

जेठ-अखाढ़ मास ऐ लेल जे पूर्णिमा भऽ गेल मुदा सकराँइत पछुआएले छल। मुदा काकीक संयोग नीक रहलैन जे नजैर-मे-नजैर नै मिललैन। जँ नजैर मिलि जइतैन तँ चूल्हि पजारि डिबिया नेसब बाधित भऽ जइतैन। तेकर लाभ सुगिया काकी उठेबो केली। लाभ ई उठौली जे पतिक आगत-भागतकेँ एक नम्बर काजक सूचीसँ निच्चाँ उतारि दू नम्बरमे रखि, कुशल कारीगर-कलाकार जकाँ एक काजकेँ विसर्जन करैसँ पहिने दोसरक संकल्प लऽ लेली। मने-मन विचारि लेली जे जाबे जारैनक धुआँ फरिच हएत-हएत ताबे साँझो घुमा लेब। काजमे लगल देखि शोभो काका बिनु किछु बजने कोनचरे लगसँ झोरा ओसारक चौकीपर रखि पानिक प्रतीक्षा करए लगला। केना ने करितैथ, जाधैर घरबैया दिससँ पएर धोइले पानि नै पहुँचैत ताधैर कारखाना जकाँ उपस्थिति केना बनैत। मुदा ईहो तँ भऽ सकैए जे अभ्यागतक सेवा योग्य परिवार नै हुअए? सुगिया काकीक मनमे ईहो उठैत रहैन जे भाषणक कलाकारी होइत जे एतबे समयमे एतेटा

बात बाजि देब मुदा काज तइसँ बहुत दूर होइत। ओना, चलनिहारकेँ पैरक गति रोकिनिहार सेहो बीचमे आबि सकैए। नहियोँ औत, तँए जइमे 'हँ-नइ' दुनूक सम्भावना होइ ओकर गारंटी शत-प्रतिशत नै कएल जा सकैए। तँए सुगिया काकीकेँ होनि जे जैठाम दुविधा अछि तैठाम सावधानी नै करब तँ रेलबे-ट्रेन जकाँ एकठाम बिलंम भेने गन्तव्य स्थान धरि बिलैमते ससरब। तेतबे नहि, अदहा दिनक चलल छैथ, बाटमे केतए आ की देखने हेता, जँ कहीं एहेन समस्या देखने आएल होथि आ रस्तापर अमती काँटक झाँगैड़ जकाँ रखि दैथ, तखन तँ जिनगीए ढंस भऽ जाएत! भोजनकाल जँ पानिक बरतने फुटि जाए तखन पानि केना परसब..?

सभ काज सम्हारि सुगिया काकी हाथमे लोटा धरबैत शोभा काकाकेँ पुछलखिन-

"हाल-चाल सभ आनन्द किने?"

काकीक पुछब जेना शोभा कक्काक मनकेँ हौंर देलकैन तहिना मन सहैम गेलैन जे भरिसक कोनो आक्रोश छैन। मुदा अनुकूल समय नै पाबि, उत्तर देखखिन-

"पुरबते।"

शोभा कक्काक उत्तर सेहो सुगिया काकी तारि लेली। तँए उचित समय नै पाबि सुगिया काकीक मनमे भेलैन जे पएर धोइले दरबज्जापर जेबे करता तँ किए ने टिकमे चिड़चिड़ी लगा दिऐन जे जाबे चिड़चिड़ी छोड़ौता-छोड़ौता ताबे चाह बना लेब। काज औगतेने तँ नइ होइ छइ। बड़ भूख लागए तँ पातक बदला हाथे नै पसारि दिऐ..!

बजली-

"नीमक गाछमे गराड़ लगि गेल अछि से कनी देखि लेब?"

सुगिया काकीक बात सुनि शोभा काका बजला किछु नहि, मुदा मनमे उठलैन जे नीमक गाछमे केतौ गराड़ लगइ! एहेन बात किए कहलैन? गराड़केँ मीठ जड़ि पचै छइ? तीत केना पचत। मुदा फेर मनमे उठलैन जे पुरुखक नाड़ी नारीक नाड़ीसँ भिन्न चलैए तँए समय लगबै दुआरे जँ कहने होथि। मुदा से केना बुझब जे केते समय लगाएब? भऽ

सकैए जे जेतबे समय जड़ि खोरि गराड़ देखैमे लगत तेते, मुदा से अपने केना बुझब? तइसँ नीक जे जाबे बजबए नै औती ताबे नै जाएब। पैछलो शनिमे जखन आएल रही तँ पएर धोलाक बाद चाह पिऔने रहैथ। तहिना चाहे बनबै दुआरे जँ टारने होथि। नीक हएत जे ताबे धरि कड़ची लऽ कऽ जड़ि खोरैत-खारैत रहब जाबे धरि बजबए नै औती।

चाह छानि ओसारक चौकीपर रखि काकी दरबज्जा दिस बढ़ैत बजली- "जअ काटए गेलौं तँ सतुआइन केनहि एलौं! चाह सेरा कऽ पानि भऽ गेल। आ झूठे-फूसेमे लटकल छी!"

'झूठ-फूस' सुनि शोभा काका चौंकला, कहू जे अपने लटकल छी आकि हुनके किरदानीए लटकल छी? मुदा किछु बजला नहि। मनमे उठलैन जे जइ शून्यक कोनो मोजर नै छै, सेहो घुमैत-फिरैत केतए-सँ-केतए उड़ि जाइत अछि। मुदा ई तँ शब्दवाण छी, कागभुशुण्डी जकाँ समुच्चा दुनियाँ देखौत..!

पुछलखिन-

"केहेन चाह बनेलौं जे लगले पानि भऽ जाएत?"

जहिना मन्दिरक बीच भक्त भगवानक आगू ठाढ़ भऽ दुनू हाथ जोड़ि अपन मनोरथ मनमे दाबि, पहिने स्तुति करैत तहिना मनक बात मनेमे रखि सुगिया काकी बजली-

"तबधलमे तपते चाहक ने सुआद होइ छै, जँ से नहि, तँ जहिना अधिक बोखारक आगू कम बोखार, बोखार नै रहि जाइत तहिना ने चाहो होइ छइ।"

भूखलकेँ पहिल कौर आ पियासलकेँ पहिल घोंट जहिना सुखद होइ छै तहिना चाहक घोंट लगैबते शोभा काका बजला-

"गाम-घरक की हाल-चाल अछि?"

गाम-घरक हाल-चाल सुनि सुगिया काकीक मन उड़ए लगलैन। बजैसँ पहिने सोचए लगली जे केमहरसँ बाजी। गाम दिससँ आकि परिवार दिससँ। सम्हारैत बजली- "गाममे तँ ऐबेर साक्षात् सरोसतिये आबि गेली। एकोटा विद्यार्थी फेल नै भेल।"

सभकेँ पास सुनि शोभा कक्काक मन ओझरा गेलैन। जखन सभ पास केलक तखन सुशीलक केना बुझब जे केतेसँ नीक केतेसँ अधला केलक। पाशा बदलैत पुछलखिन- “केकरा कोन डिबीजन भेल?”

काकीक मन पहिनहिसँ उड़ल रहबे करैन, जहिना दौड़ैकाल पैरक ठेकान नै रहैत तहिना प्रश्नकेँ सुआदने बिना बजली-

“सभसँ बेसी नम्बर अपने सुशीलकेँ अछि।”

‘सभसँ नीक सुशील’केँ सुनि शोभा काका बजला-

“अपने जे हुअए मुदा सुशीलकेँ आगूओ पढ़ाएब।”

आगूक नाओं सुनि सुगिया काकी भकरार फूल जकाँ बजली-

“रिजल्ट निकललापर जखन सुशील संगी-साथी सभसँ भेँट कऽ आएल तखनेसँ मन खसल देखै छिऐ!”

“से किए?”

“कहैए जे आगू पढ़ैले सभ बाहर जाएत..?”

सुगिया काकीक विचारकेँ शोभा काका विचारक अलमारीमे चौपेतैत बजला- “नीक हएत जे बौऔकेँ एतै सोर पाड़ि लियौ। परिवारक सभ मिलि कऽ किए ने परिवारक काजक विचार करब। केकरो मनोरथकेँ किए कियो दाबत?”

शोभा कक्काक विचार सुनि सुगिया काकीक मन खापैड़क धान जकाँ ऐ भागसँ ओइ भाग करए लगलैन। मुदा पतिक बात बुझि हनछीन नै कऽ कन्हलग्गू बरद जकाँ जू गेली।

सुशीलक संग आबि काकी अपन घरमे अभ्यागत जकाँ बजली-

“बौआ, पहिने बाबूकेँ गोड़ लगहुन।”

ओना, सुशीलक मनमे अपनो रहबे करै जे अपन कर्त्तव्यक पालन केना केने छी से तँ पितेक बतौल रस्ता छिऐन, तँए ओइ पगक पग-सँ-पग टपलौं। तखन किए ने ओकरे हथियार बना जीवन-कर्म करब...।

पिताकेँ गोड़ लागि सुशील मुँह उठा असीरवादक प्रतिक्षा करए लगल।

सुशीलक माथपर हाथ रखैत शोभा काका पुछलखिन- “बाउ! आगूक की विचार होइए?”

सुशील बाजल-

“सभ बाहर जा-जा नाओं लिखौत।”

शोभा काका कहलखिन- “मनोरथ अपनो अछि, माइयोक मन तेहने देखै छी। चारि-पाँच साल नोकरी रहल अछि। तैबीच देखबे करै छहक चारू भाए-बहिन पढ़ै छह, दिनो-दिन आगूए बढ़बह। जइसँ खरचो बढ़िते जाएत। केते कमाइ छी से केकरोसँ छिपल अछि। तखन तँ आमद-खर्च देखि कऽ जँ परिवारक गाड़ी नै खिंचबह तँ केते दिन परिवार ठाढ़ रहतह।”

पतिक बातकेँ अनसुन करैत सुगिया काकी बिच्चेमे टपैक उठली-

“हम केकरासँ थोड़ छी जे अपन मनोरथ पूरा नै करब। जहिना सबहक बेटा पढ़ैले बाहर जाएत तहिना हमरो सुशील जाएत।”

पत्नीक विचारसँ शोभा काका सकपकेला नहि। अपनो मनोरथ, पत्नियोँक मनोरथ आ बेटोक मनोरथकेँ पानि-चिन्नी-नेबोक रस जकाँ घोड़ए लगला। मुदा मनक बात कहथिन केकरा। नजैर उठा कखनो पत्नी तँ कखनो पुत्रपर दैत विचारए लगला। विचित्र स्थिति बनि गेल अछि। नोकरीक चाहमे लोक केतए-सँ-केतए भागि रहल अछि! किए ने भागत? जे हवा बनि गेल अछि आकि बनल जा रहल अछि तइमे जिनगीक ज्ञान पाछू पड़ि रहल अछि। नव तकनीक संग नव मनुक्ख पैदा लऽ रहल अछि जेकर दूरी एते-बढ़ि रहल अछि जे चिन-पहचिन्ह तक समाप्त भऽ रहल अछि..!



शब्द संख्या: 1161







Notes